नादिर शाह

गवेषणा-पूर्ण सचित्र जीवन-चरित्र।

लेखक

श्रीयुत मथुराप्रसाद दीक्षित।

प्रकाशक

रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर—

"वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०,"

३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

पौष, सं० १९८० वि०

प्रथम संस्करण—२०००] [मूल्य—१।।।) रुपया।

सुनहरी रेशमी जिल्द २।) रुपया।

वे कैसे दिन थे ? ओह ! उनकी तो कल्पना करतेही सारा शरीर रोमाञ्चित हो जाता है ! छाती दहल उठती है ! भयसे नहीं, वरन् अत्याचारोंकी कल्पना-मूर्त्ति देखकर। १८वीं शताब्दिके पश्चिमी भारतका इतिहास पढ़नेके बाद, एक विचित्र चित्र हृदय-पटपर खिंच जाता है, जिसका प्रत्येक स्थान, भारतके अबोध बालकों और कोमलाङ्गी ललनाओंके तरल रक्तसे रङ्गा हुआ है—जिससे इतिहासके पन्ने-के पन्ने सराबोर हो रहे हैं !

यह किसकी करतूत है ? भारतकी पवित्र भूमिपर ऐसा पिशाच-काण्ड किसने किया है ? यह नर-रक्त-पिपासु मानव-पिशाच कौन है ? नादिरशाह ? गड़ेरियेकी औलाद नादिरशाह ? नहीं , नहीं , शाहोंका शाह नादिरशाह !

नादिर तो पुरुषसिंह था ? उसने तो अपने मस्तकपर, बहुकाल-व्यापिनी कठोर साधनाके बाद, सफलताका मुकुट पहना था ? नहीं, उसका जीवन एक दुर्बोध्य पहेली है। यदि एक ओर वह, उद्योग द्वारा, क्षुद्रसे महान् बनता है, तो दूसरी ओर महत्ताके प्रधान-गुण, समदर्शिता और उदारताको, पैरोंसे ठुकराकर अपनी पाशविक प्रवृत्तियोंको चरितार्थ करता है। लोगोंने उसे बर्बर कहा है , पण्डितोंने अत्याचारी बताया है और इतिहासकार ? इति-हासकारोंने तो उसे, कभी न हल होनेवाली समस्याका अवतार बनाया है।

इतिहास ? आह ! इतिहास बड़ा प्यारा विषय है ! हमारी आँखोंके सामने, अतीतकी बातें लाकर, वह, जीवन-पथपर अग्रसर होनेसे पहले, हमें

सावधान और सतर्क कर देता है। खतरेकी खाईमें गिरनेसे बचा लेता है और पद-पदपर चेतावनी देता है। इसके सिवा, इतिहास, सबसे बड़ा उपकार यह करता है, कि संसारके भूतपूर्व लघुसे गुरु होनेवाले आदर्श व्यक्तियोंकी विशद विरुदावलीपर प्रकाश डालकर, हमें, अपने जीवनको उन्नत बनानेका सुनहला रास्ता दिखाता है। हमारे मानस-क्षेत्रमें उच्चाभिलाषाओं और महदाकांक्षाओंकी जड़ जमाता है।

❀ ❀ ❀ ❀

इसी इतिहासकी कृपासे आज हमें नादिरकी याद आयी है। वह विधर्मी और विदेशी था; पर इससे क्या? वह आदर्श तपस्वी था। एक दिन, वह बचपनकी अवस्थामें, दीनातिदीन और दाने-दानेके लिये मुहताज बना हुआ "कजवीन"की गलियोंमें भटकता फिरता था, कि सहसा उसके कानोंमें उसकी स्त्री तथा बच्चोंका आर्त्तक्रन्दन सुनाई दिया। वह सो रहा था, सहसा जाग पड़ा! अब क्या था? उसी समय कमर कस और ताल ठोककर, वह,उन्नतिके अखाड़े में कूद पड़ा। बाधाएँ आयीं, विकट वदन बनाये अनन्त आपत्तियाँ भी आयीं; पर वीर नादिरने किसीको न गिना। अन्तमें जीत उसीकी हुई। वह धनका दरिद्र अवश्य था; पर उसकी वह पहली दरिद्रता, उसकी आन्तरिक दरिद्रताकी द्योतक नहीं थी। उसके हृदयमें संसार-ग्रासिनी आकांक्षाएँ भरी हुई थीं। समय आया, कि वे उभर उठीं। उसके पिता या नाते-रिश्तेदारोंने कभी इस बातका अनुमान न किया था, कि एक दिन सारा हिन्दोस्तान, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान और अरबिस्तान, इस नगण्य नादिरके नामसे थर्राया करेंगे, और वह इतनी विराट् जन-सख्याका भाग्य-विधाता बनकर, उनका शासन किया करेगा।

नादिर कापुरुष नहीं था। वह वीर था और अपनी वीरताके लिये आदर्श था। उसने अपने जीवनको निरन्तर उद्योग, अविराम परिश्रम और अटल आत्म-विश्वासके आधारपरही, इस सामान्य परिस्थितिसे, इतने ऊँचेपर पहुँचाया था। उसमें कितनेही सद्गुण थे।

❀ ❀ ❀ ❀

पर जहाँ अच्छाई होती है, वहाँ बुराई भी कम नहीं होती। दुःख है, नादिरने अपनी इस महती उन्नतिका सदुपयोग नहीं किया। उसने अपने बाहुबल, बुद्धिबल और मनोबलसे, पार्थिव जगत्‌पर तो विजय पाली थी; उसने, जीतेजी, अपने किसी शत्रुको सिर तो न उठाने दिया था; पर अपने आन्तरिक शत्रुओंपर विजय पानेकी उसमें क्षमता न थी। उसने अपने मनकी दुर्विनीत प्रवृत्तियोंका वचित रूपसे दमन नहीं किया था। इसीसे जब उसकी क्रोधाग्नि प्रज्ज्वलित हो उठती थी, तब उसका संवरण करना असाध्य हो जाता था। क्रोधान्ध नादिरसे जो बच रहा, वही ग़नीमत है। अन्यथा उसने अधर्म और अत्याचार भी कम नहीं किये। पुत्रकी आँखें निकलवा लेना, चाचाकी हत्या और कितनीही निरपराध आत्माओंका खून करा डालना उसके चरित्रकी कालिमाके कभी न मिटनेवाले बड़े-बड़े धब्बे हैं।

पर कवि-कुल-तिलक गोस्वामी तुलसीदासजीने कहा है,—

"जड़-चेतन गुण-दोषमय, विश्वकीन्ह करतार।
सन्त-हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि-विकार॥"

ठीक इसी दृष्टिसे, नादिरकी जीवनीसे, हमें उसके गुणोंका ग्रहण और दुर्गुणोंका त्याग करना चाहिये; परन्तु दुर्गुणोंका त्याग करनेका अर्थ यह नहीं है, कि हम उन्हें भूल जायें, वरन् उन्हें सदा स्मरण रख, उनसे सावधान रहें। भूल जानेसे तो सम्भव है, कि दोष हमारे अन्दरही प्रवेश कर जायें; पर याद रखनेसे, हम कभी उन्हें अपने पासतक न फटकने देंगे।

❀ ❀ ❀

राष्ट्र-भाषाके भाण्डारमें, जिस प्रकार, प्राचीन अथवा अर्वाचीन, वैज्ञानिक ग्रन्थोंका सर्वथा अभाव है, उसी प्रकार ऐतिहासिक ग्रन्थोंकी भी कमी है और यह कमी क्या किसी सहृदय और हिन्दी-सेवीको अखरती न होगी? हम अपनेको इस भाण्डारकी कमी-पूर्त्ति करनेवाला हामी तो नहीं कहते, पर इतना अवश्य कहेंगे, कि हमारे परिश्रमसे यदि मातृभाषाकी कुछ भी सेवा हो सके, तो हम उससे कभी विमुख नहीं होंगे। इसी

विचारसे प्रेरित हो, हमें भी ऐतिहासिक ग्रन्थोंका अभाव बुरी तरह खलता है। हमने अबतक 'पंजाब-केशरी राजा रणजीतसिंह,' 'मुस्लिम-महिला-रत्न' 'कमाल-पाशा' आदि कई ऐतिहासिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। नादिर-शाह सम्बन्धी एक सर्वांग सुन्दर और प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित करनेकी हमारी बहुत दिनोंसे बड़ी अभिलाषा थी। अतः हमने इस कामके लिये अपने मित्र श्रीयुत मथुरा प्रसादजी दीक्षितसे अनुरोध किया। उन्होंने भी उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और बड़े परिश्रमसे यह ग्रन्थ तैयार कर हमारी अभिलाषाको बहुत अंशोंमें पूर्ण कर दिया है। परन्तु इतिहास-ग्रन्थोंकी कमीको हमारा यह प्रयास कुछ पूर्ण कर सकेगा, यह कहना विडम्बना है, तथापि इसमें कोई सन्देह नहीं, कि पुस्तक योग्यतापूर्वक लिखी गयी है। लेखक महोदयने इसके लिखनेमें, विषयकी प्रामाणिकताके लिये काफी छान-बीन की है। लिखनेका ढंग भी अच्छा है। भाषा प्राञ्जल है। नादिरके ऊपर, वैदेशिक इतिहासकारों द्वारा लगाये हुए कलङ्कोंको, बड़ी योग्यतासे खण्डित किया गया है। तथापि हम कुछ न कहेंगे। इसकी अच्छाई-बुराईके निर्णयका भार मर्मज्ञ समालोचकों और सुविज्ञ पाठकोंपरही छोड़ा जाता है।

आशा है, इतिहाससे प्रेम रखनेवाले हिन्दी-पाठक, इसका समुचित आदर कर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे।

निवेदक

—रामलाल वर्मा।

नादिर शाह

श्रीमान् अमावाँधीश।
राजा हरिहरप्रसाद नारायणसिंह बहादुर, ओ० बी० ई०

Burman Press, Calcutta.

श्रीमान् अमाँवाधीश

राजा हरिहरप्रसाद नारायणसिंह बहादुर

ओ० बी० ई०।

मान्यवर !

"राजा प्रजारञ्जनात्"—बस, आपके इसी एक गुणपर मुग्ध होकर, इन पंक्तियोंका लेखक, आपके कमनीय कर-कमलोंमें, प्रस्तुत पुस्तक समर्पणकर, आशा करता है, कि आप अपने स्वाभाविक शील-स्नेहसे इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

विनीत,

मथुराप्रसाद दीक्षित।

पहला परिच्छेद।

जन्म और वंश-परिचय।

एशिया महादेशके पश्चिम भागमें 'परशिया' नामक एक देश है। इतिहासमें यह देश 'ईरान' और 'फ़ारस'के नामसे भी प्रसिद्ध है। इसीके अन्तर्गत 'ख़ुरासान' नामक एक परम प्राचीन एवं प्रशस्त प्रान्त है। इसी प्रान्तके 'अहवाज़' नामक नगरके कुछ उत्तर, 'कजवीन' ग्राममें इस ग्रन्थके नायक, शूरवीर, साहसी एवं दृढ़-प्रतिज्ञ 'नादिर कुली'का जन्म, सन् १६८७ ई० में हुआ था।

नादिरके पिताका नाम 'इमाम कुली बेग' था। वह अहवाज नगर-निवासी 'अवामअल्नास' नामक कुलका

एक बहुत ही साधारण व्यक्ति था। पर 'शेख़ अली हाजी' लिखित नादिरके इतिहासमें, यह बात लिखी हुई है, कि नादिरका पिता, 'पोस्तीन दोज़' अर्थात् मोची था। पर इस कथनपर सहसा कोई विश्वास नहीं कर सकता। कारण, शेख़ अली हाजीको नादिरके साथ द्वेष था। इस द्वेषका कारण यह था, कि शेख़ अली हाजीका जन्म शाहके मन्त्री-कुलमें हुआ था। किसी विषय-विशेषके सम्बन्धमें नादिरके कोप-भाजन बननेके कारण शेख़ अली हाजीके कुलका वह पद जाता रहा। यहीं तक नहीं, पर बात इतनी बढ़ गयी, कि शेख़ अली हाजीको, परशिया छोड़ना पड़ा। सदाके दीन-रक्षक, अतिथि-पोषक भारतमें उसे भाग आना पड़ा।

'मिरज़ा मेहदी'ने नादिरकी जो तवारीख़ लिखी है, उसमें उसने लिखा है, कि "नादिर एक साधारण गड़ेरियेका लड़का था।" शायद इसी कथनके आधारपर कतिपय अङ्गरेज़ इतिहासकारोंने भी नादिरको 'Shepherd-boy' अर्थात् गड़े-रियेका लड़का लिखा है। बँगला 'विश्व-कोष' के प्रणेता-बाबू नगेन्द्र नाथ वसुने भी नादिरके पिताके सम्बन्धमें लिखा है, कि "वह मेष-पालक था"। सम्भवतः इसी कथनके आधारपर उन्होंने अपने 'विश्व-कोष' में यह भी लिख दिया है, कि अपने पिताके कतिपय 'भेष' बेचकर उसने कुछ सेना संग्रह की थी। पर जेम्स फ्रेज़र-कृत 'हिस्ट्री आफ़ नादिरशाह' में, जो नादिरशाहके सम्बन्धमें एक बहुत बड़ा प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है और जिसका निर्माण, नादिरशाहकी मृत्युके छः वर्ष

पूर्व्व ही, अर्थात् १७४१ में हुआ था, इस बातकी कहीं भी चर्चा नहीं पायी जाती है।

आश्चर्य्यकी बात तो यह है, कि जहाँ शेख़ अली हाजी तथा मिरज़ा मेहदीसे लेकर नादिरशाहके आज तकके सभी जीवनी-लेखकोंने प्रायः सर्व्व-सम्मतिसे इस बातको स्वीकार किया है, कि अपने प्रकृत-पिता इमामकुली बेगकी मृत्युके पश्चात् कलात गढ़के अधिकारी 'बाबा कुली बेग'ने नादिरकी माँसे निकाह कर, नादिरको अपने साथ रख लिया, वहाँ जेम्स फ्रेज़र-कृत 'हिस्ट्री आफ़ नादिरशाह' में इस बातकी कहीं चर्चा तक नहीं। उसने बाबा कुली बेगको हो नादिरका प्रकृत पिता लिखा है और वहींसे उसकी जीवनी आरम्भ की है। इससे मालूम होता है, कि नादिरशाहके मूल-वंशके सम्बन्धमें उसे तनिक भी ज्ञान नहीं था और न कभी उस ओर उसका ध्यानही गया। यदि ऐसी बात नहीं होती, अर्थात् यदि वह जानता होता, कि फ़ारसी भाषाकी, नादिरशाहके सम्बन्धमें प्रायः सारी तवारीख़ोंमें, नादिरका बाबा कुली बेगका दत्तक-पुत्र होना लिखा हुआ है, तो कम-से-कम, खण्डन-स्वरूपमें ही सही, उसने इस बातका ज़िक्र तो ज़रूर कर दिया होता। पर यह ध्यानमें रखते हुए, कि नादिरशाहके सम्बन्धमें उसकी 'हिस्ट्री' एक बहुत पुरानी और अङ्गरेज़ी भाषामें सर्व-प्रथम पुस्तक है, उसका यह 'मौनावलम्बन' क्षम्य है।

परशियाके बादशाह 'शाह इस्माइल शफ़ी'के राजत्व-कालमें तुर्कोंकी सात जातियाँ, तुरस्कसे निकलकर ख़ुरा-सान-प्रान्तमें चली आयी थीं। उन्हीं सात जातियोंमें 'अफ़-

सर' जाति भी एक थी। यह जाति अहवाज़ नगर तथा इसके पार्श्ववर्त्ती ग्रामोंमें बस गयी थी। अहवाज़ नगरके निकट 'क़लात' नामक एक सुदृढ़ दुर्ग है। ख़ुरासनपर तातारियोंके बार-बार होनेवाले आक्रमणोंको रोकनेके लिये इस दुर्गका निर्माण हुआ था। यह दुर्ग इतना सुदृढ़ तथा सुरक्षित था, कि बीस-बीस हज़ार तातारियोंके आक्रमणको, इसमें रहनेवाले, पाँच सौ योद्धा, सहजमेंही टाल दे सकते थे। बाबा क़ुली बेग इसी दुर्गका अधिकारी, अर्थात् अफ़सर था।

बाल्य तथा किशोरावस्था।

यह बात पहलेही कही जा चुकी है, कि नादिरके प्रकृत पिताका नाम इमाम कुली बेग था। वह परम दरिद्र और दाने-दानेको मुहताज था। बहुतेरे इतिहासकारोंके मतानुसार वह भेड़ोंको पालता तथा उनकी आयसे अपनी ज़िन्दगी बसर करता था। अतएव नादिरको भी भाग्यसे ही किसी दिन भर पेट भोजन मिल जाता। पर यह दारिद्र्य सदा दूषण नहीं है। दरिद्रताकी गोद प्रायः उर्वरा और उपजाऊ देखी जाती है। सुखकी सुकोमल गोद जहाँ मनुष्यको सुषुप्ति अवस्थाकी ओर ले जाती है, वहाँ दरिद्रताका अंकुश मनुष्यको सजग और सचेत बनाता है। यदि यह बात न होती, तो निर्बल नेपोलियन, साधन-हीन शिवाजी, कमज़ोर क्लाइव तथा बलहीन वाशिंगटन आदि इस विराट् विश्व-वाटिकामें अपनी कीर्ति-लतिका इस प्रचुर रूपमें, प्रसार करनेमें कदापि समर्थ न होते; प्रस्तुत पुस्तकका नायक, नादिरशाह भी ऐसेही व्यक्तियोंमें एक था। जिस समय एक ओर, जीवनके प्रारम्भिक कालमें, उसकी दीनता, दरिद्रता और भरण-पोषणके लिये उसकी औरोंकी मुहताजगीकी ओर हम विचार करते हैं, तथा दूसरी ओर उसके जीवनके अन्तिम भागके

कुछ पूर्व्वही, तुर्किस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, परशिया और हिन्दुस्थान-के एकाधिपत्य-दण्ड उसके हाथोंमें देखते हैं, तब सहसा चित्त विस्मित तथा हृदय निस्पन्द हो जाता है। कहना पड़ता है, "ईश्वर तेरी लीला विचित्र है ; तेरी गति अनवगत है ! राजासे रङ्क और रङ्कसे राजा बनाना तेरे बायें हाथका खेल है !"

शैशव कालमें नादिर बड़ा साहसी, दुष्ट, खिलवाड़ और हठी-प्रकृतिका बालक था। सारा दिन वह भेड़ोंको चराता, लड़कोंके साथ खेलता-कूदता, गाली-गलौज, दङ्गा-फ़साद और मार-पीट करता था। जिस बातके लिये वह हठ करता, उसे पूरा करके ही छोड़ता था, कभी-कभी अपने अप्रतिम साहससे वह अपनी औक़ादसे चौगुना काम कर बैठता था। जिसको वह, क्रोधके वशीभूत हो, मारना-पीटना शुरू कर देता, उसे बड़ी निर्दयता और क्रूरतापूर्व्वक मारता-पीटता था। पर साथही अपनी चिकनी-चुपड़ी बातोंसे, हेल और मेलसे वह लोगोंको अपने क़ाबूमें लानेकी करामातको भी खूब जानता था। जीवनके आदि कालसेही उसमें कुछ ऐसे विलक्षण तथा विशेष गुण थे, जो उसके समुज्ज्वल और सुविशाल भविष्यके परिचायक थे। जो सब गुण अथवा स्वभाव उसके जीवनके आदिकाल बाल्यकालमें थे, यह देखा जाता है, कि वेही सब गुण उसके जीवनकी प्रौढ़ावस्थामें भी विद्यमान थे। हाँ, उनमें कुछ शिष्टता तथा सुधार अवश्य हो आये थे।

नादिरके निर्धन पिताका देहान्त, उसके बाल्यकालमेंही होगया। इस दुर्घटनाके पश्चात् उसकी विधवा माँसे, अहवाज़

नगर-निवासी क़लात दुर्गके अधिकारी, बाबा कुलीने निकाह कर लिया और उसको अपने घर ले आया। बालक नादिर भी अपनी माँके साथ हो लिया तथा बाबा कुली उसे अपनी पहली स्त्रीसे उत्पन्न पुत्रकी दृष्टिसे देखने लगा। बस, यहींसे नादिरके भाग्य-चक्रने पलटा खाया।

यहीं नादिरका विवाह हुआ और उसके बादसे उसके भाग्य-चक्रमें परिवर्त्तन आरम्भ हुआ। नादिरकी प्रतिभा, पराक्रम, तथा शौर्य्य और वीर्य्यपर विमुग्ध एवं आश्चर्य-चकित हो, बाबा कुलीने अपनी प्रथम स्त्रीसे उत्पन्न पुत्रीके साथ नादिरका विवाह कर दिया। यह कन्या 'शाह सुल्तान हुसैन शफ़ी' की पौत्री थी। इस स्त्रीसे नादिरको एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम 'रज़ाकुली बेग' रखा गया। दिन-रात निपट निर्धनतामें पड़े हुए नादिरके लिये यहाँसे उन्नतिका द्वार खुल गया। उसके दारिद्र्यकी दुःखद रात्रि सुख-सूर्य्यके उदित होते ही विलुप्त होगयी। नादिरके दिन अब सुख-चैनसे कटने लगे। इसी बीचमें बाबा कुली बेगका देहान्त होगया। इसके थोड़ेही दिन बाद नादिरकी स्त्री, रज़ा कुली बेगकी माँका भी देहान्त होगया। क़लात गढ़पर अपना 'एकाधिपत्य' बनाये रखनेके लिये, अर्थ-लोलुप नादिरने बाबा कुलीबेगकी दूसरी पुत्रीसे निकाह कर लिया। इसके गर्भसे 'नसिरुल्लाह' नामक एक परम प्रतापी पुत्र पैदा हुआ। उसीकी शादी हिन्दके शाहनशाह 'मुहम्मदशाह' की लड़कीसे हुई थी। परमात्माकी अपरिमेय लीलाका पता यहाँपर पूर्ण रूपसे मिलता है। कहाँ तो निर्धन नादिरका

पुत्र और कहाँ भारत-सम्राट्‌की पुत्री ! "कहाँ राजा भोज और कहाँ भोजवा तेली !" इस परस्पर विरोधी सम्बन्धका संगठित होना हम यहाँ सम्यक रूपसे देख रहे हैं।

नादिरके बाल्यकालीन बातों और घटनाओंका विस्तृत उल्लेख प्रायःकिसी भी इतिहासमे नहीं मिलता। और मिले क्योंकर ? कौन जानता था, कि निर्धन नादिर—गलियोंका भिखारी और दाने-दानेका मुहताज नादिर, अपने अपरिमेय पराक्रम, सविशेष साहस और कुछ संयौगिक सहायतासे एक दिन एशिया भरका भाग्य-विधाता बन बैठेगा ? और विशेषतः नादिरका बाल्य-जीवन तो प्रायः भेड़ोंके चराने और जङ्गलोंमें, ग्रामीण बालकोंके साथ खेलने कूदनेमें बीता ; जिन घटनाओंतक इतिहासकारकी दृष्टि दौड़ना कठिनही नहीं, असम्भव है। हाँ, यह जानते हैं, कि नादिरका जन्म किसी गगनचुम्बी अट्टालिकामें, सुख ऐश्वर्य्य-सम्पन्न कुलमें, ज्ञानी और विद्वानोंकी मण्डलीमें नहीं हुआ था।

बंगला विश्व-कोषके रचयिता बाबू नगेन्द्रनाथ वसुने नादिरकी बाल्यकालीन एक घटनाका उल्लेख अपने विश्व-कोषमें अवश्य किया है। उन्होंने लिखा है,कि "नादिर जिस समय सत्रह वर्षका था, उस समय 'उजबल' नामक एक व्यक्तिने उसे गिर-फ्तार कर अपने यहाँ बन्द कर रखा। नादिर चार वर्षोंतक बन्द रहा। चार वर्षोंके बाद वह अपनी चालाकीसे वहाँसे निकल भागा।" क़ैदख़ानेसे निकल भागना नादिर जैसे चालाक और साहसी पुरुषके लिये कोई असम्भव बात नहीं। विशेषकर जब शिवाजीका, औरङ्गज़ेबके क़ैदख़ानेसे तथा निपोलियनका, सेंट

एलबाके टापूसे निकल भागनेकी बातें हमारे सामने हैं। पर यह स्मरण करते हुए, कि नादिरका बाल्य-काल केवल अहवाज़ नगरमेंही व्यतीत हुआ, तथा वहाँके उजवल नामक किसी सत्ताधारी व्यक्तिकी चर्चा भी हम कहीं नहीं पाते, इस घटनापर सहसा विश्वास नहीं होता है। पर यह घटना कब हुई ? सम्भव है, जब वह अपने प्रकृत-पिताके साथ हो, उसकी निर्धनता एवं दरिद्रताका अनुचित लाभ उठा, किसी 'उजवल'ने, नादिरकी दुष्टताके कारण उसे अपने घरमें बन्दकर रखा हो। पर वह भी चार वर्षोंतक, जब नादिरकी अवस्था २२ वर्षकी होजाती है!—कुछ असम्भवसा प्रतीत होता है। नादिरके बाबा कुलीके घर आने पर तो ऐसी घटना घटही नहीं सकती थी। ऐसी हालतमें, सम्भव है, नादिरके जीवनके आदिकालमें, जब वह अपने प्रकृत-पिताके साथ होगा, उसकी स्वाभाविक दुष्टता एवं क्रूरताके कारण किसीने उसे अपने घरमें कुछ कालके लिये बन्दकर रखा हो* और किसी "दरबारी" इतिहासकारने इस घटनाको 'तिलका ताड़' बना दिया हो। विश्व-कोषके रचयिताने 'उजबल' को एक व्यक्ति लिखा है। पर यह सरासर भूल है। सच तो यह है, कि 'उजबल' नामक तातारियोंकी एक जाति थी, जिनका आक्रमण ख़ुरासानकी जातियोंपर सदा होता रहा था। यदि उनके द्वारा नादिर गिरफ्तार किया गया हो, तो यह सम्भव है।

---

* सर ड्यूरेंडने अपने "नादिरशाह" नामक ग्रन्थमें सन् १७०४ से १७०८ तक नादिरशाहके कैदमें रहनेकी बात लिखी है।

आशा और निराशा ।

बाबा कुलीबेगसे सम्बन्ध होने तथा उनकी दोनों पुत्रियोंसे विवाह कर लेनेसे, नादिरकी मुहताजगीके दिन तो कटही गये थे, साथ-ही-साथ उसके दिलमें और भी नये मनसूबे पैदा हो गये थे। पर उसके इन मनसूबोंपर थोड़े दिनोंके लिये एक प्रकारसे पानी फिर गया। आशा, निराशामें परिणत होगयी। बाबा कुली-बेगका देहान्त, नादिरको किशोरावस्थामेंहो होगया था। नादिरको इस अवस्थाका अनुचित लाभ उठा, बाबा कुलीके भाईने, जिसे अपने भाईकी सम्पत्तिपर हाथ फैलानेको कोई भी आशा नहीं रह गयी थी, क़लात दुर्गका अधिकार एवं प्रबन्ध अपने हाथोंमें लिया। एक ओर तो वह नादिरसे कहता, कि "तुम्हारी अवस्था छोटी है। काम-काज देखने तथा प्रबन्ध करनेका तुममें अभी अनुभव नहीं। जब तुम इसके योग्य हो जाओगे, तब मैं तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हें लौटा दूँगा।" और दूसरी ओर वह अफ़सरोंको भड़काता तथा उनसे कहता, कि "नादिर जैसे अभिमानी, क्रूर, निर्दय, दाम्भिक और घातक व्यक्तिमें इतनी योग्यता कहाँ, कि वह तुम्हारे जैसे वीर, साहसी, कुलीन, सभ्य, दयालु और सर्वप्रिय व्यक्तियोंपर शासन कर सके? वह अपने अयोग्य बर्तावोंसे

तुम्हारे ऊपर शासन करेगा और तुम उसे बैठे-बैठे सहन करोगे ; यह तो मुझसे देखा न जायेगा।" चूंकि नादिरका चाचा अधिकारपर था और वह अपने प्रपञ्च तथा कूटनीतियों द्वारा अपने अधीनस्थ लोगोंके हृदयपर क़ाबू करनेमें सफल हो सका था, इसलिये अफ़सर जातिके लोग उसीकी बातोंका समर्थन कर देते। पर नादिर इसे कब पसन्द कर सकता था ? कुछ दिनोंतक, जबतक वह किशोर था, उसने इसे किसी प्रकार सहन किया। ज्योंही जवान हुआ, उसने अपना पद अपने चाचासे लेना चाहा। पर उसके चाचाने, यह कहकर उसको, क़लात गढ़का अधिकार देनेसे इन्कार कर दिया, कि "तुम बड़े भारी क्रूर और अत्याचारी हो। शासन करनेका तुममें तनिक भी अनुभव और योग्यता नहीं है। अफ़सर जाति तुम्हारे शासनको ज़रा भी पसन्द नहीं करती। ऐसी अवस्थामें तुम्हें मैं यह अधिकार नहीं दे सकता।"

यह सुनकर नादिरका चित्त व्याकुल हो उठा। उसकी भुजाएं फड़कने लगीं। मन-ही-मन वह विचार करने लगा, कि "ये तो (चाचा) शासन करें, और मैं, जो इस दुर्गका प्रकृत अधिकारी हूं—सर्वतोभावेन जिसका इसपर स्वत्व है—इनकी अधीनता क़ुबूल करूँ ? नहीं, कदापि नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। सूर्य्य पश्चिममें उदित हो, चन्द्रमा गरल उगले, पर नादिर अपने स्वत्वोंसे कदापि बाज़ नहीं आयेगा।"

यह विचारकर नादिरने अपना घर, अपने चाचाका सङ्ग छोड़ दिया और मशहद* चला गया। वहाँ पहुँचकर वह

* ख़ुरासान प्रान्तमें मशहद नामका एक शहर है। यह स्थान इमाम-

बिगलर बेगकी* फ़ौजमें एक साधारण सिपाहीके पदपर नियत होगया। आरम्भमें तो इसे केवल दस सवारोंकी जमादारी मिली। पर आगे चलकर बिगलर बेगने इसके साहस, पराक्रम और दृढ़तासे बहुत प्रसन्न हो, इसे एक रिसालेका सर्दार बना दिया। इसके बाद बिगलर बेगके साथ तातारियों-के जो छोटे-छोटे युद्ध हुए, उनमें नादिरने अपनी ऐसी बहादुरी दिखलायी, कि बिगलर बेगने उसे 'मीमख़ास'†की उपाधि दे, एक हज़ार सवारोंका सर्दार बना दिया। इस पदपर वह लग-भग पैंतीस वर्षकी अवस्थातक रहा और बड़ी बहादुरी तथा दृढ़तासे अपना काम करता गया। जो लोग उसके गुण और स्वभावसे परिचित थे, वे तो उसकी बड़ी प्रशंसा एवं सराहना करते; उसे प्यार और पसन्द करते थे। पर जिन्हें उसके गुणों-का परिचय नहीं था, जिन्हें उससे बोलने और मिलनेका मौक़ा नहीं मिलता था, तथा जिन्हें उससे दूरही रहना पड़ता था, वे उससे असन्तुष्ट रहते थे। इस समय नादिर किसी विशेष अव-

---

अली रज़ाकी राजपुरी होनेके कारण प्रसिद्ध है। शाह अब्बासने इसे मुस-ल्मानोंका तीर्थस्थान बनाया था। इसलिये इसकी हेरातसे भी अधिक प्रशस्ति परशियामें है।

* "बिगलर बेग"—एक ख़िताब है। तुर्की भाषामें इसका अर्थ राजा-ओंका राजा है। "खान खाना" और "अमीर उल उमरा"के अर्थसे इसका अर्थ मिलता-जुलता है।

† "मीमख़ास"—तुर्की भाषामें इस शब्दका अर्थ एक हज़ार सवारोंका सरदार है।

सरकी प्रतीक्षा कर रहा था। समुचित समय उपस्थित न होनेके कारण, वह अपना मतलब किसीपर प्रकट होने नहीं देता। इस बीचमें सबको सन्तुष्ट रखना, किसीके मनमें किसी प्रकारका सन्देह उत्पन्न होने देनेका अवसर न देना, वह अपना कर्त्तव्य-कर्म समझता था।

सन् १६२० ई०में तातारी उजबकोंने * बारह हज़ार घुड-सवारोंकी पल्टन ले, खुरासानपर एक-य एक आक्रमण किया। यह देखकर खुरासानाधिपति विगलर बेग बड़ाही चिन्तित हुआ। उसके पास उस समय केवल चार हज़ार घुड़सवार और दो हज़ार पैदल-पल्टन थी। ऐसी विकट दशामें सुगमता-पूर्वक उद्धार पानेके लिये उसने अपने कर्म्मचारियोंकी एक सभा बिठलायी। उस समय उसने उक्त सलाहकारोंसे पूछा,—"ऐसे समयपर क्या करना चाहिये?" सभाके प्रायः सभी सदस्योंने अपने परा-जयकी पूर्ण सम्भावनाका अनुमानकर यह सम्मति दी,— "शत्रुदलकी संख्या हमलोगोंसे कहीं अधिक है। अतएव उनका मुक़ाबला करना हमारे लिये किसी प्रकार भी लाभकारक नहीं होगा। यदि करेंगे, तो जान-बूझकर अपनेको विपत्ति-जालमें फंसा लेंगे। इसलिये शत्रु दलपर आक्रमण न कर, हम सब खाई और मोर्चेके द्वारा नगरकी रक्षा करें। रहे आप; सो आप अपने परिवारके साथ दुर्गके भीतर वास करें।" पर नादिरसे ये कायरता और भीरुतापूर्ण बातें नहीं सुनी गयीं। लेकिन एक साधारण सरदार होनेके नाते उसको ये अधिकार कहाँ

* "उजबक"—तातारी लोगोंकी एक जातिका नाम है।

प्राप्त थे, जिनके बलपर वह विगलर वेगके सामने, भरी सभामें, बड़े-बड़े ओहदेदारोंके रहते हुए, अपना मुँह खोल सके? पर तो भी सबसे आखिरमें, बड़ी हिम्मत बाँध, और हाथ जोड़कर, उसने, अति विनम्र भावसे विगलर वेगसे प्रार्थना-पूर्वक कहा,—"ग़रीब परवर! मेरे तुच्छ विचारमें तो दुश्मनको कभी पास न आने देना चाहिये। अगर इस दासको आज्ञा मिले, तो यह अपने बलसे, समस्त शत्रुओंको कुछही देरमें धराशायी बना सकता है। अन्यथा इस दासका सिर आपके हाथमें है।"

विगलर वेग नादिरके शौर्य्य-वीर्य्य और पराक्रमसे पहलेसेही पूर्ण परिचित थे। अतएव नादिरके इन उत्साह तथा वीरता-पूर्ण बचनोंको सुनकर, हृदयमें किसी प्रकारकी भी शङ्का न करके, बिना सोचे-विचारेही उन्होंने कहा,—"हम तुम्हारे वीरत्वसे बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं। जाओ, शत्रुओंपर शीघ्र आक्रमण करो। अब विलम्ब करनेकी तनिक भी आवश्यकता नहीं है। आज तुम्हें मैं अपना अस्थायी सिपहसालार बनाता हूँ और यदि तुम इस युद्धमें विजयी हुए, तो यह पद तुम्हें सदाके लिये मिल जायेगा।" पर साथ-साथ विगलर वेगको अपने अन्यान्य उच्च पदस्थ अधिकारियोंकी मान-मर्य्यादा तथा सम्मानका भी विचार था। नादिरके अधीन रहने और काम करनेमें उनके अपमानका अनुभवकर विगलर वेगने उन लोगोंसे कहा,—"आपमेंसे जिन लोगोंकी इच्छा हो, वे नादिरके साथ जायें और जिनकी इच्छा न हो, वे घरही रह सकते हैं।"

स्वामीकी आज्ञा पातेही, अपने अधीनस्थ, सारी सेनाओंका

तत्काल संग्रहकर, मरने और मारनेके लिये, नादिर नगरके बाहर निकल पड़ा। शत्रु-दल, मशहदसे चार मञ्जिलके फासलेपर पड़ाव डाले लड़ाईके लिये तैयार खड़ा था। नादिरने अपनी सेनाके समस्त विभागोंको एक ऊंचे टीलेके पास ले जाकर बड़े उत्साह-वर्द्धक शब्दोंमें उनसे कहा,—"हमारे शूर-वीर, साहसी शेरो! आज तुम्हें अपने शौर्य्य और पराक्रमकी परीक्षा देनेका अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है। समझ रखो, ये सिपाही तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकते। दस हज़ार बकरियाँ सिंहके बच्चोंका क्या बिगाड़ सकती हैं? तुम जानते हो, मैंने हज़ारों बार इनका मुकाबला किया और हजारों बार इन्हें परास्त किया है। उस समय जब ये बकरे हमारे सामने पड़तेही पीठ दिखलाकर भागते और हमारे हाथोंके भालोंका शिकार बनते थे, तब ये इस समय ही हमारा सामना किस बूतेपर कर सकेंगे? शत्रु-दलकी जिस भारी तायदादको तुम देख रहे हो, वह तो कुछ भी नहीं। क्योंकि दस हज़ार आदमियोंमें, आधेसे अधिक तो अपने लूटके मालकी निगरानीमें लगे हुए हैं और बाक़ी आधे, हमलोगोंपर अपनी संख्याका प्रभाव जमानेके लियेही इधर-उधर छितरे हुए हैं। इसलिये रणधीरो! साहस करो, आगे बढ़ो और इन बकरोंका शिरच्छेद करके खुशीसे विजयका डङ्का बजाओ।" यह कहकर नादिरने अपने घोड़ेको एक एँड़ लगायी और बात-की-बातमें सबके आगे जा खड़ा हुआ। उसे आगे जाते देख, उसकी अधीनस्थ फ़ौज भी उत्साहसे भरकर उसके पीछे-पीछे चली। बात-की-बातमें दोनों ओरकी सेनाओंमें मुठभेड़ हो

गयी। घनघोर युद्ध हुआ। दोनों दलके योद्धा जी-जान देकर लड़े। रण-क्षेत्रमें लहूकी नदियाँ बह गयीं। विजय किसकी होगी, यह दोनों दलोंके देखनेवाले लोग देरतक, कुछ भी निर्णय न कर सके। अन्तमें नादिर अपने योद्धाओंको इकट्ठाकर, उनके साथ, शत्रु-दलकी क़तारको बीचो बीचसे चीरता-फाड़ता और उनका शिरच्छेद करता हुआ, शत्रु-दलके सेना-नायकके पास जा पहुँचा। पहुँचतेही विजय-विह्वल नादिरने उसका सिर धड़से जुदा कर दिया। इस दुर्घटनाका समाचार सुनकर शत्रुदलके पाँव उखड़ गये। वे निराश हो, अपने-अपने प्राण लेकर समर-क्षेत्रसे भाग चले। इस अवसरपर नादिर और उसके सिपाहियों-ने शत्रु-दलका ख़ूबही संहार किया। यहाँतक, कि युद्ध ख़तम होते-होते शत्रु दलके लगभग छः हज़ार सिपाही धराशायी हो गये, आधेसे कमही अपने घर लौटे। और उनमेंसे भी कितनेही लोग पकड़े जाकर ग़ुलाम बना लिये गये।

तातारियोंको परास्तकर विजय डङ्का बजाता हुआ, आनन्दमें मग्न, नादिर अपनी सेनाओंके साथ मशहद वापस आया। बिग-लर बेगने नादिरको उसके इस महान् कार्य्यके बदलेमें ख़ुरासानका नायब सिपहसालार बनानेकी सिफ़ारिश परशियाके शाहसे की। किन्तु परशियाके तत्कालीन शाह, सुल्तान हुसेन शफ़ीने, जो सदा आमोद-प्रमोदमेंही अपना जीवन व्यतीत करता था, नादिर-की इस वीरताकी कुछ भी क़दर नहीं की। वरन् उस जगहपर एक अनुभव-शून्य, नौजवान व्यक्तिको बहालकर भेज दिया और इस प्रकार उसने नादिरकी सारी आशाओंपर पानी फेर दिया।

राज्यके अन्यान्य अफसर, जो नादिरको सदा ईर्ष्याकी दृष्टिसे देखते थे, शाहके इस व्यवहारसे बड़ेही प्रसन्न हुए और बात-बातमें अब नादिरका तिरस्कार करने लगे। नादिर इस घटनासे बड़ाही दुःखित और लज्जित हुआ। साथही उसे क्रोध भी हो आया; पर अपने क्रोधको रोककर विगलर वेगसे उसने निवेदन किया,—"जहाँपनाह! पुरस्कार स्वरूप सिपहसालारका पद मुझे स्थायी रूपसे मिलना चाहिये था और इसके लिये आप वचन-बद्ध भी हैं; पर मैं केवल उस पदसे हटाही नहीं दिया गया, वरन् मुझे और भी बेइज़्ज़ती और ज़िल्लत झेलनी पड़ रही है! मेरे साथ यह सरासर अन्याय किया गया है। मेरी जगहपर एक ऐसे नौ-जवानको बहाल किया गया है, जो केवल अनुभव-शून्यही नहीं है, बल्कि ज़नानेमें बन्द रहने लायक है।" विगलर बेग नादिर शाहका यह सत्य, पर अप्रिय वचन सुनकर बहुत क्रुद्ध हुआ तथा उसे नौकरीसे बरख़ास्त कर जूतोंकी ठोकरोंसे शहरके बाहर निकालनेका हुक्म दे दिया। द्वेषी अफ़सरोंकी चालसे बेचारा नादिर लात-जूते, और धक्के-मुक्के खाकर, मशहदसे बाहर निकाल दिया गया! अभागा नादिर भी इन सब अपमानोंका सहनकर शहरसे बाहर निकल पड़ा।

चाचाकी हत्या।

कुच विगलर बेगके दरबारसे जूतोंकी ठोकरोंसे निकाला हुआ नादिर संसारमें कोई भी सहारा न देख, निराश-चित्त हो, फिर अपने चाचाको शरणमें घरपर वापस आया। चाचाने तो पहले उसकी बड़ी ख़ातिर-बात की; उसका यथोचित आदर-स्वागत किया। पर नादिरके हृदयमें इससे कोई भी परिवर्त्तन नहीं हुआ। उसको सदा यही धुन बनी रहती, कि क्योंकर क़लातगढ़का अधिकार प्राप्त हो। अपने इस भावको वह बहुत दिनोंतक छिपाये नहीं रख सका। कुछही दिनोंके बाद उसका यह मनोभाव उसके चाचापर प्रकट होगया। फिर नादिरके प्रति कहाँका आदर और कहाँका सत्कार? चाचाके हृदयमें प्रेमके स्थानमें द्वेषका संचार हो आया। नादिरकी पहली प्रतिष्ठा अब जाती रही। फिर दरिद्रताने आ, उसे धर दबाया। दाने-दानेके बिना बेचारा मारा-मारा फिरने लगा। उसने अपने बन्धु-वर्गके बीच यह निर्धन, अपमानित, लाञ्छित और तिरस्कृत जीवन व्यतीत करना कदापि उचित न समझ, अपने चाचाका सहयोग त्याग कर दिया और जङ्गलोंकी शरण ली।

जङ्गलमें पहले उसने दो-तीन हट्टे-कट्टे, धनहीन साहसी

व्यक्तियोंको अपने साथ लिया। उन लोगोंकी मददसे उसने रास्तेमें तीन ऊँटोंपर लदा हुआ माल लूट लिया। इस लूटकी आमदनीसे उसने पहले अपने जीविका-निर्वाहका प्रबन्ध किया। पश्चात् उन्हीं रुपयोंकी मददसे उसने और बीस-पच्चीस जवानोंको अपने दलमें मिला लिया।

इस बार अपने इस दलकी सहायतासे उसने एक भारी क़ाफिले पर आक्रमण किया। इस काफिलेके ऊँट और खच्चरोंपर व्यापारियोंका पूरा-पूरा माल लदा हुआ था। इस लूटसे भारी रक़म उसके हाथ लगी, जिसके कारण वह लड़ाईका सारा सामान, अस्त्र, शस्त्र, आदि ख़रीदनेमें समर्थ हो सका।

अस्तु; शस्त्र बढ़ानेमें उसे एक बातसे और सहायता मिली। शहरके व्यापारियोंके अवारे और लुच्चे लड़के उसके पास अपने यहाँसे अस्त्र-शस्त्र लेकर आते तथा उन्हें नादिरके हाथों बेचकर, उसके बदले रुपये लेते थे। अब तो नादिरका दल नित्य प्रति बढ़ने लगा। बात-की-बातमें उसने पाँच सौ नौजवान, हृष्ट पुष्ट सिपाहियोंका एक दल संगठित कर लिया तथा लूटकी आमदनीसे उनकी तनख्वाह देना और उनका पालन-पोषण करना शुरू किया। थोड़ेही दिनोंमें इर्द-गिर्दमें नादिरका रोब छा गया और उसके भयसे लोग "त्राहि! त्राहि!!" करने लगे। जिधरही वह एक नज़र फेर देता, उधरही तहलक़ा मच जाता था। लूट-मारसे नगरके लोग तबाह कर दिये जाते थे। नगर-निवासियोंमें इतनी शक्ति न थी, कि नादिर जैसे उठाईगीर, बटमार और लुटेरेका सामना करते। अतः नादिरका आतङ्क लोगोंके हृदयमें इतना

जम गया, कि यदि किसीके पास वह एक साधारण चिट्ठी भी लिख भेजता, कि 'इतने रुपये अभी भेज दो', तो लोग खुशी खुशी आकर उसके हाथोंमें उतने रुपये नज़र कर जाते। ऐसी हालतमें किसकी हिम्मत थी, जो उसकी मर्जी और शानके ख़िलाफ़ चूं तक कर सके।

हाँ; यदि शाह चाहता, तो नादिरकी यह बल-वृद्धि तथा उठाईगिरी रोक सकता था और नादिरकी इन बुरी हरकतोंके लिये पूरी सज़ा भी दे सकता था। पर समय तो नादिरका सहायक है। इस समय बेचारे शाहको अपनी क्षितिकी रक्षा करनाही कठिन हो रहा है। "जिमि दसनन मँह जीभ विचारी" कीसी उसकी हालत हो रही है। वैसी हालतमें जब उसकी अपनी ही हालत डावाँडोल हो रही है, दूसरेको दबानेका वह क्योंकर प्रयत्नकर सकता था? सुतरां, नादिरके लिये मैदान साफ़ मिला। इस अवसरसे नादिरने समुचित लाभ उठाया। इस समय शाह कितनीही झंझटों और लड़ाइयोंमें फँसा हुआ था। अफ़ग़ानोंकी एक पल्टनने मीरवायज़के पुत्र महमूद ख़ाँके अधीनमें चढ़ाईकर पाटनगर और इस्पहान जीत लिये और परशियाके दक्षिण-पश्चिम भागको अपने अख़्तियारमें कर लिया। तुर्कोंने भी आक्रमण कर परशियाके पश्चिम भागको ले लिया। रूसियोंकी मस्कोवीट नामकी एक जातिने गीलन तथा कास्पियन समुद्र तक सभी जगहोंपर अपना अधिकार कर लिया। ऐसी परिस्थितिमें परशियाके शाहको इतनी छुट्टी कहाँ, जो वह नादिरके प्रति आक्रमण करे?

इसी बीचमें एक और घटना होगयी। वायत वंशका सरदार तथा शाहकी पल्टनका एक सिपहसालार सैफुद्दीन बेग नामक एक व्यक्तिके किसी कार्यसे शाहके हृदयपर एक बड़ा भारी आघात पहुँचा। उसने हुक्म दिया, कि सैफुद्दीन तथा उसके अधीनस्थ सारी पल्टनकी हत्या कर दी जाये। उसकी इस आज्ञाके अनुसार कुछ लोगोंका तो नाश भी कर दिया गया। इस घटनासे सैफुद्दीन बड़ाही भयभीत हुआ। उसने शाहका दरबार अपनी कुछ पल्टनके साथ त्याग दिया। अनेकानेक जगहोंपर गया ; पर कहीं भी उसे शरण न मिली। अन्तमें अपनी पन्द्रह सौ पल्टनके साथ वह नादिरकी शरणमें चला गया। नादिरने उसे, उसकी पल्टनोंके साथ, अपने पास रख लिया। सैफुद्दीनके इस सहयोगसे नादिरके कुल दल-बलकी संख्या लगभग दो हज़ार होगयी। इन्हे लेकर नादिर सीमा-प्रान्तपर आक्रमण करता,लूट-खसोट मचाता, लोगोंसे धन वसूल करता तथा बहुतेरे गावोंको अपने कब्ज़ेमें भी करता जाता था।

नादिरकी यह चलती-बनती देखकर उसके चाचाके हृदयमें भी, जो क़लातगढ़का अधिकारी था,भयका पूरा संचार हो आया। उसने विचार किया, कि नादिरका यह काम किसी प्रकार रोकना चाहिये। पर बल-प्रयोग द्वारा उसके लिये यह काम एक प्रकारसे असम्भव था। अतएव उसने नादिरके पास एक पत्र लिखा। उसमें इस बातकी चर्चा की, कि अगर नादिर अपनी इन बेजा हरकतोंको छोड़ दे तथा अपने पिछले कुकर्मोंपर पश्चात्ताप करे, तो सम्भव है, कि परशियाके शाह उसके सारे

अपराधोंको क्षमा करके, उसे अपने राज्यमें कोई अच्छी नौकरी दे देंगे। नादिरने अपने चाचाके इस प्रस्तावको स्वीकार तो कर लिया पर उत्तरमें उसने निवेदन किया, कि "शाहके पास आपही पत्र लिखकर इन सब बातोंको तय कर लें।" फलतः उसके चाचाने शाहकी सेवामें एक बहुत लम्बा-चौड़ा पत्र लिखा। उसमें नादिरकी हरकतोंके लिये उसने यथोचित पश्चात्ताप किया तथा अन्तमें क्षमा-भिक्षा माँगते हुए शाहसे इस बातकी प्रार्थना की, कि नादिरको फिर राज्यकी किसी एक अच्छी नौकरीपर रख लिया जाये। पहले तो शाह कुछ पसोपेशमें पड़ा। क्षमा-दान करनेमें उसने कुछ आना-कानी की। पर पीछे अपनी परिस्थिति तथा नादिरके आनेसे अनेकानेक लाभका विचारकर उसने नादिरको क्षमा प्रदान की तथा राज्यमें एक अच्छी नौकरी भी दी! चाचाने इस बातकी सूचना तत्क्षणही नादिरको दी। नादिर अपने साथी सैफुद्दीनको लेकर, सौ जवानोंके साथ क़लातगढ़के लिये रवाना हो गया।

नादिर क़लातगढ़में पहुँच गया। तीन दिनोंतक उसके चाचाने बड़ी धूमधाम, और प्रेमके साथ उसका स्वागत किया। पर नादिरके मनमें तो किसी और ही विचारने अड्डा जमा रखा था। उसे एकही बातकी धुन सदा बनी रहती थी—और वह यह थी, कि "क़लातगढ़ फिर कैसे हाथ लगे"। इसी विचारसे तो वह आते समय पाँच सौ चुनिन्दे जवानोंको दूसरे दिन क़लातगढ़में पहुँचनेका हुक्म दे आया था। क़लातगढ़में पहुँचकर दो-चार दिनों तक तो वह बहुत आमोद-प्रमोदमें

संलग्न रहा। वह राग-रंगसे वहाँवालोंपर अपना प्रेम-राज्य संस्थापित करनेमें बहुत अंशोंमें फलीभूत भी हुआ। तीसरे दिन रात्रिमें जब वह अपने साथियोंके साथ नाच-रङ्गकी बहार ले रहा था, वहाँसे एक-ब-एक उठकर खड़ा हो गया। अपने चाचाके कमरेमें घुस पड़ा। वहाँ जाकर उसने अपने चाचाकी हत्या की! उसके पाससे क़लातगढ़की कुञ्जी ले लो। फिर उसने एक सीटी बजायी। सीटीकी आवाज़ सुनतेही चारों तरफ़से लगभग पाँच सौ सिपाही हरवे-हथियारसे लैस होकर वहाँपर आ धमके। नादिरकी आज्ञाके अनुसार पहलेसेही वे क़लातगढ़के इधर-उधर आकर छिपे हुए थे। नादिरका हुक्म पातेही वे क़िलेपर टूट पड़े। डेढ़ सौ सिपाही क़िलेकी रक्षाके लिये वहाँ मौजूद थे। पहले तो कुछ देर तक लड़ाई हुई। उस लड़ाईमें किलेके लगभग बीस रक्षक मैदान आये। बहुत घायल भी हुए। अन्तमें नादिरसे मुक़ाबिला करनेमें अपनेको असमर्थ जान, कुछ लोग तो भाग गये और कुछ लोगोंने आत्म-समर्पण कर दिया। नादिरने उन्हें क्षमा प्रदान कर अपने आश्रयमें रखा। यह घटना सन् १७२६ ई० में हुई थी।

अपने चाचाका वधकर, नादिरने क़लातगढ़का अधिकार अपने हाथोंमें ले, अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया। दूसरे दिन उसने वहाँके रहनेवाले सब निवासियों और सिपाहियोंकी एक सभा की; चिकनी-चुपड़ी बातोंसे उन लोगोंपर अपना प्रभाव डाला। कुछ लोगोंको सम्मान-दान द्वारा तथा कुछ लोगोंको नौकरियाँ दे, नादिरने सन्तुष्ट

किया। पश्चात् अपनी बाक़ी फ़ौजको भी उसने अपनी साबिक़ जगहसे बुला लिया। इस नवीन सङ्गठन द्वारा, नव-संगठित साधनोंके सहारे, उसने शाही सल्तनतके आस-पासके गावोंपर चढ़ाई करना और उनपर अपना क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया। बहुतेरे गावोंको—शाहकी लगभग ५०मीलकी सल्तनतको उसने अपने अधिकारमें कर लिया। उन जगहोंपर वह अपनी हुकूमत चलाने लगा तथा वहाँके प्रजाजनोंसे राज्यकर वसूल करने लगा। इस प्रकारसे भिखारी नादिर एक प्रबल अधिकारी बन बैठा।

पांचवां परिच्छेद।

नादिरके पराक्रमका परिचय।

नादिरके इस प्रकार अपने चाचाका वध करने और शाही गावोंपर अपना अधिकार जमा लेनेके कारण, परशिया-का शाह बहुतही असन्तुष्ट हुआ। धूर्त्त नादिरने उसके इस असन्तोषका अनुमान कर, उसके पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा; साथ-ही-साथ उस पत्रमें उसने इन बातोंकी भी चर्चा की, कि किस प्रकारसे तुर्कोंके विरुद्ध, लड़कर उसने ख़ुरासान प्रदेशकी रक्षा की; किस प्रकारसे ख़ुरासानके तत्कालीन शासकने, अपनी प्रतिज्ञाका पालन नहीं किया, उल्टे उसके साथ अन्याय और अत्याचार किये तथा उसके चाचाने किस प्रकारसे उसे धोका दे, उसकी पैतृक सम्पत्तिपर अपना अधिकार जमा लिया था, और उसकी यही हरकत उसके बधका कारण हुई।

उसकी इस चिट्ठीको पढ़कर शाहने इस बार बड़ी बुद्धि-मानीसे काम लिया। पर ऐसा करनेके सिवाय और दूसरा वह कर ही क्या सकता था? तुर्कोंके निरन्तर आक्रमण, रूसियोंके प्रबल प्रहार और अफ़ग़ानोंकी बार-बारकी चढ़ाईसे एक तो उसकी जान यों ही हैरान परेशान थी, दूसरे अपनेही घरमें नादिर जैसे पराक्रमी और साहसी शत्रुको पैदा करना

अपनी जड़में आप कुल्हाड़ी मारना नहीं, तो और उसके लिये क्या होता ? फलतः शाहने नादिरके सारे अपराध क्षमा कर दिये। और नादिरको अपनी पल्टनमें एक अच्छा पद देनेका वचन दिया और उसे अपने यहाँ बुला भेजा।

क़लातगढ़की रक्षाके लिये पाँच सौ फ़ौजी जवानोंको वहाँ छोड़कर और बाक़ीको अपने साथ लेकर,सैफुद्दीनके साथ नादिर, शाह-परशियाकी सेवामें उपस्थित होनेके लिये रवानः हुआ। वहाँपर पहुँच कर वह शाहके दर्शनके लिये दरबारमें हाज़िर हुआ। शाहने उसे देखकर, उसके भूतपूर्व अमानुषिक एवं असह्य अपराधोंकी ओर उसे स्मरण दिलाकर कहा,—"यद्यपि तुम्हारे अपराध, तुम्हारे राज-विद्रोह-सम्बन्धी कार्य्य क्षमा-योग्य नहीं, तथापि यह आशा कर, कि तुम अपनी दुष्टताका त्याग कर, बेजा हरकतोंको छोड़कर तथा अपनी सारी कुटिलताको भूलकर, अपने स्वामी, राज्य और देशकी सेवा भक्तिपूर्व्वक करोगे, तुम्हारे भूतपूर्व्व सारे कुकर्मों का कुछ विचार न कर मैं तुम्हें विशेष रूपसे पदवी, पारितोषिक और धन्यवाद देनेकी प्रतिज्ञा करता हूँ।" इसपर नादिरने बड़ी नम्रतासे शाहकी क्षमा-प्रार्थना की और सदा स्वामि-भक्त एवं विश्वास-पात्र बने रहनेका अपना दृढ़ संकल्प प्रकट किया। बात-की-बातमें वह एक हज़ार सैनिकोंका सरदार बना दिया गया।

जबतक नादिर शाहकी फ़ौजमें शरीक नहीं हुआ था, तबतक तुर्कोंकी पल्टन शाहकी पल्टनको सदा परास्त करती थी। शाहके गावोंको एक-एक करके अपने क़ब्ज़ेमें करती

जाती थी। उस समयके घटना-चक्रसे यह प्रतीत होता था, कि तुर्क और अफ़ग़ान आपसमें मिलकर शाहकी सारी सल्तनत-पर अधिकार कर आपसमें बाँट लेना चाहते थे, तथा शाहसे निरन्तर युद्ध कर उनकी हस्तीको सदाके लिये मिटा देना चाहते थे। पर नादिरके पहुँचतेही पट बिल्कुल परिवर्त्तित हो गया। जहाँ तुर्क और अफ़ग़ान फ़ारसवालोंपर सदा विजयी होते थे, वहाँ अब वे नादिरके अदम्य उत्साह, साहस और युद्ध-कौशलके कारण पग-पगपर परास्त होने लगे—मुँहकी खाने लगे। उधर तुर्क-सेनामें तहलक़ा मच गया। बहुतेरे तुर्की सिपाही, सेनासे अपना-अपना नाम कटवाकर अपने घरपर वापस जाने लगे और इस प्रकारसे तुर्कों का बल दिन-प्रतिदिन घटने लगा। इधर नादिरके बार-बार विजय प्राप्त करनेसे उसकी कीर्ति-लतिका फैलने लगी। यत्र-तत्र उसकी प्रशंसा होने लगी। शाहके दरबारमें भी उसकी ख़ातिर-बात पहलेकी अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ गयी। शाही सेना भी बार-बारकी विजयपर उमङ्ग और उत्साहसे भर गयी। वह अब नये उत्साह और दूने बलसे दुश्मनोंका मुक़ाबला करने लगी। नादिर द्वारा प्रचारित नवीन सङ्गठनने उनकी इस बल-वृद्धिमें जादूका सा काम किया।

नादिरके इन तमाम बहादुरी और जवाँमर्दीके कामोंसे ख़ुश होकर शाहने उसे अपनी सेनाका नायब सिपहसालार बना दिया। नादिरको शाहके सम्पर्कमें सदा रहनेका अब बहुत अच्छा अवसर हाथ लगा। अब उसको एकही हौसला था और वह यह—कि, "क्योंकर मैं सिपहसालार बन जाऊँ"। इस

समय फहतउल्लाह ख़ाँ, शाहका प्रधान सिपहसालार था। वह नादिरके कलेजेपर सदा काँटेकी तरह चुभता रहता था। नादिर अपनी पटुता, कार्य्य-कुशलता एवं धूर्त्तताके कारण, शाहको तो अपने क़ाबूमें लानेमें पूरा कामयाब हो गया; पर उसमें इतनी हिम्मत न थी, कि फतेहउल्लाह ख़ाँसे खुल्लम-खुल्ला मुख़ालफ़त करे। अतएव उसने "मुँहमें राम बग़लमें छुरी" वाली नीतिका अवलम्बन किया। फतेहउल्लाह ख़ाँके सामने तो वह मीठी-मीठी बातें बनाता उसके मनके मुताबिक़ चर्चा चलाता तथा उसके मित्र और हित-चिन्तक बननेका दम भरता, लेकिन भीतरसे उसकी जड़में कुल्हाड़ी मारनेके प्रयत्नमें वह सदा लगा रहता था। सदा शाहका कान भरता था। फतेहउल्लाह ख़ाँके विरोधियोंसे मिलकर उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचता तथा जिस प्रकारसे भी हो, शाहकी आँखोंमें फतेहउल्लाहको गिरानेकी हमेशा कोशिश किया करता था। और अपने इस प्रयत्नमें वह सफलीभूत भी होगया। नादिरके भाग्यसे शाहका दिल फतेहउल्लाहसे फट गया! शाह उससे रुष्ट और असन्तुष्ट हो गया।

संयोगवश एक दिन दरबारमें जब शाह, नादिर और फ़तेउल्लाह, तीनों एकही साथ बैठे हुए थे, तभी शाहने सेना विषयक कतिपय कठिन प्रश्न फ़तेहउल्लाहसे पूछ दिये। नादिरको यह अच्छा मौक़ा हाथ लगा। प्रसंगवश उसने सेना-सम्बन्धी सङ्गठन, संचालन, वर्दी तथा वेतन आदिकी सारी त्रुटियों-को अच्छी तरह खोलकर बता दिया। बल्कि उसने यहाँतक कह दिया, कि इस्लामी प्रजातन्त्रको ये अगणित त्रुटियाँ किसी भी

इतिहासइससे छिपी नहीं है। नादिरकी ये बातें सुनकर शाह फ़तेहउल्लाहपर बहुत ही क्रुद्ध हुआ। फ़तेहउल्लाहके प्रति उसका क्रोध तो पहलेसे था ही, उसपर नादिरकी बातोंने उसको क्रोधाग्निमें घीकी आहुतिका काम किया। शाहने फ़तेह-उल्लाहपर बहुत बिगड़कर कहा,—"जो दोष तुमपर लगाये गये हैं, उनका समुचित समाधान यदि तुम बहुत शीघ्र न कर दोगे, तो तुम्हारा सिर काट लिया जायेगा।"

फ़तेहउल्लाहने शाहको इस प्रकार क्रोधित देख, काँपते हुए कहा,—"ग़रीबपरवर! मैं भी उन्हीं परिपाटियोंका अनुकरण करता हूँ, जो यहाँपर पहलेसे प्रचलित हैं।" फ़तेह-उल्लाहके इस उत्तरसे शाह सन्तुष्ट नहीं हुआ। अतएव उसकी (शाहकी) आज्ञासे फ़तेहउल्लाहका सिर धड़से उसी दम अलग कर दिया गया!

फ़तेहउल्लाहकी मृत्युके पश्चात् शाहने नादिरको सिपह-सालार बनाया। नादिर भी बहुत दिनोंके अभिलषित फलको पाकर आनन्दसे फूले अंगो नहीं समाया। हर्षके निस्सीम आवेशमें आकर, अपनी इस नयी नियुक्तिपर शाहके प्रति वह शिष्टाचारके समुचित नियमोंका पालन करना भी भूल गया। अस्तु; शाही सेनामें भर्ती होनेके कुछही दिनों बाद नादिर अपनी चालाकी, प्रपंच और उद्योगसे शाही सेनाका सिपहसालार बन बैठा। यह घटना सन् १७२७ की है।

सिपहसालार बनकर नादिर चुपचाप कब बैठनेवाला था? सेनाके संगठनमें, उसके समुचित संचालन और सुधारमें

नादिर सदा तत्पर रहता था। इसका परिणाम यह हुआ, कि सेना अच्छी तरहसे संगठित हो गयी। उनमें नवीन उत्साह और बलका संचार हो आया। पहले जो तुर्कों के वारसे सदा पीछेको पाँव हटातीं, वे आज तुर्कों का मान-मर्दन करनेके लिये उत्सुक हैं। उनके ऐसा होनेका एक और प्रधान कारण था। जहाँ उन्हें पहले निश्चित समयके बहुत बाद तनख़्वाह मिलती, नादिर सिपहसालार होतेही, जिस दिन ख़ज़ानेसे तनख़्वाह निकलती थी, उसी दिन अपने हाथोंसे उन्हें बाँट देता था। जहाँ वर्दीकी क़िल्लत उन्हें हमेशा बनी रहती थी, वहाँ नादिरके सिपहसालार होते ही उनका यह दुःख दूर हो गया। इसलिये सेना भी नादिरको जी-जानसे प्यार करने लगी और उसके हुक्मके पालनमें सदा तत्पर रहने लगी। नादिरके इस प्रबन्धसे शाह बहुतही ख़ुश हुए। सेना-सम्बन्धी सारा प्रबन्ध उन्होंने नादिरके हाथोंमें छोड़ दिया। नादिरने भी इस अवसरसे समुचित लाभ उठाकर, जिन सिपाहियोंपर उसे अपने प्रति अविश्वास था, उन्हें सेनासे हटा दिया और उनकी जगहपर उन लोगोंको बहाल किया, जो उसके विश्वास-पात्र और प्रिय थे।

पाठक यह जानते हैं, कि परशियाके प्रति अपने अविराम आक्रमणों द्वारा तुर्कोंने शाहकी नाकमें दम कर रखा था। शाहकी बहुतेरी जगहोंपर भी उन्होंने अपना कब्ज़ा कर लिया था। पर अब नादिरने अपनी नव-संगठित शक्ति द्वारा, अपने उद्भट बारह हज़ार योद्धाओंके सहारे तुर्कों से बदला लेनेका विचार किया। अपने सभी अनधिकृत स्थानोंको उनसे फिर छीन लेनेका

निश्चय किया। तुर्कोंको जब इस बातका समाचार मिला, तब उन्होंने शाह तहमास्पके पास सन्धिकी सूचना भेजी और उसमें लिखा, कि जिसके अधिकारमें अभी जो स्थान हैं, वे वैसेही रहें। हाँ, यदि शाह अफ़ग़ानोंसे उनके द्वारा अधिकृत अपने स्थानोंको फिर लेलेंगे, तो इसमें तुर्क लोग अफ़ग़ानोंकी ज़रा भी मदद नहीं करेंगे। शाहने तुर्कोंको यह उत्तर भेज दिया:— "इस सम्बन्धमें कतिपय परमावश्यक प्रश्नोंकी पूछ-ताछके लिये मैं अपना राजदूत रूमके सुल्तानके पास भेज रहा हूँ। वहाँसे उत्तर आनेपर, सन्धिकी शर्तोंपर विचार किया जायेगा। युद्ध, मार-काट और लूट-खसोट दोनों तरफसे बन्द रहे।" इधर उसने दूतको सिखला दिया, कि सुल्तानके यहाँसे वापस आते समय रास्तेमें तुम बीमारीका बहाना कर कहींपरठहर जाना और वहीं-पर कुछ महीनोंतक रुक कर रहना।

शाह तहमास्पका तुर्कोंके साथ सन्धि करनेमें विलम्ब करने-का मतलब सिवाय इसके और कुछ भी नहीं था, कि वह तुर्कोंके साथ लड़नेके लिये मुहलत चाहता था। इसका कारण यह था, कि मशहदका गवर्नर मलिक काफूर शाहकी अधीनताकी बेड़ी तोड़कर बिल्कुल स्वतन्त्र हो, मशहदका खुदसर मालिक बन बैठा था। नादिरने शाहके साथ मलिक काफूरपर बारह हजार युद्ध-पटु योद्धाओंको लेकर आक्रमण किया। मलिक काफूरको हराकर नादिरने उसे क़ैदकर लिया। काफूरके कोषमें जितना धन था, उसे लूटकर नादिरने शाहके हवाले किया और मशहदपर अपना अधिकार जमाया।

मशहदपर अधिकार कर अफ़ग़ानोंसे लड़नेके लिये नादिर आगे बढ़ा। अब्दुली नामक अफ़ग़ानोंकी एक जातिने शाह हुसेनके समयमें हेरातपर अपना कब्ज़ा कर लिया था और वह एक बड़ी भारी फ़ौज लेकर मशहदपर चढ़ाईकर और उसे अपने अधिकारमें ला, सारे खुरासान प्रान्तपर अपना दख़ल जमाना चाहती थी। नादिरने अपनी उसी फ़ौजके साथ अब्दुलियोंपर आक्रमण किया। अब्दुलियोंके बल और पराक्रमका अनुमानकर, शाह पहले तो बहुत घबराया, पर नादिरकी उत्साह-भरी बातोंने उसके हृदयमें भी कुछ उत्साहका संचार किया। हेरातसे तीन दिनके धावेपर अब्दुलियोंने तीस हज़ार घुड़सवारोंके साथ नादिरसे मुक़ाबिला करनेके लिये आगेकी ओर प्रस्थान किया। नादिरको कुछ सिपाहियोंके साथ सामने देखकर वे बहुत खुश हुए और उन्हें पूरा यक़ीन होगया, कि वे नादिरको अवश्य पराजित करेंगे। पर बहादुर नादिर घबराने वाला थोड़ेही था। उसने अपनी फ़ौजको एक ऊँचे टीले-पर खड़ा कर दिया और वहींसे आगे बढ़नेवाले अब्दुलियोंपर बन्दूकें चलाने और तीरोंका वार करनेका हुक्म दे दिया। घोर घमासान युद्ध हुआ। अब्दुलियोंके पाँच हज़ार बहादुर मारे गये और पन्द्रह हज़ार नादिर द्वारा गिरफ़्तार कर लिये गये। विजयश्री नादिरकी हुई। अब्दुली पीछे हटे। अपने बचनेका कोई भी उपाय न देख, उन्होंने नादिरसे सन्धिके लिये प्रार्थना की। नादिरने इसे स्वीकार कर लिया। इसके द्वारा यह निश्चय हुआ, कि अब्दुली लोग सदा शाहके शासनके अधीन रहेंगे। हेरातका

गवर्नर उनकी जातिकाही कोई-न-कोई व्यक्ति सदा बहाल किया जायेगा। साथही उन्हें कुछ वार्षिक कर भी देना पड़ेगा। अन्तमें उनसे राज-भक्तिकी शपथ ले, नादिर मशहदकी ओर वापस लौटा। शाह पहलेही लौट गया था। यह बात सन् १७२६ के मई महीनेकी है।

मशहदमें वापस आकर नादिरने सुना, कि अशरफखाँ नामक एक अफ़ग़ान सरदार एक भारी दल-बलके साथ उसपर आक्रमण करना चाहता है। उसका यह आक्रमण भी शीघ्रही होनेवाला है। कारण, उसका (अशरफ़का) यह अनुमान है, कि अब्दुलियोंके साथ घनघोर युद्ध करनेके पश्चात् नादिरकी पलटन थक गयी है। कितनेही योद्धा मारे भी गये हैं। नादिर इस सम्बन्धमें सोच-विचार करही रहा था, कि अशरफ़खाँने अपने तीस हजार सिपाहियोंके साथ नादिरपर सन् १७२६ ई० के सितम्बर मासमें चढ़ाई कर ही दी। यह ख़बर पाकर शाह और नादिर दोनों घबराये। पर नादिर चुपचाप बैठनेवाला नहीं था। वह अपने सिपाहियोंके पास गया। उनके मनोभावको तोलकर देखा। पता लगा, कि गत युद्धोंमें आशातीत सफलता प्राप्त करनेके कारण उनके उत्साह और उमङ्गका कोई ठिकाना नहीं है। नादिरके हुकमपर संसारकी किसी भी शक्तिसे मुक़ाबला करने, मारने और मर मिटनेके लिये वे तैयार हैं। नादिर यह जानकर बहुत ही प्रसन्न हुआ।

वह शाहके पास वापिस आया और निवेदन किया, कि "हमलोग इन अफ़ग़ानोंका मुक़ाबिला ज़रूर करेंगे। युद्धमें

केवल सैन्य-संख्याका अधिक होनाही आवश्यक नहीं, युद्ध कला भी कोई चीज़ है।" अस्तु १६ हज़ार सैनिकोंके साथ, जिनमें 'रङ्ग-रूट' भी शामिल थे, नादिर अशरफ़ख़ाँसे मुक़ाबिला करनेके लिये रवानः हुआ। दामगाँवके पास उसने सैनिक पड़ाव डाला। सैनिक दृष्टिसे यह स्थान बड़े लाभ और कामका है। पहले आक्रमण करनेवालोंको सदा इस स्थानपर मुँहकी खानी पड़ती है। अशरफ़ तो पहले नादिरपर आक्रमण करनेके लिये राज़ी नहीं हुआ। पर उसके अफ़सर और सिपाहियोंने अपने बलके मदमें आकर तुरतही आक्रमण कर देनेका प्रबल अनुरोध किया। यद्यपि यह काम अशरफ़के मनके माफ़िक नहीं हुआ, तथापि अपनी फ़ौजका यह प्रबल अनुरोध भी तो वह नहीं टाल सकता था, कारण लड़नेवाले वे ही थे। सुतरां, मुक़ाबिला हो ही गया। नादिरकी फ़ौजने पूर्वाधिकृत स्थानका समुचित लाभ उठा, अशरफ़की फ़ौजको तितर-बितर कर दिया। अन्तमें भारी संग्रामके पश्चात् अशरफ़की फ़ौज हार गयी। उसके छः हज़ार जवान मैदान आये। नादिरके भी चार हज़ार आदमी मारे गये। पराजयके पश्चात् अशरफ़ख़ाँकी सारी आशाओंपर पानी फिर गया। अशरफ़ अपनी फ़ौज लेकर इस्पहानकी ओर भाग गया। बहुतेरे सिपाहियोंने उसके इस पराजयके पश्चात् तथा नादिरके भीषण प्रहारको सहन करनेमें असमर्थ हो, अशरफ़का साथ छोड़ दिया। नादिरकी इस विजयपर वाहवाहीका ठिकाना नहीं रहा। शाह वहींपर मौजूद था; उसकी प्रसन्नताकी कोई सीमा न रही। निदान, यह कहते हुए, कि "मेरे पास तो ऐसा कोई

पदार्थ नहीं, जिससे तुम्हारी इस सेवा और परिश्रमका बदला चुकाया जा सके, शाहने उसे 'तहमाश नादिर कुलीख़ाँकी' * उपाधि प्रदान की।

शाहद्वारा इस सर्व-श्रेष्ठ उपाधिको प्राप्तकर, नादिर दामगाँवसे फ़ौरन इस्पहानकी ओर अशरफ़ ख़ाँकी खोजमें रवाना हुआ। रास्तेमें बहुतेरे ईरानियोंको उसने सिपाहीमें बहाल कर लिया। बहुतेरे तो अपनी ख़ुशीसे आकर उसकी सेनामें भर्ती हो गये। इसके दो कारण थे। पहला तो नादिरकी बेहद चलती-बनती और दूसरा लूटके मालोंमें शरीक होनेका लोभ। इस प्रकारसे नादिरके पास चालीस हज़ार योद्धा हो गये। इसकी ख़बर जब अशरफ़को लगी, तब उसने मुर्चागढ़में ३० हज़ार चुने हुए अफ़ग़ानी सिपाहियोंके साथ नादिरका मुक़ाबिला करनेके लिये डेरा गिराया। यह अफ़ग़ानोंका अन्तिम भिड़न्त था। घोर-घमासान युद्ध हुआ। पर अशरफ़ हार गया और इस्पहानकी ओर लौट गया। रास्तेमें जितने ईरानियोंसे उसकी भेंट हुई, सबको आम तौरसे वह क़त्ल करता गया। रास्तेके गाँवोंमें, जहाँपर ईरानी बसे हुए थे, सिर्फ़

---

* 'तहमाशका' अर्थ है—बादशाह और 'क़ुलीका' अर्थ है—'ग़ुलाम' इस लिये 'तहमाश क़ुलीका' अर्थ हुआ—बादशाहका ग़ुलाम। शाहके दरबारमें यह उपाधि सबसे बड़ी समझी जाति है। कारण अपने नामके पूर्व तहमाश शब्दका प्रयोग करनेकी आज्ञा शाहके राज्यमें किसीको भी नहीं है। यहाँ तक, कि शाहके निकट-सम्बन्धी, पुत्र-पौत्र भी, जबतक तख़्त-नशीन न हों, तबतक इस उपाधिका प्रयोग नहीं कर सकते।

औरतोंको छोड़कर, एक भी मर्द नज़र नहीं आता था। जब अशरफ़ इस्पहानमें पहुँचा, तो वहाँके नगर-निवासी ईरानियोंको भी उसने आम तौरसे क़त्ल कर देनेका हुक्म दे दिया। पर तब-तक तो नादिरशाह क़रीब-क़रीब इस्पहानतक पहुँच गया था। अशरफ़का दूत जब इस ख़बरको लेकर उसके पास पहुँचा, तो वह बिल्कुल घबरा उठा। अब उसको अपनी जान और मालकी फ़िक्र लगी। ईरानियोंको अब कौन क़तल करता है ? निदान खच्चर, ऊँट और छकड़ेपर अपना सारा माल लादकर, क़रीब-क़रीब वहाँकी सारी अफ़ग़ान जनताके साथ वह इस्पहानको छोड़कर शीराज़की ओर भाग चला। नादिरके पहुँचनेमें अब देर न थी, इसी समय मौका पाकर इस्पहान तथा उसके इर्द-गिर्दके गाँवोंके लोग उन सब घरोंमेंसे सब माल ढो ले गये, जो ख़ाली पड़े हुए थे। सन् १७३० के नवम्बर महीनेमें नादिर इस्पहान पहुँचा। वहाँ उसने नगरको बिल्कुल ख़ाली देखा। बिना रोक-टोकके उसने उस शहरपर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया।

वह एक सप्ताहतक वहींपर ठहर गया। अफ़ग़ानियोंका पीछा करनेके लिये वह आगे नहीं बढ़ा। पहले तो उसके यहाँ ठहर जानेका रहस्य किसीपर प्रकट नहीं हुआ ; पर अन्तमें उसने शाहसे यह प्रस्ताव किया, कि "यदि सैनिकोंको तनख़ाह देनेके लिये लगान और कर वसूल करनेका अधिकार शाह द्वारा मुझे प्राप्त होगा, तब तो मैं शाही पल्टनका सिपहसालार हूँगा, वर्ना मैं इससे अलग हो जाऊँगा।" नादिरके इस प्रस्तावसे शाह ग़ज़बके पसोपेशमें पड़ा। उसकी

तो बड़ी ख़्वाहिश हुई, कि नादिर नौकरीसे हट जाये। पर इस विकट कालमें शाह नादिरको नौकरीसे हटा ही क्योंकर सकता था ? इसलिये नादिरका प्रस्ताव दिलसे, बिल्कुल नामञ्जूर होनेपर भी, हार-मानकर उसे स्वीकार करनाही पड़ा। इस सम्बन्धमें मि० जे० फ्रेज़रका कहना है, कि नादिरको यह अधिकार देकर शाह मानों अपने आप तख़्तसे अलग हो गया।* वह नादिरके हाथोंका कठपुतला बन गया। चतुर शाह वीर नादिरको केवल यही अधिकार देकर सन्तुष्ट नहीं हुआ। वरन् उसने नादिरको ख़ुरासानका 'बिगलर बेग' भी बना दिया और अपनी भाञ्जी-की शादी भी नादिरके साथ कर दी। ये सब करने-धरनेके बाद, खिन्न-चित्त हो, वह वहाँसे अपनी राजधानी तहमाशको वापस चला गया।

शाहद्वारा उपर्युक्त अधिकार, उपाधि एवं विभूतिको प्राप्तकर नादिरने अशरफ़खाँकी खोजमें शीराज़की ओर प्रस्थान किया। शीराज़में नादिर और अशरफ़खाँके बीच फिर भी युद्ध हुआ। बेचारा अशरफ़ने इस बार बुरी तरहसे हार खायी। बचे हुए केवल १५ सौ सैनिकोंके साथ वह कन्धारकी ओर भाग चला। इन बचे हुए १५ सौ सैनिक साथियोंमें बहुतोंने उसका साथ छोड़ दिया। अब उसके साथ केवल एक सौ सिपाही रह गये। वह कन्धारकी ओर बढ़ही रहा था,

* J Frazer—"In giving that power, he (in fact) parted with his Crown.—The History of Nadir Shah.

कि रास्तेमें बलूचियोंका एक दल उसपर टूट पड़ा। अशरफ़ और उसके सिपाहियोंने उसका मुक़ाबिला तो किया, पर वे थके-माँदे, युद्धमें हारे हुए और पस्तहिम्मत हो गये थे ; भला कबतक उन बलूचियोंके मुक़ाबिलेमें खड़े हो सकते थे ? निदान ये लोग पराजित हुए। निर्दय बलूचियोंने इनके शरीरके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

नादिर अब शीराज़में पहुँचा। यहाँपर एक महीनेतक ठहरकर वह तुर्कोंसे मुक़ाबिला करनेके लिये हमदन और अन्यान्य स्थानोंकी ओर बढ़ा। इन स्थानोंको तुर्कोंने परशियाके शाहसे छीनकर अपने अधिकारमें कर लिया था। तुर्कोंकी ओरसे अब्दुल्लाह अब्बासने उसका मुक़ाबिला किया। युद्धके पश्चात् अब्दुल्लाह हार गया और करमनशाहमें भाग गया। लेकिन वहाँपर भी नादिरने उसका पीछा न छोड़ा। अपनी फ़ौज लेकर वह करमनशाहमें पहुँचा। वहाँ उसने अब्दुल्लाहको परास्त किया। नादिर करमनशाहमें कुछ लोगोंको उस जगहकी रखवालीके लिये छोड, तेब्रीजकी ओर आगे बढ़ा। तेब्रीजको अपने कब्ज़ेमें लाकर वह अरदेबिलकी ओर बढ़ा। नादिर उसे भी अपने अधिकारमें लाया, नादिरकी इस अद्भुत विजयपर तमाम तुर्क घबरा उठे। उन्होंने नादिरसे सन्धिकी प्रार्थना की। इसी बीचमें नादिरको यह समाचार मिला, कि हेरातमें सब अब्दुली अफ़ग़ान बिगड खड़े हुए हैं। अतः नादिरने तुर्कोंकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

अब नादिर अब्दुली अफ़ग़ानोंको सर करनेके लिये हेरातकी ओर बढ़ा। अब्दुलियोंने इसका मुक़ाबिला किया। पर वीरवर

नादिरके सामने वे कबतक ठहरनेवाले थे ? सुतरां,नादिरने उनको हराकर हेरातपर अपना क़ब्ज़ा किया और कुछ दिनोंतक वहाँ ठहरा रहा। इसी बीचमें हेरात नगरमें एक भयङ्कर दुर्भिक्ष पड़ा। सब लोग—साथ-साथ नादिरकी फ़ौजके सैनिक,घोड़े आदि भी—दाने-दानेके बिना मरने लगे। नादिर विकट सङ्कटमें पड़ा। इस समय उसने एक बड़ाही विचित्र उपाय सोच निकाला! वहाँकी जितनी अफ़ग़ान जनता थी, सबको उसने मरवाना शुरू किया और इस प्रकार उसने दुर्भिक्षके प्रकोपसे अपने सैनिकोंकी रक्षा की। वहाँके अफ़ग़ान गवर्नरको भी उसने मार डाला और अपना नया गवर्नर मुक़र्रर किया। इन सब कामोंको करनेके बाद वह मशहद वापस चला आया।

जब नादिर इधर मशहदमें ही था, तभी शाह-तहमास्पने सुना, कि तुर्क लोग सीमा-प्रान्तपर हमला करना चाहते हैं। शाह अपनी अधीनतामें २० हजार जवान लेकर तुर्कोंसे मुक़ाबिला करनेके लिये रवानः हुआ। तेब्रीजमें आकर, वहाँकी रक्षाके लिये जिन लोगोंको नादिरने वहाँ छोड़ रखा था, उन्हें साथ ले, शाह आगेकी ओर बढ़ा। शाह इरवान्में तुर्कोंको पराजित कर करमनशाकी ओर बढ़ा। वहाँ अहमद पाशाके साथ शाहकी ख़ासी लड़ाई हुई। अन्तमें तुर्कोंकी हार हुई। उन्होंने शाहसे सन्धिकी प्रार्थना की। शाहने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। निश्चय हुआ, कि अभी जिसके अधिकारमें जो स्थान हैं, वे आगे भी उसीके अधिकारमें बने रहें।

बन्दी शाह।

शाहद्वारा स्वीकृत तुर्कोंकी सन्धिकी शर्तोंकी बातें सुनकर, नादिर क्रोधसे आग-बबूला होगया। ६० हज़ार चुने हुए फ़ौजी जवानोंके साथ नादिर मशहदसे तत्क्षणही शाहके पास रवानः हुआ। शाहसे मिलकर उसने कहा, कि 'जो सन्धि आपने तुर्कों के साथ की है, वह अपमान-जनक और निन्दनीय है। अतएव आप उस सन्धिको तोड़ दें तथा जिन लोगोंने आपको ऐसी अपमान-जनक सन्धि करनेकी सम्मति दी है, उनको पूरी सज़ा दें।' पर शाहने उसके इस प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया।

इसपर नादिरने कहा,—"जिनलोगोने आपको तुर्कोंके साथ सन्धि करनेकी राय दी है, वे तुर्कों से मिले हुए हैं तथा आपकी हत्याकर इस राज्यपर वे अपना दख़ल जमाना चाहते हैं। शाहने इस कथनको असम्भव जान, नादिरकी बातोंपर विश्वास नहीं किया। इसपर नादिरने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, शाहके सामने पत्रोंके उन पुलन्दोंको फेंक दिया, जिनमें शाहके विरुद्ध षड्यन्त्र रचने, उसे अयोग्य ठहराने तथा उसकी हत्या करनेकी चर्चा थी। ऐसा करनेके पश्चात् वह दरबारसे विदा हो गया।

वे पत्र शाहके दरबारियोंने नादिरको लिखे थे। उन पत्रोंमें उन लोगोंने शाहके प्रति षड्यन्त्र रचने एवं उसका वध करनेका उपाय लिखा था। शाह उन पत्रोंको पढ़कर बिल्कुलही घबरा उठा। सोचने लगा, कि इस समय क्या करना चाहिये? यदि इस समय वह उन पत्रोंके लेखकोंसे बदला लेता है, तो उसे फ़ौजके सारे अफ़सरों-का संहार करना पड़ेगा। ऐसी हालतमें सम्भव है, कि सारी फ़ौज बिगड़ उठे। तब उसे कहीं लेने-के-देने न पड़ जायें। इन सब बातोंका विचार कर, उसने किसी अन्य समुचित समयकी प्रतीक्षामें इस समय चुपचाप बैठनाही पसन्द किया। अतएव सारे पत्रोंको उसने आगमें जला दिया। नादिर अपने प्रेरित पत्रके विचार-फलको जाननेके लिये बाहर ठहरा हुआ था। शाहको उन पत्रोंपर कोई भी विचार न करते तथा उन्हें अग्निमें जलाते देख, नादिरकी क्रोधाग्नि और भी धधक उठी। वहाँसे वह फ़ौरन वापस आया और सारे दरबारियोंकी एक गुप्त सभा की। सबने परामर्श कर यह निश्चय किया, कि तुर्कोंसे सन्धि-कर शाह हमलोगोंका संहार करना चाहता है। पर 'काइयाँ' नादिर तो इस बातको पहलेही ताड़ गया था। उसकी ऐसी शंका उसी दिन दृढ़ हो गयी थी, जिस दिन उसने फ़ौजियोंको वेतन देनेके लिये अपने हाथों कर वसूल करनेकी इजाज़त शाहसे माँगी थी और शाहको लाचार होकर वह इजाज़त देनी पड़ी थी। नादिरने प्रस्ताव किया, कि "शाहको गद्दीसे हटाकर, उसकी जगहपर उसके लड़केको बैठाया जाये तथा तुर्कोंसे पूरा बदला लिया जाये।" सब सरदारोंने इसका सहर्ष समर्थन किया।

शाहको पद-च्युत करनेका दृढ़ निश्चय, नादिर और दरबारके अन्यान्य सरदारोंने, बात-की-बातमें कर लिया ; पर हतभाग्य शाहको इसका कोई भी समाचार नहीं मिला। ठीक है, जब भाग्य-सूर्य्यका अस्त होता है, तब ज्ञानेन्द्रियाँ तथा उनके अन्यान्य साधन भी मनुष्यका साथ छोड़ देते हैं। अस्तु ; उपर्युक्त निश्चयके अनुसार नादिरने एक दिन शहरके बाहर अपनी विराट् फ़ौजका निरीक्षण करनेके लिये शाहको निमन्त्रित किया। 'भोला-भाला' शाह भी किसी प्रकारकी सम्भावित विपत्तिको अपने हृदयमें स्थान न दे, नादिरकी फ़ौजका निरीक्षण करनेके लिये चला गया। नादिरकी सारी पल्टन सज-धजकर सैनिक ठाट-में मीलोंतक खड़ी थी। शाह उनका निरीक्षण करने लगा। एक स्थानपर जब वह फ़ौजके बीच होकर गुज़र रहा था, एक सिपाही-ने शाहको सलाम करके कहा,—"जो आज्ञा हो, हमलोग उसका पालन करें।" सिपाहीकी यह बात सुनकर सदा सावधान और सतर्क नादिर पहले कुछ घबरा गया।

उसके इस प्रकार घबरानेके दोही कारण हो सकते हैं। पहला यह, कि कहीं फ़ौज उससे बिगड़ न गयी हो और इसलिये उसकी जान लेनेको शाहकी आज्ञा माँगती हो। दूसरा कारण यह हो सकता है, कि कहींशाह इन जवानोंको इस समय उसकी जान ले लेनेकी आज्ञा न दे दे और इस प्रकार अपना पुराना बदला चुकाये। पर नादिर अपने इस मनोभावको किसीपर प्रकट होने न दे, उसने वहींपर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया। अपने उस भाषणमें उसने कहा,—"फ़ौजका फ़र्ज़ अपने सरदार-सिपहसा-

लारका हुक्म मानना है।" शाहने भी उसके इस कथनका समर्थन किया। सेना-निरीक्षणके बाद नादिर, शाहको भोजन करानेके लिये अपने ख़ेमेमें ले गया। वहाँ ले जाकर शाहसे उसने शराब पीनेकी प्रार्थना की। शराबख़ोरी ईरानियोंमें कोई नयी बात नहीं। इसलिये शराबके आदी शाहने शराब पीनेमें ज़रा भी आना-कानी नहीं की। थोड़ी सी शराब पीतेही शाह बेहोश हो गया। कहते हैं, नादिरने उसमें कोई ऐसी चीज़ मिला दी थी, जिससे पीने वाला फ़ौरन बेहोश हो जाये। शाहके बेहोश हो जानेपर नादिरने अपने सिपाहियोंको हुक्म दिया, कि शाहको 'हज़ार ज़रीब' बाग़में ले जाकर ठीक तौरसे रखो। शाहके कुछ आदमियोंने नादिरके इस हुक्मपर एतराज़ किया और कहा,—"बेहतर हो, अगर शाह यहींपर रहें। उनकी देख-भाल हम सब यहींपर कर लेंगे। पर नादिरने उन्हें ख़ेमेसे बाहर निकाल दिया और जो लोग अड़ गये, उन्हें क़ैद कर, शाहको भी क़ैद कर लिया। दूसरे दिन प्रातःकाल नादिरने, सब अफ़सरोंकी रायसे शाहको अपने नज़दीक क़ैद रखना उचित न समझा। इसलिये उसने शाहको माजन्दानमें भेज दिया। वहाँपर उसने चुने हुए छः हज़ार सुन्नी और अफ़ग़ान योद्धाओंको शाहकी रखवालीके लिये छोड़ दिया। उन पहरेदारोंमें एक भी ईरानी नहीं था। जान-बूझकर सारे ईरानियोंको वहाँसे हटा देनेमें नीतिज्ञ नादिरका यह अभिप्राय था, कि जाति-प्रेमके आवेशमें आकर कहीं वे शाहसे मिल न जायें।

शाहको माजन्दानमें क़ैद कर नादिरने शहरमें प्रवेश किया। वहाँ पहुँचतेही उसने इस बातकी आम तरहसे मुनादी करा

दी, कि आज तमाम दिन शहरका कोई भी आदमी, अपने घरसे किसी बहुत ज़रूरी कामके लिये भी, बाहर न निकले। किसकी ताक़त, जो अब नादिरके हुकमके ख़िलाफ़ काम करे? शहर भरमें शान्तिका साम्राज्य स्थापित हो गया। दोपहरको फिर उसने दूसरी मुनादी करा दी, कि अब सब लोग अपने-अपने काम-काजमें लग सकते हैं। उसका यह हुक्म भी माना गया। पर शहरके रहनेवाले लोग शाहके बन्दी होनेकी वजहसे बहुत दुःखित थे, कारण, उनकी धारणा थी, कि शाह मार दिये गये। लेकिन जब उनको अच्छी तरहसे मालूम हो गया, कि शाह अभी जीवित हैं, तब उनके हृदयमें कुछ आशाका संचार हुआ और उन लोगोंने समझा, कि कम-से-कम सेना तो नादिरका पक्ष छोड़कर शाहका ही साथ देगी।

दूसरे दिन प्रातःकाल कतिपय अफ़सरों और सरदारोंके साथ नादिरने शाहके महलमें प्रवेश किया। शाहके पुत्रको, जो उस समय पलनेपर पड़ा हुआ झूल रहा था, वह बाहर लाया। सबकी राय हुई, कि शाहका उत्तराधिकारी उसका यही पुत्र गद्दीपर बैठाया जाये। सुतरां, नादिरने उस बालकको गद्दीपर बैठाकर, अपने हाथोंसे उसे राज-मुकुट पहनाया। लोगोंने उस बालकको द्वितीय शाह अब्बासके नामसे प्रशस्त किया सर्वप्रथम स्वयं नादिरने बालक शाहके प्रति राजभक्ति रखने एवं उसकी आज्ञाओंका पालन करनेके लिये कुरान शरीफ़की शपथ खायी। पीछेसे सब सरदार-अफ़सर अमीर-उमरा और मुसाहब सब उसके अनुवर्त्ती हुए।

इस प्रहसन और प्रदर्शिनीके पश्चात् नादिर, शाहके राज्य-सम्बन्धी कार्य्योंको सम्हालनेकी फ़िक्रमें लगा। उसने पहले सिरिश्ता (दफ़्तर) वग़ैरहका इन्तज़ाम ठीक किया। इसके बाद उसने राज-कर्म्मचारियोंकी ओर अपना ध्यान बँटाया। जिन कर्म्मचारियोंके प्रति उसके हृदयमें शंका थी, अथवा जिनपर वह शक़ करता था, कि वे हमारा साथ नहीं देंगे, उन सबको उसने राज-काजसे ख़ारिज कर दिया और उनकी जगहपर उसने उन लोगोंको बहाल किया, जिनपर उसकी धारणा अच्छी थी अथवा जिन्हें वह अपना सच्चा सहायक समझता था। उसकी यह नीति कुछ नयी नहीं थी। जब कभी उसने अधिकार प्राप्त किया, तभी उसने कर्म्मचारियोंका चुनाव अपने मनके मुताबिक किया। पाठकोंको ख़याल होगा, कि जब वह सिपहसालार बनाया गया था, तब उसने केवल उन्हीं सैनिकोंको रखा था, जिनपर उसका पूरा विश्वास था तथा जिनपर वह शक़ करता था, उनको उसने हटा दिया था। यह सारा प्रबन्ध करनेके पश्चात् तुर्कोंपर आक्रमणकर उसने उनसे पुराना बदला लेनेका अपना संकल्प पूरा करना शुरू किया।

अस्सी हज़ार सैनिकोंकी एक महती सेना लेकर नादिर बाग़दादकी ओर बढ़ा। बाग़दादसे थोड़ी दूरपर अहमद पाशाने उसका मुक़ाबिला किया। दोनोंमें युद्ध हुआ। अहमद पाशा पराजित हुआ। नादिर उस स्थानको कई दिनोंतक घेरे रहा। इसी बीचमें तुबाल पाशा, शीराज़के अमर पाशा तथा अन्यान्य कई सरदार एक बड़ी भारी फ़ौज लेकर नादिरसे लड़नेके

लिये उसी जगहपर पहुँच गये। तुर्कों की सैनिक संख्या लगभग १ लाख २० हज़ार थी। दोनोंके बीच घोर-घमासान युद्ध होही रहा था, कि नादिरके घोड़ेको गोली लग गयी। घोड़ा ज़मीनपर गिर गया और मर गया। पर नादिर पैदलही वीरतापूर्वक लड़ता रहा। उसके घोड़ेको न देखकर भण्डेवालेने हल्लाकर दिया, कि "नादिर मारा गया"। इस समाचारको सुनकर उसकी पल्टन पीछे हटी और भाग चली। नादिर उन्हें संग्रह करने और भिड़नेके लिये लाख प्रयत्न करता रह गया; पर सब बेकार हुआ। उखड़े हुए पाँव फिर जम न सके। इस युद्धमें दोनों तरफ़के ६० हज़ार आदमी काम आये! नादिरको भी इस बार बड़ी क्षति उठानी पड़ी। उसका सारा माल, कोष, तोप तथा युद्धकी अन्यान्य सामग्रियाँ तुर्कोंके हाथ लगीं।

बाग़दादके गवर्नर तुबाल पाशासे पराजित होकर नादिर अपनी फ़ौजके साथ हमदन वापस आया। इस प्रबल पराजयके पश्चात् बड़े-बड़े पराक्रमी, शूर-वीर योद्धाओंका भी कलेजा पानी हो जा सकता था; पर नादिर तनिक भी उत्साहहीन नहीं हुआ। हमदनमेंही ठहर कर वह बाग़दादपर फिर आक्रमण करनेका प्रबन्ध करने लगा। पर बेचारेके पास न धन था और न यथेष्ट अस्त्र-शस्त्रही। निदान, उसने महम्मदखाँको, दिल्लीपति महम्मद शाहकी सेवामें दूतकी हैसियतसे भेजा। महम्मद खाँके हाथोंसे उसने जो पत्र भेजा था, उसका भाव इस प्रकार था,—"समयके प्रभावसे, दुर्दैववश, बाग़दादका सुबेदार तुबाल पाशाने हमारी फ़ौजको परास्तकर दिया है। जितना माल-असबाब, अस्त्र शस्त्र और ख़ज़ाना हमारे पास था,

सबको उन लोगोंने लूट लिया। दस हज़ारसे अधिक हमारे योद्धा भी मारे गये। इसलिये आशा है, कि आप कृपा करके एक करोड़ रुपये नकद और बारह हज़ार घुड़सवार पल्टन हमारी सहायताके लिये अवश्य भेज देंगे। आपको अच्छी तरहसे मालूम है, कि ईरान और हिंदुस्तान, इन दो देशोंके बादशाहोंके बीच घनिष्ठ मैत्री बहुत दिनोंसे चली आती है। आपको स्मरण होगा, कि जिस समय दिल्ली-नरेश हुमायूँको शेरशाह अफ़ग़ानीने पराजित किया था, उस समय हुमायूँ इस्पहानमें पधारे थे और ईरानके शाह-तहमास्पने दो करोड़ रुपये, कितनीही तोपें और बीस हज़ार घुड़सवार पल्टनसे उनकी सहायता की थी, जिसके बलसे हुमायूँ भारतपर फिर भी अधिकार प्राप्त कर सके थे। स्वर्गीय हुमायूँ ईरानके शाहकी इस कृपाके लिये ईरानके प्रति सदा अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते थे। अपनी मृत्युके कुछ दिन पहले ५० लाख रुपये उन्होंने ईरानको दिये थे। मुगल-सम्राट् अकबर शाहने भी ५० लाख रुपये दिये थे। इस प्रकार दो करोड़ रुपयेमें एक करोड़ तो वसूल हो चुका है, अब एक करोड़ और बाक़ी है। इसलिये हुज़ूरसे अर्ज़ है, कि उस एक करोड़ रुपयेको हुज़ूर वसूलकर दें अथवा ईरान सरकारके खातेमें बाक़ी लिख लें। इस प्रकार ईरानको इस कठिन काल-में सहायता देकर पारस्परिक और ऐक्य प्रेमकी वृद्धि करें।"

परन्तु इस पत्रका फल कुछ भी नहीं हुआ। निदान नादिर सोचने लगा,—"अब क्या करना चाहिये? रुपये तो मिल सकते हैं; पर कहांसे और कैसे?—केवल यही एक प्रश्न है।

अबतक सब जगह, सब कालमें, मैं विजय-माल्य ग्रहण करता आया हूँ। इस समय पराजयकी कलङ्क-कालिमासे अपनी कीर्तिको पोत देना कदापि उचित नहीं।" इस समय नादिरके मनोभावको अनुभवी पाठक भली भाँति समझ सकते हैं। शूर वीर, परिश्रमी, साहसी एवं रण-कुशल होते हुए भी शत्रुको लाख बार मैदान दिखानेवाला नादिर पैसेके प्रश्नसे पैमाल हो रहा है! किसीने ठीकही कहा है:—

"हिक़मत हक़ीमकी भी भुलाती है मुफ़लिसी।"

अनेकानेक विचार करनेके बाद, नादिरको यह बात याद आयी, कि मशहदमें ईमाम मूसा अली इस्लामकी दरगाहमें (समाधिस्थल) अपार द्रव्य रक्षित है। नादिर वहाँसे एक करोड़ रुपया लाया। उसके ज़रिये उसने युद्धके सारे सामान ख़रीदे और संग्रह किये और जहाँतक जल्द हो सका, नादिरने फिर भी तुर्कों पर धावा बोल दिया। उधर तुर्कलोग यह विचारकर, कि ऐसे प्रबल पराजयके पश्चात् किसकी हिम्मत है, जो इस विराट् तुर्क सेनाका सामना कर सके, छोटे-छोटे दलोंमें विभक्त होकर मौजके साथ बग़दाद वापस जा रहे थे। इधर नादिरने अपनी सारी सेनाओंका संग्रह कर बड़े ज़ोरदार अल्फ़ाज़ोंमें उनसे कहा,—"वीरवीरो! आपलोगोंकी अजित सेनाने अनेक बार अनेकानेक शत्रुओंको पराजित किया है। लेकिन किसी दैवी कारणवश आप लोग इस बार पराजित होगये हैं। पर आप इसके लिये तनिक भी परवाह न करें। संसारका दस्तूर है, कि जहाँपर दो आदमी लड़ते हैं, वहाँपर एक जीतता है और दूसरा हारता है। इसलिये

निराश होकर बैठ रहना हम लोगोंके लिये कदापि उचित नहीं,—बल्कि हमें दूने उत्साहके साथ तुर्कोंका फिर सामना करनेके लिये आगे बढ़ना चाहिये। आपको मालूम होना चाहिये, कि तुर्क-सेना विजयके आनन्दमें इस समय बिल्कुल लापरवाह होरही है। उसका संगठन भी ढीला हो रहा है और सब सैनिक छोटे-छोटे दलोंमें विभक्त हो, घरकी ओर लौट रहे हैं। ऐसी अवस्थामें हम लोगोंको आगे बढ़कर उनका मुक़ाबिला करना चाहिये। देशके लिये मरना और मारना चाहिये, पराजित होकर अपने घरपर लौटकर अपने देश-वासियोंसे किसी प्रकारकी दयाकी आशा हम न करें।"

इस प्रकार नादिर अपनी सेनाको प्रोत्साहितकर, उसको अपने साथ ले, आगे बढ़ा। तुबालपाशा ६० हज़ार जवानोंको लेकर नादिरका मुक़ाबिला करनेके लिये आगे बढ़ा। दोनों दलोंमें तुमुल युद्ध हुआ। बेचारा तुबालपाशा गोलियोंका शिकार बना और उसकी सेना पराजित हो, रण-स्थलसे भाग गयी। इस समय तुर्कों की ऐसी हार हुई, कि उन्होंने नादिर-के विरुद्ध अब कभी सिर उठानेका साहस नहीं किया। फिर क्या था? नादिरको मैदान साफ़ मिला। वह क्रमशः उन सभी जगहोंको, जिनपर तुर्कों ने ईरानियोंसे छीनकर अपना अधिकार जमा रखा था, नादिरने अपने अधिकारमें कर लिया। नादिरकी इस सफलतापर ईरानी लोग बहुतही आनन्दित हुए। नादिरकी सहायतामें चारों तरफसे फ़ौजें आने लगीं। पर नादिर बग़दादके पास पहुंचनेवालाही था, कि इतनेमें उसने सुना, कि शीराज़-का महमूद नामक उसका एक जेनरल बिगड़ उठा है। तथा

शीराज़पर अपना अधिकारकर, वहाँकी गद्दीपर शाह तहमाशके नामसे बैठ गया है।

नादिर बग़दादके पाससे महमूदका सामना करनेके लिये रवानः हुआ। महमूद, यह विचारकर, कि नादिरका कोई छोटा दल मुझसे मुक़ाबिला करनेके लिये आगे बढ़ता होगा, तीस हज़ार जवानोंके साथ आगे बढ़ा। केवल बीस हज़ार आदमियों-के साथ नादिरको आते देखकर, महमूद बहुतही प्रसन्न हुआ तथा अनुमान करने लगा, कि "अब तो मैदान मेरा है।" नादिर उन्हीं सैनिकों द्वारा एक अच्छे व्यूहकी रचनाकर महमूदसे मुक़ा-बिला करने लगा। पीछेसे नादिरकी बाक़ी फ़ौज भी उससे आ मिली। दोनोंमें ख़ूब लड़ाई हुई। महमूदकी फ़ौजमें नादिरके नाम और पराक्रमका बहुत कुछ आतंक पहलेसेही घुसा हुआ था। महमूदने अपना घोड़ा नादिरकी ओर उसकी फ़ौजको बीचोबीचसे चीरता हुआ इस विचारसे बढ़ाया, कि सबसे पहले इसीके प्राणोंका अन्त कर देना अच्छा है। पर बेचारेका यह वार नादिरकी अजित सेनाके सामने व्यर्थ हुआ। अपने सारे प्रयत्नोंको व्यर्थ होते देख, महमूद बलूचीने, एक अरबी घोड़ेपर, अपनी जान बचानेके लिये, परशियन खाड़ीको पारकर भागना चाहा; पर ज्योंही वह एक नावपर जाकर बैठा, त्योंही एक मल्लाहने उसे पकड़ लिया और नादिरके पास कुछ इनाम पानेके विचारसे लाया। नादिरने उसके कोष, धन तथा युद्ध-सामग्रियोंका पता लगानेके लिये उसे एक कोठरीमें बन्द कर रखा। नादिरको यह बात मालूम थी,

[illegible] प्राण [illegible] मात्र है। पर महमूद इस बेइज्जतीको [illegible] बर्दाश्त कर सकता था? उस अँधेरी कोठरीमें, [illegible], महमूदने इस शरीर और संसारसे छुट्टी पायी! नादिरके दिलकी बात दिलमेंही रह गयी! इस प्रकार महमूदकी मृत्युमें [illegible] जबर्दस्त घुड़सवार और एक महा-[illegible] योद्धाका अन्त होगया!

महमूदकी मृत्युके बाद नादिर शीराज़में कुछ दिनोंतक ठहर गया। वहाँपर ठहरकर उसने वहाँके बलवाइयों और महमूदके साथियोंका कत्लेआम करनेका हुक्म दिया। उसके बाद वह अपनी राजधानी इस्पहानमें वापस चला आया। वहाँके काम-काज, जो उसकी अनुपस्थितिमें कुछ ढीले पड़ गये थे, उनको उसने ठीक किया। वहाँसे वह जार्जियाकी ओर बढ़ा। जार्जियापर अपना अधिकारकर उसने तैफलिसपर भी अपना दखल जमाया। वहाँसे वह आरमेनियाकी राजधानी इरवानमें पहुँचा। उसे भी उसने अपने अधिकारमें किया। इसके बाद उसने शमाखी और गुञ्जानपर अपना दखल जमाया। यहाँसे छुट्टी पाकर रूसियोंके पास उसने लिखा, कि "तुमलोग जितना शीघ्र हो सके, गीलानको खाली कर दो; अन्यथा मुझे तुम्हारा सामना करना पड़ेगा।" उसके ऐसा लिखनेका कारण यह था, कि गीलानमें रेशम अधिक उपजनेके कारण वह स्थान बहुतही धन-सम्पन्न था। रूसवालोंने नादिर जैसे शक्ति-सम्पन्न वीरसे लड़ना उचित न समझा। फलतः उन्होंने गीलान खाली कर दिया। इतनाही नहीं,—वरन् नादिरके भयसे,

कास्पियन समुद्रके इधर दरबन्द और पाशु नामक दो स्थानोंके सिवा बाक़ी सब जगहोंको रूसवालोंने छोड़ दिया। इसके बाद नादिर और तुर्कोंके बीच सन्धि हुई। इस सन्धि-पत्रके अनुसार शाहके जीते हुए सभी प्रदेशोंसे तुर्कोंने अपना अधिकार हटा लिया। इस प्रकार नादिरने एक-एक करके परशियाके सभी शत्रुओंसे पूरा पूरा बदला ले लिया और ईरानियोंके, जिन-जिन स्थानोंपर उन्होंने अपना अधिकार जमा रखा था, उन्हें फिर भी अपने अधिकारमें कर लिया।

नादिर ईरानकी गद्दीपर बैठ गया।

इसके बाद ज्योंही नादिर तुर्क और रूसियोंसे सन्धि करके निश्चिन्त हुआ, त्योंही उसने ईरान देशके भीतर रहनेवाले सभी शासक, राज कर्म्मचारी, सरदार और अन्यान्य प्रतिष्ठित पुरुषोंके नामसे एक आज्ञा-पत्र निकाला, जिसमें उसने उन सबको सलीमग्रामपर एक निश्चित दिनको एकत्र होनेका आदेश किया। इस आज्ञाके अनुसार लग-भग छः हजार शासक, सरदार, ज़मींदार तथा अन्यान्य अधिकारी उस स्थानपर एकत्र हुए। नादिरका डेरा-डंडा वहाँ पहलेसेही गिरा हुआ था और नादिर भी वहाँपर डेढ़ लाख जवानोंके साथ एक दिन पहलेसे मौजूद था। जब सब आगन्तुक सरदार एक स्थानपर एकत्र होगये, तब नादिर उन डेढ़ लाख सैनिकोंको चारों तरफ़ खड़ा करके, अपने ख़ेमेसे बाहर निकला और अपने स्वाभाविक ओजस्वी भावसे इस प्रकार भाषण किया :—

"मेरी आज्ञाके अनुवर्त्ती उपस्थित सज्जनो!

आपलोगोंको भलीभाँति विदित है, कि अपनी मातृभूमि ईरान देशके सब शत्रुओं, तुर्क, रूसी, अफ़ग़ान तथा अन्यान्य प्रायः सभी जातियोंको परास्तकर, हमलोगोंने उन्हें अपने अधीन कर

लिया है। अब अगर हमलोगोंके आक्रमणसे कोई शत्रु बचा हुआ है, तो वह कन्धार देशके अफ़ग़ान हैं। यदि ईश्वरकी कृपा हुई, तो बहुत शीघ्रही हमलोग उन्हें भी पराजितकर, अपने अधीन करेंगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। इन सब शत्रुओंको शान्तकर, मेरी यह प्रबल इच्छा है, कि मैं अपना शेष जीवन सुख, शान्ति एवं आनन्दमें व्यतीत करूँ तथा मेरे देश और मेरी जातिको किसी कारण विशेषसे, मेरी सेवाकी जबतक ज़रूरत न पड़े, तबतक किसी भी काममें मैं अपना हाथ न लगाऊँ। तुर्क और रूसियोंसे तो सन्धि होही चुकी। तातारी एवं सीमा-प्रान्तके निवासी शत्रुओंको हमलोगोंने इस प्रकारसे पद-दलित कर रखा है, कि वे अब आनेवाले कई वर्षों तक अपना सिर ऊँचा नहीं कर सकते। अस्तु; स्वजातीय बन्धुओ! ईरानके सज्जन, सरदार और कुशल कर्म्मचारियो! अब आपका धर्म्म है, कि आप अपने बीचसे कोई ऐसे सुयोग्य शासकको निर्वाचित करें, जो आपके राज-काजका सम्पादन सफलतापूर्वक कर सके। यदि आप लोग चाहें, तो अपने पद-भ्रष्ट शाह-तहमाशको अथवा अन्यान्य निपुण सरदारोंमें से भी किसी एक ऐसे सज्जनको शाह-पदके लिये आप चुन सकते हैं, जो आपके सुख, शान्ति और अन्यान्य हितोंका सब प्रकारसे रक्षक हो। इसलिये आपसे मेरा अनुरोध है, कि आप आगामी तीन दिनोंके बीचमें इस विषयपर विचारकर, अपने सब साथियोंकी सम्मति ले, मुझे सूचित करें।"

इतना भाषण करनेके पश्चात् वह अपने ख़ीमेमें चला गया। सभा विसर्जित होगयी। उपस्थित सब सरदार अपने-अपने

मोदोंमें चले गये। नादिरने अपने कर्म्मचारियोंको हुक्म दिया, कि जितने सरदार और शासक यहाँपर ठहरे हुए हैं, उन सबके भोजन-वस्त्र आदिका प्रबन्ध राज कोषसे किया जाये। कहीं मान प्रचुर वन-रक्ष आदिसे भोजन इत्यादिका प्रबन्ध खूब अच्छे ढङ्गसे किया गया। लगातार तीन दिनोंतक आमोद-प्रमोद, नाच-रङ्ग, खेल-तमाशे, भोजन-पान आदि एक सीमातक पहुँच गये। इसी बीचमें नादिरके गुप्तचर सरदारोंके पास पहुँच-पहुँचकर पोशीदः तौरपर यह प्रयत्न करते थे, कि जिसमें नादिर ईरानका शाहनशाह बनाया जाये। वे कहते थे, कि 'यद्यपि नादिरशाह इस पदको स्वीकार नहीं करेंगे, तथापि हमलोगोंके विशेष प्रयत्न और प्रार्थनासे सम्भव है, हमलोग अपने इस उद्देश्यमें सफल हो जायें। कारण, नादिर-शाह जैसे सुयोग्य शासन-कर्त्ताके वर्तमान रहते हुए,दूसरेको शाह बनाना हमलोगोंके लिये सर्वथा अनुचित है। जिस समय नादिर-शाह द्वारा किये गये ईरानके अनेकानेक उपकारोंकी ओर हम लोग ध्यान देते हैं, उस समय मालूम होता है, कि नादिरशाहके उपकारसे हमलोगोका रोम-रोम कृतज्ञ है। तुर्क, रूसी आदि अनेकानेक शत्रुओंसे ईरानको बचानेवाला यही नादिरशाह है। पग-पगपर ईरानियोंको अपमानसे बचानेवाला क्या नादिरशाहही नहीं है? अनेक शत्रुओंको पद-दलितकर, ईरानके नष्ट स्थानोंपर पुनराधिकार प्राप्तकर, ईरानियोंके मस्तकको ऊँचा करनेवाला, उन्हें आत्म-गौरव एवं अभिमानके पदपर पहुँचानेवाला क्या नादिरशाह नहीं है? यदि हाँ, तो क्या हमलोगोंका यह धर्म्म नहीं

होना चाहिये, कि अन्य किसी शासकको, ईरानका शाह न बनाकर, यह गौरव और मानका पद, सुयोग्य, वीरवर, ईरानका उद्धार-कर्त्ता नादिरशाहको समर्पण करें ?'

चौथे दिन दरबारमें सरदार तथा अन्य लोगोंकी भीड़ लग गयी। नादिर अपने ख़ीमेसे बाहर आया। बड़ी उत्सुकता पूर्व्वक उसने पूछा, कि 'उपस्थित सज्जनोंने किसको शाह-पदके लिये पसन्द किया ?' कोई भयके कारण, कोई नादिरके रोबके कारण, कोई उसकी शूरतापर मुग्ध हो तथा कोई अपने किसी और स्वार्थके कारण, अभिप्राय यह, कि सबने एक स्वरसे यही कहा, कि "हुजूरके रहते हुए ईरानकी गद्दीपर बैठनेका अधिकारी दूसरा कौन हो सकता है ?" निदान सबने नादिरशाहसे प्रार्थना की, कि वही ईरानके शाह-पदको स्वीकार करे। इसपर नादिरने उत्तर स्वरूपमें निम्न-लिखित बातें कहीं:—

"भाइयो ! यद्यपि मेरी यह इच्छा नहीं है, कि मैं ईरानकी गद्दीपर बैठूं, तथापि यह जानकर कि आप भाइयोंकी आज्ञा, ईश्वरकीही आज्ञा है, मैं इस पदको स्वीकार करता हूं तथा विश्वास दिलाता हूं,कि अपने अनवरत परिश्रम तथा उद्योग द्वारा, साथ-साथ आप भाइयोंकी सहायतासे भी, ईरान-राज्यको संसारके अन्यान्य राज्योंमें सबसे अग्रसर करनेका सदा प्रयत्न करूंगा। पर मेरी तीन शर्तें हैं। उन्हें यदि आप स्वीकार करेंगे, तो मैं ईरानकी गद्दीपर बैठूंगा। शर्तें ये हैं:—

"(१) ईरानकी समग्र भूमिपर मेरा तथा मेरे मरनेके बाद

मेरी उत्तराधिकारिणी सन्तत्तियोंका अधिकार रहे। पद-भ्रष्ट शाह तथा उसकी सन्तानका इसपर कोई भी अधिकार नहीं।

"(२) यदि पद-भ्रष्ट शाह अथवा उसकी कोई भी सन्तति इस राज्यपर अपना अधिकार करना चाहे, तो ईरानका एक भी आदमी उसका साथ न दे,—वरन् उसकी इस हरक़तके लिये उसकी सारी सम्पत्ति राज-कोषमें ज़ब्तकर ली जाये; और

"(३) तुर्क, ईरानी, तातारी और हिन्दुस्थानी मुसलमानोंके बीच सुन्नी * और शियाका † जो झगड़ा सदा उठता रहता है और जिससे मुसलमान समाजकी अनेकानेक हानि हो रही है, उसका निपटारा सदाके लिये हो जाना चाहिये।

"मेरी तो राय है, कि उपर्युक्त दोनों समाजोंकेअग्रगण्य सज्जनों एवं मौलवियोंकी एक विराट् सभा की जाये और उस सभाके तर्क-वितर्क और वाद-विवादके पश्चात् बहुमतसे जो एक

---

* सुन्नी, मुसलमानोंका वह फ़िर्क़ा है, जो अबू बकर, उमर, उसमान और अलीके उत्तराधिकारको न्यायानुमोदित समझता है। तथा अब्दुल हनीफ़, मलिक शफी और हनबलके बताये मुताबिक क़ुरान और महम्मदीकी बातों-को मानता और उनके अनुसार चलता है।

† शिया, मुसलमानोंका वह फ़िर्क़ा है, जो उपर्युक्त चार आचार्योंके उत्तराधिकारको न्यायानुमोदित नहीं समझता। उनकी धारणा है, कि हज़रत महम्मदके बाद, उनकी इच्छाके अनुकूल, मुरतज़ा अली उनके उत्तराधिकारी बने थे। अब्दुल हनीफ आदि टीकाकारोंकी बातको न मानकर वे अपने इमामोंकी बातों और आज्ञाओंकाही केवल पालन करते हैं। उदाहरणार्थ शिया सम्प्रदायवाले ताज़ियाको नहीं मानते, पर सुन्नी मुसलमान इसे मानते और इसके लिये मातम मनाते हैं।

पन्थ निर्धारित किया जाये, सारा मुसलमान-समाज वेर-विरोध-को छोड़, उसी पन्थका अनुसरण करे।"

इसपर एक उमरावने खड़ा होकर, बहुत प्रार्थना पूर्व्वक कहा,—"ग़रीबपरवर! आपकी पहली और दूसरी बात तो हमलोगोंको सदा मञ्ज़ूर है। पर तीसरी बात धर्म्मसम्बन्धी विषयपर कुछ कहनेकी शक्ति हमलोगोंमें नहीं है। इस विषयके निर्णय करनेका भार तो मौलवी और मुल्लोंपर ही है। इस सम्बन्धमें उनकाही निर्णय हमलोगोंको मान्य है। साथ-ही-साथ धर्म्मका यथार्थ मार्ग बतलानेके लिये क़लामे इलाही और हज़रत महम्मद रसूलिल्लाहका हदीस हमलोगोंके सामने मौजूद है। अतएव हमलोगोंके तर्क-वितर्क और वाद-विवाद द्वारा किसी धर्म्म-सम्बन्धी विषयका निर्णय करना कदापि उचित नहीं। शासकका यह धर्म्म है, कि धर्म्म-सम्बन्धी किसी नवीन मार्गका आयोजन न कर,ईश्वरके वचन और उनकी आज्ञा-ओंका पालन करे। मेरी यह सविनय प्रार्थना है, कि यदि आप इस मानव-राज्यमें धर्म्म-सम्बन्धी विषयोंका निपटारा न करें, तभी कल्याण है। कारण, यह देखनेमें आया है, कि जिन-जिन शासकोंने इस विषयकी ओर अपने हाथ बढ़ाये हैं, उन्हें भयङ्कर परिणाम भोगना पड़ा है।"

उमरावके इस एतराज़पर नादिर बड़ाही क्रुद्ध हुआ। उसने मन-ही-मन विचार किया, कि यदि इस समय, मैं इस एतराज़को सुनकर चुपचाप बैठ जाता हूं, तो इसका परिणाम भविष्यमें बहुत बुरा होगा। मेरा सारा रोब और दबदबा

जाता रहेगा और साथ-ही-साथ मेरा मतलब भी मिट्टीमें मिल जायेगा। यह विचारकर, नादिरने तत्क्षणही यह हुक्म दे दिया, कि "इसका सिर काट डालो, जिसमें दूसरा कोई ऐसी-ऐसी दुष्टताभरी बातें न करने पाये।" निदान क्रूर, धूर्त्त और स्वार्थी नादिरकी आज्ञासे उस बेचारे उमरावका सिर काट डाला गया।

उमरावका शिरश्छेद होनेके पश्चात्, किसका साहस, जो नादिरकी आज्ञाओंके विरुद्ध चूँ तक कर सके? नादिरने फिर कहा,—"भाइयो! यदि मेरी आज्ञा आप सबको स्वीकार, हो, तो कहे, और जिन्हें अस्वीकार हो, वे कृपाकर अपने विरोधका कारण दिखलायें।" पर इस बार फिर किसके दो सिर हुए थे, जो उस बलामें गला डालता। निदान सबने नादिरकी 'हाँ'में'हाँ' मिला, उसकी आज्ञाओंको शिरोधार्य्य किया। इसपर नादिर बड़ाही प्रसन्न हुआ। लूटके जितने धन और जवाहरात उसके पास थे, उनका अधिकांश उसने अपने सैनिकोंमें बाँट दिया। अमीर-उमराव और राज-कर्म्मचारियोंको भी उसने विपुल धन-सम्पत्ति और मान-दान दिया। नादिरकी इस उदारतापर, अप्रसन्न व्यक्ति भी उससे प्रसन्न हो गया। केवल एक ही परिवार था, जो उससे असन्तुष्ट था और वह था—इजतहार वंश। कारण, एक तो उनके धर्माधिकारीकी हत्या नादिरने करा डाली थी और दूसरे, उनके धर्म्ममें महान् परिवर्तन करनेकी तदबीर भी सोची जा रही थी। यह सब करने-करानेके बाद नादिर दूसरे दिन पारसनगरमें बड़ी धूम-धामसे गया। बड़ी

सज-धजके साथ उसे राज्य-सिंहासन प्रदान करनेकी तैयारी की गयी। निदान वह सन् १७३६ ई०के मार्च महीनेमें नादिरशाहके नामसे घोषित हो, ईरानकी गद्दीपर बैठ गया। उमरावोंने उसे ताज पहनाया। इस प्रकार एक दरिद्र गरेड़ियेका बालक, नादिर कुली खाँ, अपने अतुल साहस, विपुल पराक्रम, दुर्बोध्य धूर्त्तता तथा विकट कपट द्वारा शनैःशनैः उन्नति करता हुआ, शाहसलामत नादिरशाहके नामसे भुवनमें प्रशस्त हो, सारे ईरानका बादशाह बन बैठा।

ईरानकी गद्दीपर बैठतेही नादिरने देखा, कि राज्यके बहुतेरे रुपये इधर-उधरके काममें लगाये जा रहे हैं। बहुतेरे मौलवी और मुल्ला जो शिया सम्प्रदायके हैं, मुफ्तका माल उड़ा रहे हैं। एक दिन नादिरने उन मौलवी और मुल्लोंको बुलाकर पूछा,—"मस्जिद आदिके नामपर राज्यके जो इतने रुपये खर्च किये जाते हैं, उनका प्रबन्ध किस प्रकारसे हो ?" इसपर उन्होंने उत्तर दिया,—"ग़रीबपरवर! ये रुपये ख़ैरातके लिये निकाले हुए हैं। ये रुपये सिर्फ नयी मस्जिदोंके बनानेमें, पुरानी मस्जिदोंकी मरम्मत करनेमें, मौलवी और उलमाओंको इनाम वग़ैरह देनेमें, तथा ग़रीब और फ़क़ीरोंको मदद देनेमें ख़र्च किया जाये। इसकी वजह यह है, कि येही बेचारे मौलवी और उल्मा इन मस्जिदोंमें जाकर सुबह और शाम खुदाकी इबादत करते थे। जिसकी वजहसे ईरानकी हालत आज ऐसी तरक़्क़ीपर है और वे आज भी दुआ करते हैं, जिससे ईरान आगे और तरक़्क़ी करता जाये।" उल्माओंकी यह बात सुनकर नादिरने जोशमें आकर यह उत्तर दिया,—"क्या

ये आलिम और उलमा पहले नहीं थे ? क्या वे इन मस्जिदोंमें पहले दुआ नहीं किया करते थे ? यदि हाँ, तो शाह-तहमाश्पके वक़्तमें या उनके पहले ईरानकी ऐसी रद्दी और बुरी हालत क्यों थी ? क्यों उस वक़्त ख़ुदावन्दने उनकी दुआका कुछ भी ख़याल नहीं किया ? कुछ नहीं, यह सब आप लोगोंके चोचले हैं। दुआ वग़ैरहसे कुछ नहीं हुआ है। सच्ची इबादत तो इन सिपाहियोंकी तलवार, तोप और बंदूक़ वग़ैरहमें है। इन्हींकी मददसे ईरानका माथा आज ऊँचा हो रहा है और जबतक यह ताक़त मौजूद रहेगी,तबतक ईरानका सर भी ऊँचा रहेगा। जहाँ ये हाथसे गये, समझ रखिये, उसी वक़्तसे ईरानके बुरे दिन आ जायेंगे। आज इसका भार मेरे ऊपर है; पहले नहीं था। इसलिये ये रुपये इनकीही ख़ातिर-बातमें लगाये जायें।" ऐसा कहकर उसने उन सब रुपयोंको अपने सैनिकोंमें बाँट देनेका हुक्म दे दिया।

धर्म-कार्यके नामसे अलग निकाले हुए वार्षिक आयके रुपयों-की तायदाद दस लाख तुमान अर्थात् ४ करोड़ ५० लाख रुपयोंके लगभग थी। अब शिया लोग बहुत क्रुद्ध और क्षुब्ध हुए। अपने प्रपञ्च और षड्यन्त्र द्वारा उन्होंने नादिरकी फ़ौजको उभाड़ना चाहा, पर वे तो सुन्नी थे,उन शिया सम्प्रदायवालोंकी बात वे कब मानने वाले थे—ख़ासकर वैसे समयमें जब नादिरके दिये हुए मालसे वे मालामाल हो रहे थे ? फलतः फ़ौजके प्रति शिया सम्प्रदायका प्रयत्न विफल हुआ। तब वे जन-साधारण प्रजाकी ओर झुके; पर वे इसमें भी सफल नहीं हो सके। कारण, एक तो आम तौरसे, अपनी राज-घोषणामें नादिरने सुन्नीमतका प्रतिपादन कर रखा था,

जिसके भयके मारे उसकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई चूँ तक नहीं कर सकता था और दूसरे, राज्यमें सभी नौकरियाँ वह केवल सुन्नियोंकोही देता था। इस लोभसे भी लोग सुन्नी मज़हबमें ही दाख़िल होते थे। इस प्रकार राज्यकी सारी सुविधाओंको सुन्नी सम्प्रदायवालोंके पक्षमेंही देखकर ईरानकी लगभग सारी प्रजा इसी मतको पक्षपातिनी बन गयी; केवल गिने-गुथे शिया ईरानमें रह गये, जिनकी हस्ती वहाँ दालमें नमकके बराबर भी नही रही। अतएव अब ईरान राज्यमें चारों तरफ़, सुन्नियों-काही बोलबाला होगया।

कन्धार-विजय।

सन् १७३६ ई० के नवम्बर महीनेमें नादिरशाह सलीमगाममें ईरानका बादशाह चुना गया। वहांसे वह कज़वीन वापस आया। यह वह स्थान है, जहाँपर ईरानकी गद्दीपर बैठते समय, वहाँके सभी बादशाहोंका राज्याभिषेकोत्सव मनाया जाता है। वहाँ पहुँचकर नादिरशाहने राज-दण्ड ग्रहण किया—शाही ताजसे अपने मस्तकको सुशोभित किया। वहींपर उसने यह शपथ भी ली, कि "हज़रत पैग़म्बर महम्मदके कथनानुकूल, ईश्वरी नियमोंके अनुसार, मैं ईरानका राज-काज चलाऊँगा तथा अपनी प्रजाकी रक्षा दत्त-चित होकर करूँगा।" इसके बाद वहांसे लौटकर वह इस्पहान आया। यहाँपर कुछ दिनोंतक उसने विश्राम किया। इसी बीचमें उसने अपना राज-काज भी सम्हाला। रूमके सम्राट् और भारतवर्षके शाहनशाह आदिकी ओरसे बधाईके पत्र भी इसी बीचमें नादिरके पास पहुँचे। अपने बधाई-पत्रके साथ-ही-साथ उन लोगोंने नादिरशाहको ईरानका शाह होना भी स्वीकार किया। यह सब होते हुए भी युद्ध-व्यसनी नादिरशाहके हृदयसे युद्ध-भाव नहीं गया! जाये कैसे? उसकी तो सारी उमर युद्धकेही झंझट-झमेलोंमें कटी थी।

ईरानमें कुछ दिनोंतक ठहरकर उसने वहाँके राज्य-सम्बन्धी सभी कार्यों का नियन्त्रण और प्रबन्ध समुचित रूपसे कर दिया। पश्चात् कन्धारकी ओर उसने अपनी आँखें दौड़ायीं। कन्धारकी विजयका 'प्रोग्राम' तो उसके कार्यक्रमकी सूचीमें कितनेही दिनोंसे लटक रहा था।

सन् १७३६ ई०के दिसम्बर महीनेमें, ईरान-राज्यका सारा प्रबन्ध अपने बेटे रज़ाकुलीखाँके हाथोंमें सौंपकर, नादिर अस्सी हज़ार सैनिकोंकी एक विराट् सेना संग्रहकर, कन्धारपर चढ़ाई करनेके लिये,इस्पहानसे करमानिया होकर रवानः हुआ। उसकी पीठपरही तामसख़ाँ वकील, जो उस फ़ौजका एक सरदार था, चालीस हज़ार जवानोंके साथ, उसकी मददमें चला। हुसेनख़ाँ नामक एक व्यक्ति उस समय कन्धारका शासक था। जिस समय उसने नादिरशाहके एक प्रबल सेनाके साथ कन्धारपर चढ़ाई करनेके लिये आनेकी बात सुनी, उस समय वह प्रचुर भोजन-सामग्रियाँ इकट्ठीकर अपने क़िलेके भीतर बन्द हो गया। महीनोंतक क़िलेके भीतर बन्द रहनेपर भी नादिरशाहकी पल्टनने जब उसका पिण्ड न छोड़ा और उसकी भोजन-सामग्रियाँ भी घट गयीं,तब हर तरहसे हताश हो, उसने पुत्रके साथ अपनेको नादिरशाहके चरणोंपर समर्पित कर दिया। नादिरशाहने उन्हें बन्दी कर लिया और कन्धारके क़िलेपर अपना अधिकार जमा लिया। किसी-किसी इतिहासकारका कहना है, कि नादिरसे मुक़ाबिला करनेके लिये, हुसेनखाँने, तत्कालीन सम्राट्, दिल्लीपति महम्मद शाहसे कुछ फ़ौज और कुछ रुपयोंकी मदद माँगी थी। एक बार

इसी बीचमें अपने बेटेको भी उसने इसी कामके लिये भेजा था, पर महम्मद तो अपनी मौजमें मस्त था। ग़ैरोंकी रसाई उसके घर अथवा दरपर कहाँ ? निदान,हुसेनशाह और उसके बेटे दोनों-को निराश होकर वापस आना पड़ा। कन्धारपर अपनी विजय-वैजयन्ती फहरानेके बाद, लोभी नादिर भारतकी भव्यभूमिकी ओर अपनी संहारिणी सेनाके साथ अपनी रक्त-पिपासाकी तृप्तिके लिये मुँह बाये दौड़ता है।

राज-दण्ड ग्रहण करनेके पश्चात्, शिया और सुन्नी दोनों मतोंके सम्बन्धमें नादिरशाहने इस आशयकी एक राजाज्ञा * निकाली:—

"शाहकी मर्ज़ीसे,जो लोग सरदार,सदर क़ानूनगो और शाही महलके आलिम हैं, वे इस बातको जानें और सब जगहोंमें तथा सदा याद रखें, कि—

"यद्यपि हमलोगोंके विजय-देवताका निवासस्थान सलीमगाममें है, तथापि अनेकानेक सभाओंमें हम लोगोंने स्वीकार कर लिया है, कि आजसे,अपने पुराने हनीफ़ और ज़फ़रके मज़हबके मुताबिक़ हज़रत रसूले अनाव पैग़म्बर महम्मदका उत्तराधिकारी, उनकी आज्ञाके अनुकूल, हम उन चार ख़ालीफ़ोंको मानते हैं और आव-श्यकता पड़नेपर हम उनका नाम बड़े आदर पूर्वक लेते हैं। एक बात और यह,कि इस राज्यकी बहुतेरी जगहोंमें हम देखते हैं, कि

---

*इस राजाज्ञाकी मूल प्रति फ़ारसी भाषामें है। डा० मोडने इसकी एक प्रति जे० फ़्रेजर साहबको दी थी।' जे० फ़्रेजर साहबने उसका अनुवाद अङ्गरेजीमें किया है।

अज़ान देते समय, नमाज़ पढ़ते समय और कलमा* पढ़नेके बाद बहुतेरे लोग "अली-वली अल्लाह" का उच्चारण करते हैं। यह बात शिया मतके अनुकूल है ; पर पुराने ख़याल के ख़िलाफ़ है और साथ-ही-साथ मज़हबके ख़िलाफ़ होते हुए भी, जो वसूल हम लोगोंने ठीक किया है, उसके भी विरुद्ध है। साथही यह भी विचार करना चाहिये, कि जो अमीर-उल-मोमिनीन, असद् अल्लाह, अलकातिब है, हम लोगोंसे प्रशंसा पानेपर न तो उसकी महत्ता बढ़ सकती है और न हमारी निन्दासे घटही सकती है। इसलिये इससे लाभ तो कुछ नहीं होता, पर हानि बहुत है। कारण, दोनों फ़िर्क़ोंमें, शिया और सुन्नीमें, जो पैग़म्बर और हज़रत मुर्तुज़ा दोनोंको मानते हैं, इससे विरोध और मनोमालिन्य पैदा होता है, जो पैग़म्बर महम्मद और हज़रत मुर्तुज़ा दोनोंकी ख़्वाहिशके ख़िलाफ़ है। इसलिये अपनी इस सूचनाके ज़रियेसे छोटे-बड़े, नीच-ऊँच, अमीर-ग़रीब, शहरके भीतर और बाहरके रहनेवालेको, मैं हुक्म देता हूँ, कि वे इन फालतू शब्दोंका—अली वली अल्लाहका प्रयोग न किया करें ; क्योंकि यह प्रकृत धर्म्मके अनुकूल नहीं है।

"जो लोग इस फ़र्मानके ख़िलाफ़ कोई भी कारवाई आजसे करेंगे, वे शाहनशाहके अकृपा-पात्र बनेंगे। सफ़र ११४९ हिजरी—अर्थात् जून, सन् १७३६ ई०।"

* "लाएलाहा इलल्लिाह मोहम्मद या रसूलिल्लाह"—अर्थात् ख़ुदा एक है। मोहम्मद उसका पैग़म्बर और अली उसका दोस्त है। यही मुसलमानोंका मुख-मन्त्र है।"

जिस समय नादिरशाह शुरू-शुरूमें गद्दीपर बैठा, उस वक्त उसने अपने नामके चाँदी और सोनेके सिक्के चलवाये। सोनेके सिक्के में पहले फ़ारसी भाषामें यह शेर लिखा हुआ था:—

"सिक्का बरज़र कर्द नामे सल्तनत् सादर जहाँ,
नादिरे ईराँ ज़मीं कय ख़ुस्के गेती सिता।"

अर्थात् ईरान घरानाका नादिर जो जगत् विजयी है, उसीकी सल्तनतमें यह सोनेका सिक्का खोदा गया है।

यह सिक्का हिजरी सन् ११४८में तैयार हुआ था। भारत-विजयके पश्चात्, हिजरी सन् ११५२ में वह ईरान वापस आया, तो उसने निम्नलिखित शेर सिक्के पर खुदवाया :—

"हस्त सुल्ताँ बर सलातीने जहाँ
शाहे शाहाँ नादिरे साहब किराँ।"

अर्थात् "बादशाहोंका बादशाह सौभाग्यवान् नादिर संसारके समस्त राजाओंका राजा है।"

नादिरशाही मोहरपर निम्नलिखित शेर खुदा हुआ था :—

"नगीने दौलतोदीं रफ्ता बूद चूँ अज़जा,
बनामे नादिरे ईराँ क़रार दाद ख़ुदा।"

अर्थात्—हे धर्म और राज्यके नगीने! तू अपने स्थानसे भ्रष्ट हो गया था। ईश्वरकी कृपासे ईरान-पति नादिरके नामसे तू फिर स्थिर हो।"

नादिरशाहका भारत-आक्रमण

सम्राट् औरङ्गज़ेबके शासनके आदिकालमें, अर्थात् १७ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें मुग़लिया सल्तनतका भाग्य-सूर्य्य मध्याहमें था। न कहीं विप्लव था, न विद्रोह। मुग़ल-साम्राज्यके प्रति षड्यन्त्रका भी एक प्रकारसे सर्वतोभावेन अभाव था। इसमें सन्देह नहीं, कि यत्र-तत्र दो-चार शासक इधर-उधर ख़िलाफ़में उठकर खड़े हो जाते थे; पर राज्यके सङ्गठन और प्रजाकी भक्तिके कारण शाही फ़ौज, उन्हें परास्त करकेही छोड़ती थी। परन्तु औरङ्गज़ेबकी अदूरदर्शिता और धर्म्मान्धताने राज-भक्त भारतके सभी गैर-मुसलमानोंको अर्थात् हिन्दू प्रजाजनोंको राज्यका कट्टर शत्रु बना दिया। अकबर, जहाँगीर तथा शाह-जहाँ द्वारा-सिंचित हिन्दू प्रजाजनोंकी प्रेम-लता, औरङ्गज़ेबकी मूर्खतापूर्ण धर्म्मसम्बन्धी नीतिके कारण विष-बेलि-रूपमें परिणत हो गयी। फलतः वह स्वधर्म्मीय समस्त मुसलमान-समाजको भी सन्तुष्ट न रख सका। सुन्नी उससे भलेही प्रसन्न हों, शिया तो उसके जानी दुश्मन बन बैठे। दक्षिणमें मराठोंने मुग़लोंके प्रति अपनी तलवार उठा ली। स्वधर्म्माभिमानी,-जाति-गौरव-युक्त राजपूत सरदारगण राजपुतानेमें बिगड़ उठे। पञ्जाबके सिक्खोंने

अपने धार्मिक-सङ्गठनकी ओटमें मुग़लोंका मुक़ाबिला करनेके लिये एक विराट् सेनाकी रचनाकर डाली और निज़ामुलमुल्क उधर सुदूर दक्षिण प्रदेशमें, बैठकर वहींसे मुग़ल शाहन्शाहकी जड़में कुल्हाड़ी मारने लगा। भिन्न-भिन्न प्रदेशोंके सुबेदार और सरदार भी शाही सल्तनतसे सहयोग त्याग कर अपने-अपने स्वतन्त्र राज्योंका संस्थापन करने लगे। औरङ्गज़ेब तो अपने विपुल बल, असीम साहस और अविराम उद्योग द्वारा उन्हें कुछ दिनोंतक शान्त रखनेमें भलेही सफलीभूत हुआ, पर इस ईर्षाग्नि और विद्रोहानलका रूप दिन-प्रति-दिन भीतर-ही-भीतर इतना प्रचण्ड हो गया, कि औरङ्गज़ेबकी मृत्युके पश्चात्ही उसके वंशजोंकाही इसने तहस-नहस नहीं किया, वरन् समस्त मुग़ल साम्राज्यका भी अन्तमें संहार कर डाला।

औरङ्गज़ेबके बाद जितने बादशाह दिल्लीकी गद्दीपर बैठे, सब एक-से एक बढ़कर मूर्ख, कमज़ोर और आराम-तलब होते गये। किसीसे बन नहीं पड़ा, कि बिगड़े हुए सरदारोंको सम्हालें, शासनका सङ्गठन सुदृढ़ करें तथा मुग़ल साम्राज्यकी कीर्त्ति-पताका विश्व-गगनमें फहराकर मुग़ल-वंशकी मान-मर्य्यादा एक बार फिर भी बढ़ायें। ठीक है, जब विनाशका समय आता है, तब बुद्धि भी विनष्ट हो जाती है।

बादशाह तो अपने आमोद-प्रमोद, और नाच-तमाशोंमेंही सदा व्यस्त रहते, उधर वज़ीर और सिपहसालार सर्वेसर्वा हो गये। यहाँतक,कि महम्मदशाहके राजत्वकालके कुछ दिन पहलेसे ही सैयद-बन्धु (सैयद हुसेनअलीख़ाँ और सैयद अब्दुल्लाहख़ाँ)

मुग़ल-साम्राज्यके यथार्थ सर्वाधिकारी बन गये। जिसे वे चाहें, उसे गद्दीपर बिठायें और जिसे नापसन्द करें,उसे वे गद्दीसे उतार दें। बादशाह बनाना और उसे क्षण भरमें गद्दीसे हटाना, उनके बाएँ हाथका खेल हो गया। लाचार होकर बादशाह बेचारा भी काठके पुतलेकी तरह उनके हाथोंके इशारेपर नाचता था। महम्मदशाहकी कुछ साज़िशोंसे यद्यपि उन दोनोंका नाश होगया; पर रङ्गीले-छबीले महम्मदशाहका सल्तनतसे क्या सरोकार! अन्तःपुरमें वराङ्गनाओंसे सदा घिरा हुआ, गाने-बजाने और नाच-तमाशेमें इस प्रकार व्यस्त रहता, मानो उसे 'रासलीला' करनेसे कभी फ़ुर्सतही नहीं। वह ग्रीष्म ऋतुमें ख़सकी टट्टियोंसे घिरे हुए, बर्फ़से पोते हुए, गुलाब और केवड़ेसे सींचे हुए आँगनमें आराम करता तथा वर्षा-ऋतुमें, नवपल्लवोंसे सजे हुए, फूल-पत्तियोंसे घिरे हुए, फ़ुहारेकी बगलमें, बङ्गलेमें बैठकर मल्हार और हिँडोलेका मज़ा चन्द्रवदनियों और मृगनयनियोंके साथ नित्य लूटता था। यदि कहीं शरद्ऋतु आयी,तब तो कवि-वर पद्माकरके 'कसालेके सुवाला, चित्रशाला औ दुशाला आदि जितने उदित मसाले हैं,'महम्मदके मसालेके मुक़ाबिलेमें सब फीके पड़ जाते और विरही वसन्तमें यार महम्मदकी तो कुछ बातही नहीं कहनी है।

बादशाहसे लेकर बन्दीतक, सब बारीक-से-बारीक आबरवाँका वस्त्र केशरी रङ्गमें रङ्गवा -और अबरख़के छींटे लगवाकर पहनते और इस प्रकार बैठते और नयी नवेलियोंके साथ राग-वसन्तकी बहार लेते, कि यदि ऋतु-राज वसन्तकी

अथवा रस-राज कामदेवकी सवारी कहीं उस ओरसे गुज़र जाती तो वे 'धन्यास्तुते भारत भूमिभागे' कहकर फिर भी यहाँ आनेके लिये एक बार छटपटाने लगते और ऐसे राजा, महाराजा और बादशाहके दरबारी भी तो वैसेही होते हैं न! "सरकार कहें रात. तो मैं चाँद दिखा दूँ।" इसी परिस्थितिमें नादिर जैसे विपुल बलशाली तथा असाधारण साहसीके लिये यहाँपर आक्रमण कर महम्मदको परास्तकर, दिल्ली-साम्राज्यपर अधिकार जमाना भला कौनसी बड़ी भारी बात थी?

जिस समय नादिरशाह कन्धारपर घेरा डाले हुए था, उसी समय मुग़ल-साम्राज्यका शत्रु निज़ामुलमुल्क और सयादतखाँने अपने एक गुप्त दूत द्वारा उसके पास एक पत्र भेजा। इसमें इन दोनोंने लिखा था,—

"बहुत दिन पहलेसे आप भारतपर आक्रमण करनेका विचार कर रहे हैं। आपके उस उद्देश्यकी सिद्धिके लिये इससे बढ़कर उपयुक्त समय आपको नहीं मिलेगा। महम्मदशाह रात-दिन ऐश-व-आराम, शराब-व-कवाब और नाच-व-रङ्गमें मशगूल रहता है। प्रजाकी रक्षा और शासनकी ओर वह ज़रा भी ध्यान नहीं देता और न शत्रुओंका मुक़ाबिला करनेके लिये सेनाका सङ्गठन ही करता है। फलतः काफिर हिन्दू, सिक्ख और मराठे मुसलमानी सल्तनतको दिन-रात तबाह करते हुए अपना अधिकार जमाये चले जा रहे हैं। ऐसे मौक़ेपर आप हिन्दुस्तानपर ज़रूर चढ़ाई करें। हम सब भी आपकी पूरी मदद करेंगे। हमारा तो दृढ़ विश्वास है, कि आप ज़रूर विजयी होंगे।"

इस पत्रका नादिरने इस प्रकार उत्तर दिया,—"दिल्लीपर आक्रमण करनेका कार्य्य केवल कठिनही नहीं है, वरन् एक प्रकारसे असम्भव भी है। एक तो बड़ी-बड़ी नदियाँ हिन्दुस्तानपर चढ़ाई करनेके रास्तेको रोकती हैं। दूसरे सिक्ख, मराठे और मुसलमान आदि विकट लड़ाकोंके सामने मेरी पल्टनका मुक़ाबिला करना कोई साधारण बात नहीं है। इसके साथ-साथ काबुलके क़िलेपर नासिरख़ाँ और लाहोरके क़िलेपर ज़करियाख़ाँ अपने-अपने दल-बलके साथ क़ब्ज़ा किये हुए बैठे हैं। यदि कहीं हमलोग उनसे लड़कर आगे भी बढ़े, तो उस थकी हुई हालतमें शाही पल्टनका मुक़ाबिला करना हमारे लिये असम्भव हो जायेगा।"

इसके प्रत्युत्तरमें फिर भी सयादतख़ाँ और निज़ामुल-मुल्कने नादिरशाहके पास इस आशयका पत्र लिखा,—

"इस बातसे तो आप निश्चिन्त रहें। आपका मुक़ाबिला करनेका कोई साहस भी नहीं करेगा। हिन्दुस्थानके सम्बन्धमें आपकी जैसी धारणा है, वह अबके लिये नहीं। हाँ, दो एक क़ौमवाले आपका मुकाबिला करेंगे ; पर उन्हें हमलोग देख लेंगे। आपके प्रतापके सामने सब हार जायेंगे। अटक पार उतरनेमें तथा मार्गके अनान्य अड़चनोंको दूर करनेमें भी हमलोग आपका साथ देंगे। यह आप निश्चित रूपसे जान लें। अतः आप अवश्य आयें।"

निज़ामुउलमुल्क तथा सयादतख़ाँके इस पत्रसे प्रोत्साहित हो, १ लाख २५ हज़ार जवानोंकी पल्टनके साथ नादिरशाहने कन्धारसे कूच किया। यह पल्टन तुर्कों, बलूची, ख़ुरा-

सानी, जार्जियन आदि जातियोंकी थी। पल्टन तो मार्ग-जनित अनेकानेक कष्टोंको झेलते-झेलते थक गयी; पर धूर्त्त-राज नादिरशाहने उन्हें हताश नहीं होने दिया। उसने उन्हें यह दिलासा देकर आगे बढ़ाया, कि "भारतपर आक्रमण करनेसे हमलोगोंको लूटनेका बहुतही अच्छा अवसर हाथ लगेगा; क्योंकि भारत अतिशय धनशाली देश है। इस लूटमें हमलोगोंको बहुत धन मिलेगा। इससे केवल हम लोगही धनी नहीं हो जायेंगे, वरन् हमलोगोंका देश भी धन-सम्पन्न हो जायेगा और इस प्रकार ईरान देशके धन और वीरताकी ख्याति समस्त संसार-में फैल जायेगी।" ऐसी ख़ुश-ख़बरी सुनकर किसका कलेजा उत्साहसे फूलकर दूना-चौगुना न हो जायेगा। निदान, पल्टन आगेकी ओर पूर्ण उत्साहसे बढ़ने लगी।

इधर नादिरशाहकी मददके लिये निज़ामुलमुल्क और सआदतख़ाँकी यह कोशिश होने लगी, कि जिसमें काबुल और लाहोरके सुबेदार नादिरशाहके आक्रमणको न रोकें,—वरन् उससे मिल जायें। जिसमें नादिरशाहको दिल्लीपर चढ़ाई करनेमें कोई भी कठिनाई नहीं पड़े। फलतः उन दोनोंने क़ाबुलके हाकिम*

---

*"मुगल-शासन-कालमें प्रत्येक प्रदेशमें दो शासक रहते थे—(१) हाकिम और (२) क़िलेदार। हाकिमका काम दीवानी कामोंको देखना तथा क़िलेदारका काम फौजका इन्तिज़ाम रखना था। क़िलेदारका पद आजीवनका होता था। यह पद उसका तभी जा सकता था, जब बादशाह उसे हटा दे।" यह मत जेम्स फ्रेजरका है। पर सूबेदारकी जगह कहाँ गयी, इसका पता नहीं चलता!

शीराज़ख़ाँ, और सुबेदार नासिरख़ाँ तथा लाहोरके हाकिम ज़क-रियाख़ाँको निम्नलिखित आशयका एक पत्र भेजा,—

"भारतके राज-काजके सम्बन्धमें नादिरशाहको पूरी जान-कारी है। उन्हें यह बात भली भाँति मालूम है,कि बादशाह और उसके मुसाहब अपना सारा समय शराबख़ोरी और विषय-वासनामें व्यतीत करते हैं। इसलिये उन्होंने इस साम्राज्यको जड़-मूलसे उखाड़ फेंकनेका दृढ़ निश्चय कर लिया है। आपको यह भी मालूम है, कि दरबारमें ऐसा एक भी आदमी नहीं, जो नादिरशाहके सामने खड़ा हो सके। ऐसी हालतमें आप यहाँसे किसी प्रकारकी भी मददकी आशा न करें। बेहतर तो यह होगा, कि आप अक़्लमन्दीसे काम करके अपने और अपनी फ़ौज-को बचा लें।"

इस पत्रका उनके हृदयपर कैसा प्रभाव पड़ सकता है, यह पाठक स्वयंही विचार कर लें। निदान इस पत्रके पढ़तेही नासिर-ख़ाँ और ज़ुकरियाख़ाँके हृदयमें आतङ्क छागया।

नादिरशाह कन्धारसे विदा होकर, ग़ोर और ग़ज़नीके शास-कोंको परास्त कर तथा उन्हें अपने अधिकारमें ला, उनको रक्षाके लिये अपने थोड़ेसे सिपाही छोड़कर, काबुलमें आ धमका। सुबेदार नासिरख़ाँ, जो वहाँका क़िलेदार था, नादिरशाहकी पहुँचका पता पातेही वहाँसे नौ-दो-ग्यारह हो गया और पेशावरमें पहुँचा। शीराज़ख़ाँने शहर और क़िलेपर छः सप्ताहतक बड़ी वीरताके साथ अपना अधिकार जमाये रखा। इस बीचमें पेशा-वरमें नासिरख़ाँके पास और दिल्लीमें बादशाहके पास बार-बार

यह लिखता रहा, कि वे मददके लिये सेना भेजें। पर न नासिरखाँ आया और न बादशाहके यहाँसे कोई पल्टनही आयी। अन्तमें छः सप्ताहके बाद शीराज़ अपने पुत्र सहित वीर गतिको प्राप्त हुआ। काबुलपर नादिरका अधिकार हुआ। बाबरके समयसे जितने धन-रत्नादि काबुलके ख़ज़ानेमें एकत्र थे, वे सब नादिरशाह और उसके फ़ौजी जवानोंके हाथ लगे। उनका हौसला इस धन-प्राप्तिके पश्चात् और भी बढ़ गया।

नादिरशाहके काबुलपर कब्ज़ा कर लेनेकी बात जब दिल्लीमे पहुँची, तब दरबारमें बड़ी खलबली मच गयी। बादशाहका हुक्म हुआ, कि बहुत जल्द सेना तैयार करो और नादिरशाहसे मुक़ाबिला करनेके लिये उसे आगे भेजो। जयपुरका राजा जयसिंह भी नादिरशाहके इस आक्रमणके सम्बन्धमें निम्नलिखित आशयका पत्र बादशाहकी सेवामें हमेशा लिखता रहा,—

"नादिरशाहका भारतपर आक्रमण करना एक पूर्व-रचित षड्यन्त्रका फल है। आप इन मुग़ल उमरावोंसे अर्थात् निज़ामुलमुल्क वग़ैरहसे सदा सावधान और सतर्क रहें। मेरी तो धारणा है, कि वे किसी घातक कर्मके प्रतिपादनके लिये आपसमें सब एक हो रहे हैं। नासिरखाँ और शीराज़खाँ दोनोंकी परवरिश हमेशा दरबारसे होती आयी है। शीराज़खाँने तो राज्य-रक्षाके लिये अपनी जान देदी; पर नासिरखाँ पेशावर भाग गया। यदि लाहोरका शासक ज़करियाखाँ कुछ दूर आगे बढ़कर नादिरशाहका मुक़ाबिला करे, तो इस अवधिमें शाही पल्टन कुछ और आगे बढ़ जा सकती है। हम राजपूत लोग तो शाही सेनाका

साथ देनेके लिये तथा साम्राज्यके लिये मरनेको सदा तैयार रहते हैं।"

एक ओर जयपुरका राजा जयसिंह, एक कट्टर हिन्दू होते हुए भी, मुसलमान बादशाह महम्मदशाहकी विजयके लिये इतना उत्कण्ठित और लालायित है—अपनी जातिके सभी व्यक्तियोंके साथ मरने और मारनेके लिये तैयार है—परन्तु दूसरी ओर एक नहीं वरन् अनेक मुसलमान, मुग़लिया सल्तनत्का निमक सैकड़ों वर्षसे खाये हुए और उसीसे पले हुए, अपनी जाति, धर्म्म और देशके मालिक और पालक महम्मदशाहके जीवनकी जड़में कुल्हाड़ी मारनेके लिये जी-जानसे उतारू हो रहे हैं। फिर भारत! तेरी यह दुर्गति क्यों न हो? तू जो अबतक इस अवस्थामें बचा है, यही आश्चर्य है! अस्तु; ख़ानदौराने जयसिंहका पत्र बादशाह सलामत महम्मदशाहको पढ़ सुनाया। साथ-ही-साथ जयसिंहकी नादिरका विरोध करनेकी उत्कट इच्छा जानकर, उसने बादशाहसे कहा,—"बादशाह सलामत! जयसिंहके लिये राजधानीकी रक्षाका भार छोड़कर, लड़ाईके मैदानमें उतरना, कभी अच्छा न होगा।"

आख़िरकार यह तय हुआ, कि पल्टन दिल्लीसे लाहोरके लिये रवानः हो जाये। लाहोरतक पल्टनके साथ बादशाह ख़ुद जायें। वहांसे पल्टन काबुलकी ओर निज़ामुलमुल्क और दूसरे दो उमरावोंकी सेनाध्यक्षतामें आगे बढ़े। लाहोरमें पेशख़ाना * भी चलनेका हुक्म हो गया। पर ख़ानदौरा और निज़ामुलमुल्ककी चालाकीसे पल्टन रोक दी गयी। वह दिल्लीसे

उसे समय रवानः न हो सकी। तबतक नादिर काबुलपर अपना क़ब्ज़ा कर पेशावरकी ओर अपना पाँव बढ़ा रहा था। रास्तेमें अफ़ग़ानों और पहाड़ी जातियोंने उसका मुक़ाबिला किया। उन्होंने सात सप्ताहतक उसे वहीं रोक रखा, नादिरशाहके बहुतेरे सिपाहियोंको मारा और घायलकर दिया। नादिर-शाहने यह देखा, कि इनसे अब छुटकारा पाना मुश्किल है और जबतक इनसे छुटकारा नहीं मिलेगा, तबतक आगे बढ़ना भी असम्भव है। यह विचारकर उसने उन सबको घूस देकर शान्त करना चाहा। उन लोगोंने भी देखा, कि सुबेदारके पाससे मददमें न रुपये आये और न फ़ौज ही आयी; साथही पाँच-सात वर्षोंसे बादशाहकी ओरसे हमलोगोंको कोई मदद भी नहीं मिल रही है, नादिरशाहके रुपयेको सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसके बाद उन्होंने नादिरशाहको सीधा मैदानही नहीं दे दिया,—वरन् कुछ लोग उसकी सेनामें भी भर्ती हो गये। दूसरे अफ़ग़ानोंने भी जब अपने भाइयोंके भर्ती

स्वीकार कर लिया। इसके बाद उन्होंने नादिरशाहको सीधा मैदानही नहीं दे दिया,—वरन् कुछ लोग उसकी सेनामें भी भर्ती हो गये। दूसरे अफ़ग़ानोंने भी जब अपने भाइयोंके भर्ती

सुना, कि नादिरशाह एक बड़ी भारी पल्टनके साथ आ रहा है, त्योंही वह बुरी तरह घबरा गया! उसकी फ़ौज भी घबरा उठी। बहुतेरे जवान तो इसी कारणसे उसका साथ छोड़, भाग गये! शाही पल्टनने उसका साथ दिया। मुठ-भेड़ हुई। नासिरख़ाँ हार गया और क़ैद कर लिया गया। नासिरख़ाँको पराजित तथा नादिरशाहको विजेता जानकर कुछ अफ़ग़ान, जिन्होंने अभीतक नादिरशाहका साथ नहीं दिया था तथा जो लज्जाके कारण जङ्गलोंमें छिपकर सारी बातें देख रहे थे और समयकी प्रतीक्षा कर रहे थे, इस समय आकर नादिरशाहके साथ हो लिये। नादिरने अब पेशावरपर अपना अधिकार जमा लिया।

पेशावरपर क़ब्ज़ाकर नादिरशाह आगेकी ओर बढ़ा। पर अटकके पास, उसके रास्तेमें एक नदी पड़ती थी, जिसको पार करही नादिर लाहोर आदि स्थानोंपर अपना अधिकार कर सकता था; पर लाख प्रयत्न करनेपर भी, नादिरशाह उसे पार नहीं कर सका। इसी विचारमें डेढ़ महीनेतक वह नदी-तटपर ठहरा रह गया; पर उसकी एक भी अक़्ल काम न आयी। अन्तमें एक अफ़ग़ानी सरदारने आकर नादिरशाहसे निवेदन किया, कि यदि आप हमारे प्रान्तपर आक्रमण न करें, तो हम आपको नदी पार करनेके लिये एक बहुतही सरल मार्ग बता दगे। नादिरशाह इस असमर्थताकी अवस्थामें उसकी बात अस्वीकार क्यों करता? उसने फ़ौरनही उसकी प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया तथा उसे विश्वास दिलाया, कि मेरी ओरसे आपकी ज़रा भी बुराई नहीं हो सकती। इसपर उसने उसे नदी पार करनेके लिये

एक ऐसा मार्ग बता दिया, कि नादिरशाह ख़ुशी-ख़ुशी नदीको पारकर अटक पहुँचा गया। वहाँ सिर्फ कई दिनोंकी लड़ाईके बाद उसने अटकपर अपना अधिकार जमा लिया।

अटकपर अपना अधिकार करनेके बाद, नादिरशाह अपनी सेना लेकर लाहोरकी ओर बढ़ा। वर्षा ऋतुके कारण पञ्जाबकी सभी नदियाँ उन दिनों उमड़ी हुई थीं। किसी-किसी प्रकार और-और नदियोंको पार करता हुआ नादिर झेलम नदीके किनारे पहुँचा। लाहोरसे कुछ दूर आगे बढ़कर वहाँके सुबेदार ज़कारिया ख़ाँने नादिरशाहका मुक़ाविला करनेके लिये ऊपरी दिखावटके तरीक़ेसे एक ज़बर्दस्त मोर्चा बाँध रखा था; पर झेलमको पारकर ज्योंही नादिरशाहकी फ़ौज आगेकी ओर बढ़ी, त्योंही निज़ामुल मुल्कका इशारा पातेही, ज़करिया ख़ाँ, अपनी सारी फ़ौजके साथ लाहोरके क़िलेमें घुस गया। नादिरशाहकी फ़ौजने उस क़िलेको घेर लिया।

इसके बाद ज़करियाख़ाँ नादिरसे मिल गया। नादिरने उसे अच्छा पुरस्कार दे, अपनी ओरसे उसे लाहोरका गवर्नर बना दिया। विलियम जोन्सने, नादिरशाहकी जो जीवनी लिखी है और जो १६७२ ई० में प्रकाशित हुई है, उसमें लिखा है, कि ज़करियाख़ाँ पहिले नादिरशाहसे मिला हुआ नहीं था। वह एक ज़बर्दस्त मोरचा बाँधकर नादिरशाहसे भिड़नेके लिये लाहोरके आगे झेलम नदीके इसपार ठहरा हुआ था और उसे इस बातका विश्वास था, कि नादिरशाहकी पल्टनको नदी वग़ैरह पारकर पहुँचनेमें अभी बहुत विलम्ब होगा। तबतक

शाही पल्टन उसकी मददमें पहुँच जायेगी और तब फिर नादिरशाहसे एक अच्छा मुक़ाबिला होगा।

इसी बीचमें, उसके विश्वासके विरुद्ध, नादिरशाहकी फ़ौज धड़ाकेसे पहुँच गयी। बेचारा ज़करियाखाँ घबरा गया। उसकी सेना भी घबरा उठी। पहले मुकाममें वह लाहोरके क़िलेमें भग आया और डेढ़ महीनेतक नादिरशाहके विरुद्ध क़िलेको बचाये रखा; पर जब दिल्लीसे कोई भी पल्टन उसकी मदद करनेके लिये नहीं आयी और क़िलेके भीतर रसदका सामान भी घट गया, तब वह सारी आशा छोड़कर लाचारीमें नादिरशाहसे आ मिला; किन्तु इस बातका विचारकर, कि निज़ामुलमुल्कने उसे पहलेसेही मिला रखा था और महम्मदशाहके विरुद्ध निज़ामुलमुल्क तथा सयादतखाँ द्वारा जो षड़्यन्त्र रचा गया था, उसमें ज़करियाखाँ भी शामिल था,ऐसी अवस्थामें जोन्स साहबके कथनपर कोई विश्वास नहीं कर सकता। अस्तु, ज़करियाखाँ नादिरशाहसे मिल गया, यह बात निर्विवाद है।

लाहोरपर विजयकर नादिरशाहने वहाँका गवर्नर ज़करियाखाँकोही रहने दिया। उसने लाहोरमें किसी प्रकारकी लूट-खसोट न मचायी। हाँ, दूरके सफ़रसे वह थक गया था, इसलिये शालीमार बाग़में (जो लाहोरमेंही है) वह एक सप्ताहके लिये अपनी फ़ौजके साथ विश्राम करनेके लिये ठहर गया। एक सप्ताहतक वहाँ पूर्ण विश्राम लेनेके बाद वह आगेकी ओर बढ़ा। दिन-रात धावाकर वह सरहिन्द और अम्बाला होता हुआ, सन् १७३६ ई० के जनवरी महीनेमें वह तिरौरी पहुचा।

जिस समय नादिरशाहने पेशावरके गवर्नरको परास्तकर वहाँके क़िलेपर अपना क़ब्ज़ाकर लिया और मुग़लिया फ़ौजकी हारकी ख़बर दिल्लीमें पहुँची, उस समय महम्मदशाहकी प्रमोद-निद्रा भङ्ग हुई! उन्होंने हुक्म दिया, कि नादिरशाहके मुक़ाबिलेके लिये पल्टन आगे बढ़ायी जाये। निदान एक विशाल पल्टन तोप-ख़ाना वग़ैरह लड़ाईके सब सामानोंके साथ आगे बढ़ायी गयी। पर मुग़लिया पल्टनका आगे बढ़ना निज़ामुल-मुल्कको कब पसन्द था? वह तो चाहता ही था, कि नादिर एक-ब-एक बिना रोक-टोकके देहलीमें आ डटे और महम्मद-शाहको गद्दीसे हटाकर दिल्लीके तख़्तपर अपना क़ब्ज़ा कर ले। लेकिन चूँकि महम्मदशाहने पल्टनको आगे बढ़ानेका हुक्म निज़ामुलमुल्कको दे दिया था और साथ-साथ उसने यह भी कह दिया था, कि पीछेसे मैं ख़ुद आरहा हूँ, लाचार होकर निज़ामुल-मुल्कको अपनी पल्टन आगे बढ़ानी पड़ी! पर निज़ाम अपने उद्दे-श्यसे विचलित नहीं हुआ। रास्तेभर वह सैनिकोंसे यह कहता गया, कि "नादिरशाह एक बड़ाही बलशाली योद्धा है। उससे मुक़ाबिला करना कठिन काम है। आजतक किसीने भी उसे परास्त नहीं किया।" उसकी इन सब बातोंसे, कहनेकी आवश्यकता नहीं,कि मुग़लिया पल्टनका दिल टूटता गया। शूरताकी जगहपर कायरता और साहसकी जगहपर भयने उनकी पूँछ पकड़ी। रक्षकही जहाँ भक्षक हो, वहाँपर ऐसी बात क्यों न हो? निदान निज़ामुलमुल्ककी अध्यक्षतामें मुग़ल पल्टन दूसरी जनवरी सन् १७३९ ई०को करनालके मैदानमें पहुँची। यह स्थान दिल्लीसे

लगभग १४० मीलके फासलेपर है। १८ वीं जनवरीको महम्मद शाह भी अपनी तशरीफ़ लेकर वहाँ पहुँच गये।

काबुलपर क़ब्ज़ा करनेके बाद, आगेके स्थानोंपर अपना अधिकार जमाता हुआ, जब नादिरशाह अटकके निकट आकर अटक गया, तब वहांसे उसने एक पत्र लिखकर अपने दूतके द्वारा महम्मदशाहके पास भेजा। उस पत्रकी बातोंका समर्थन करनेके लिये, काबुलके कई सरदार भी नादिर-शाहके उस दूतके साथ गये। पत्रका आशय इस प्रकार थाः—

"शाह सलामतके रौशने-दिमाग़में यह बात ज़ाहिर हो, कि मेरा काबुलमें आना और उसपर अपना दख़ल जमाना, महज़बी और आपकी दोस्तीके ख़यालसे हुआ है। मेरी समझमें यह बात नहीं आती, कि दक्खनके दरिद्र काफ़िर* मुसलमान बादशाहोंसे क्योंकर चौथ वसूल करते हैं? मैं अटकमें सिर्फ इसी ख़यालसे ठहरा हूँ, कि जब ये काफ़िर 'हिन्दुस्तानपर' चढ़ाई करें, तब कज़लेबशकी मातहतमें एक पल्टन भेजकर मैं उन्हें हरयाये दोज़ख़में डाल दूं। तवारीख़ इस बातकी तसद्दीक करती है, कि हमारे और आपके घरानेमें हमेशःसे मेल रहा है। मैं अली मुर्तज़ाकी कसम खाकर कहता हूँ, कि मेरे दिलमें इसके सिवा और कोई भी दूसरा ख़याल नहीं है और न कभी किसी दूसरे ख़यालके होनेकी उम्मीदही है। यों तो आपकी मर्ज़ी,—आप जैसा समझें,लेकिन मैं तो आपके ख़ानदानका हमेशः दोस्तही रहा हूँ और उम्मीद करता हूँ,कि ताज़िन्दगी ऐसाही बर्त्ताव रखूँगा।"

* 'दरिद्र काफ़िर'से नादिरशाहका मतलब मराठोंसे था।

नादिरशाहने इस पत्रको अगस्त महीनेके मध्यमें भेजा था। इसके आठ-दस दिनके बादही नादिरशाहने एक दूसरा पत्र भी महम्मदशाहके पास भेजा, जिसमें उसने महम्मदशाहसे चार क्रोड़ रुपये और पाँच सूबे माँगे थे। पर उनमेंसे एक भी पत्रका उत्तर नादिरशाहके पास नहीं पहुँचा। पहले दूतको जलालाबादके गवर्नरने मार डाला और दूसरे दूत द्वारा प्रेषित पत्रका कोई उत्तरही नहीं मिला। इस घटनासे नादिरशाहकी क्रोधाग्नि धधक उठी। यद्यपि जलालाबादपर आक्रमणकर और वहाँके गवर्नरको मारकर, उसने वहाँके क़िलेपर अपना अधिकार जमा लिया; पर उसका क्रोधानल इसीसे शान्त नहीं हुआ और महम्मदशाहसे मिले बिना उसका यह क्रोधानल शान्त भी नहीं हो सकता था।

नादिरशाहके उपर्युक्त पत्रसे यह पता चलता है, कि हिन्दुस्थानपर वह अपनी बुरी दृष्टि नहीं रखता था तथा उसका अटकमें ठहरना केवल महम्मदशाहकी मदद देनेके ख़यालसे था; पर नादिरशाहके प्रारम्भसे लेकर आजतकके इतिहासपर पाठक ध्यान देंगे, तो पता चल जायेगा, कि धूर्त्त नादिरशाहने यह पत्र केवल महम्मदशाहको धोका देनेके लिये लिखा था। कारण, जिस समय शुरू-शुरूमें नादिर ईरानके तख़्तपर बैठा था, उस समय उसने अपनी यह अभिलाषा प्रकट की थी, कि "तुर्किस्तान, रूस आदि जीतनेके बाद केवल कन्धार और हिन्दुस्थानको अपने क़ब्ज़ेमें लाना बाक़ी रह गया है।" उनमें कन्धारको तो वह लेही चुका था, केवल हिन्दुस्थान बाक़ी रह गया था। इसे भी

लेकर नादिरशाह अब अपना हौसला पूरा क्यों न कर ले। नादिर-शाहका हिन्दुस्थानपर आक्रमण करनेका दूसरा कारण यह था, कि जिस समय नादिर तुर्कोंसे परास्त होकर अपनी समग्र शक्ति और सामग्री गँवाकर लौट आया था, उस समय उसने महम्मद शाहके पास एक पत्र लिखा था, जिसमें ईरानके शाह और हिन्दु-स्थानके शाहनशाह, इन दोनों घरानोंसे चिर-सम्बन्ध दिखलाते हुए, उसने महम्मद शाहसे प्रार्थना की थी, कि आप ऐसे असमय-में रुपये और फ़ौजसे मेरी सहायता करें; पर महम्मदशाहने उसकी एक भी न सुनी। इस बातका दुःख और द्वेष उसके दिलसे दूर नहीं हुआ था। तीसरा कारण यह था, कि जिस समय नादिर-शाह कन्धार आदि देशोंपर आक्रमणकर रहा था, उस समय उसने महम्मदशाहके पास एक पत्र लिखा था, कि इन देशोंके किसी भी अफ़ग़ानको आप अपने राज्यमें शरण न दें। पर महम्मदशाहने उसके इस अनुरोधकी अवहेलनाकर, बहुतेरे अफ़-ग़ानोंको अपने राज्यमें बसनेको स्थान दिया था और चौथा तथा सबसे प्रबल कारण यह था, कि उसका दूत जलालाबादके गवर्नर द्वारा मार डाला गया था।

इन सब बातों और घटनाओंपर दृष्टि रखते हुए नादिर-शाहके पत्रके भावको सच्चा समझना, अपने दिल व दिमाग़को धोखा देना है। कारण, ऊपर कही गयीं बातोंको यदि हम छोड़ भी दें, तो भी सन् १७३८के सितम्बर महीनेमें अपने पुत्र रज़ाकुली-ख़ाँसे, भारतपर आक्रमण करनेकी जो बातें उसने कही थीं, उनसे उसके मनका भाव साफ़-साफ़ ज़ाहिर हो जाता है।

दूसरी बात यह भी है, कि जब निज़ामुलमुल्क आदिके अनुरोधसे वह कन्धारसे हिन्दुस्थानपर आक्रमण करने और उसको अपने क़ब्ज़ेमें लानेके लिये ही आ रहा था, तब वैसी हालतमें उसका अपने पत्रमें दोस्तीकी बातें लिखना, उसकी धूर्त्तता और धोखे-बाज़ीका परिचायक नहीं तो और क्या हो सकता था?

एक ओर नादिरशाह धनलोलुप तथा विजयोन्मत्त उद्भट योद्धाओंके साथ तिरौरीके मैदानमें अड़ा खड़ा है। दूसरी ओर महम्मदशाह करनालमें ३० हज़ार पैदल ३ हज़ार घुड़सवार और २ हज़ार तोपख़ानेके साथ पड़ाव डाल, पीछेसे अपनी और भी पल्टनकी पहुँचकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। नादिरशाह करनालमें चढ़कर महम्मदशाहकी फ़ौजपर इसलिये चढ़ाई नहीं कर रहा है, कि करनाल एक बहुतही सुरक्षित स्थान है, वहाँकी सेनापर चढ़ाई करनेपर लेने-के-देने पड़ जायेंगे। इसी बीचमें अर्थात् १४ फरवरी सन् १७३६ ई०को नादिरशाहको यह बात मालूम हुई, कि सयादतख़ाँ एक भारी फ़ौजके साथ बादशाहकी मददमें आ रहा है। यद्यपि अब उसकी अबाधित गतिको रोकना नादिर-शाहके लिये कठिनही नहीं,—वरन् असम्भव भी है, तथापि ईरानी सिपाहियोंका एक दल उसने सयादतख़ाँकी पिछली पल्टनसे मुक़ाबिला करनेके लिये भेज दिया। उस दलने जाकर सयादतख़ाँ-की पिछली पल्टनमें ख़ूब मार-काट मचायी और उनकी सारी चीज़ें भी लूट लीं।

यह बात जब सयादतख़ाँको मालूम हुई, तब वह आग-बबूला हो उठा। आगे पीछेका कुछ भी ख़याल किये बिना, उसने

नादिरशाह पर धावा बोल दिया। महम्मदशाह और उनके सरदारोंने भी भले-बुरेका तनिक भी ध्यान न दे, अपनी विशाल फ़ौजके घमण्डमें आकर और यह अनुमानकर, कि हम विजयी ज़रूर होंगे, सयादतका साथ दिया। इसी समय ख़ानदौरा, निज़ामुलमुल्क और वज़ीरे-आजम कमरुद्दीन, ये तीनों भी अच्छे-अच्छे सेनापतियों और अपनी-अपनी बड़ी-बड़ी फौजके साथ महम्मदशाहके पास पहुँच गये। इस समय महम्मदशाहके पास काफ़ी फ़ौज थी। पर वीरवर नादिर यह देखकर भी तनिक नहीं घबराया,—वरन् उसके हृदयमें एक नवीन और अपूर्व उत्साहका संचार हो आया। उसे इस बातका विश्वास होगया, कि नज़ाक़तमें पले हुए, आमोद और प्रमोदमें सदा आसक्त रहनेवाले ये हिन्दुस्तानी, हट्टे-कट्टे ईरानियोंके सामने थोड़ी देरतक भी ठहरनेवाले नहीं हैं।

जब उसने मुग़लोंकी सारी पल्टनको एकही साथ लड़नेके लिये तैयार होते देखा और साथ-साथ सब हाथियोंको भी आगे बढ़ते देखा, तब उसका यह विचार और भी अटल हो गया। उसने अनुमान कर लिया और उसका अनुमान ठीक भी था, कि न तो इतनी बड़ी सेनाका संगठन और सञ्चालनही एक समयमें हो सकता है और न वे व्यावहारिक दृष्टिसे बहुत देरतक भिड़कर लड़ाईही कर सकते हैं। इस विश्वासके वशीभूत हो, अपने सिपहसालार नसीरुल्लाहके अधीन अपनी फ़ौजको छोड़, वह सिर्फ़ एक सुशिक्षित दल लेकर मुग़ल-फ़ौजपर बाज़की तरह टूट पड़ा। पाँच घण्टोंतक घमासान युद्ध हुआ।

ईरानियोंके उत्साह और उमंगको देखकर मुग़ल पल्टन तो बिल्कुल ही घबरा उठी। पर सैनिकोंकी संख्या बहुत अधिक रहनेके कारण वह जल्दीसे भाग भी न सकी। सयादतखाँ, जो सबसे पहले मैदानमें उतर पड़े थे, सबसे पहले चोट खाकर भाग गये। उनकी पल्टन भी उनके पीछे भाग चली। यह देखकर सैनिकोंमें एक बड़ी भारी खलबली मच गयी। सब अपनी-अपनी जगह छोड़कर भागने लगे। सयादतखाँके दोनों भाञ्जे थोड़ीही देर बाद क़ैदकर लिये गये। ख़ानदौराको गोली लग गयी। वह दूसरे दिन मर गया। तीस हज़ार सिपाहियोंके साथ बहुतेरे सरदार मैदान आये। बहुतेरे क़ैदकर लिये गये। नादिरशाहके पक्षके भी सात सरदार और ढाई हज़ार जवान मारे गये। तथा पाँच हज़ार सवार और सिपाही घायल हुए।

अपनी सेना और सरदारकी यह दशा देखकर महम्मद शाह तो घबरा उठा। मरने और भागनेके बाद उसके पास अब केवल थोड़ेसे सैनिक रह गये। बादके दो-तीन दिनोंमें, निज़ामुलमुल्क और सयादतखाँ अपने अनेक साथी और सिपाहियोंके साथ नादिरशाहसे जा मिले। चालबाज़ नादिरशाहने भी उनकी ख़ूब ख़ातिर-बात की। उधर बेचारा महम्मदशाह उन बचे हुए सिपाहियोंका एक मोर्चा बाँध करनालके मैदानमें किसी प्रकार अपनी जीवन-रक्षा करने लगा। नादिरशाहके सिपाहियोंने उसे यहाँपर आकर घेर लिया। अन्तको महम्मदशाहने नादिरशाहके पास अपनी जीवन-रक्षाके लिये पैग़ाम भेजा और अपना सारा राज उसे सौंप देनेका भी सन्देश कहला भेजा।

नादिरशाहने इसे सहर्ष स्वीकार किया। २०वीं फरवरीको महम्मदशाह नादिरशाहसे उसके ख़ीमेमें मिलने गया। वह जब लगभग आधा रास्ता तैकर चुका था, तब तहमास्पखाँ वकील उसकी अगवानीमें आया। नादिरशाहके पास पहुँचनेमें जब थोड़ीही देर बाक़ी रह गयी, तब उसका लड़का नसीरुल्लाह मिरज़ा, एक पालकीपर चढ़कर महम्मदशाहको ले जाने आया। महम्मदशाहको देखकर वह सवारीसे उतर पड़ा और महम्मद-शाहका यथोचित सत्कार किया। महम्मदशाहने भी उसे गले लगाया। फिर दोनों नादिरशाहके दरबारकी ओर बढ़े। दर-बारके दरवाज़ेपर पहुँचकर महम्मदशाहके तीन-चार मुसाहबोंको छोड़कर और सब वहींपर ठहरा दिये गये। जब महम्मदशाह नादिरशाहके पास पहुँचा, तो नादिरशाहने अपनी गद्दीसे उतरकर उसका समुचित सत्कार किया। उसे अपने गले लगाया। अपने साथ महम्मदशाहको अपनी गद्दीके पास बैठाया।

आदर-सत्कार और कुशल-मङ्गलके पश्चात् नादिरशाहने महम्मदशाहको यों कहना शुरु किया,—"बड़े ताज्जुबकी बात है, कि आप अपने राज-काजका कुछ भी ख़याल नहीं करते। मैंने आपके पास कितनेही ख़त लिखे, दूत भेजे, अपनी दोस्ती आपसे ज़ाहिर की; लेकिन आपके वज़ीरोंने मेरी एक भी नहीं सुनी,—जवाबतक नहीं दिया। हुकूमत और साहस्तगीकी कमज़ोरीकी वजहसे मेरा एक दूत तमाम कानूनोंके बरख़िलाफ़ आपकी सल्तनतमें मारा गया। आपकी सल्तनतमें मेरे दाख़िल होनेपर भी आपने इस तरफ़ ज़रा ख़याल नहीं फ़र्माया; मानो इन सब

कामोंसे आपका कोई सरोकारही नहीं। आपने यह जाननेकी भी कोशिश न की, कि मैं कौन हूँ और मेरा इरादा क्या है।

"मेरे लाहोर पहुँच जानेपर भी आपका कोई आदमी मुझसे मिलने मिलाने नहीं गया और मैंने अपना सलाम आपके पास भेजा, उसका भी कोई जवाब आपके यहाँसे नहीं मिला। आपके अमीर-उमराव जब अपनी नींद और ख़्वाबसे उठे, तो समझौता करानेकी कोई भी कोशिश न कर वे हमारे रास्तेको रोकने आये। इसमें भी उन्होंने सारी फ़ौजको एकही साथ आगे बढ़ाकर ऐसी ग़लती की, कि जरूरत पड़नेपर पीछे एक भी सैनिक दल ऐसा नहीं रह गया, जो आगे बढ़कर मोर्चा अख़्तियार करता। साथ-साथ आपने अपने मोर्चेमें बन्द होकर बड़ी बेवक़ूफ़ी की। मान लीजिये, अगर दुश्मन ज़बर्दस्त रहता, तो आपको घेरकर दाने-दानेके बिना वहींपर मार डालता। अगर कमज़ोर होता, तो भी उसके सामने अपनेको बन्द रख, आपको ज़िल्लत और फ़ज़ीहत उठानी पड़ती। अगर आप यह कहें, कि कमज़ोरोंका मुक़ाबिला करनेमें मैं अपनी हतक-इज्जती समझता हूँ, तो क्यों नहीं आप किसी अच्छे अफ़सरको मातहतमें अपनी पल्टनको छोड़कर वहाँसे हट गये, जो उसे काट गिराता या मार भगाता। अगर आप यह कहें, कि मेरे पास एक भी ऐसा अफ़सर नहीं था, तो वैसी हालतमें, बाहर आकर लड़नेमेंही इज्ज़तपर कम धक्का पहुँचता था। आपकी ऐसी हालतमें भी मैंने सुलहका पैग़ाम भेजा था; लेकिन आप अपने लड़कपन जैसे ख़ाम ख़्यालातोंसे इतने फूल उठे

थे, कि मेरी बातोंकी ओर आपने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। अल्लाहकी मदद्से और इन सिपाहियोंकी ताक़तसे अब आप फ़रमायें, कि इसका नतीजा क्या हुआ ?

"आपके पूर्व-पुरुष लोग इन काफ़िरोंसे जज़िया वसूला करते थे ; लेकिन इन्हीं बीस वर्षोंके बीच आपने उल्टे उन्हें देनाही शुरू नहीं किया,—बल्कि सारी सल्तनतपर उनका क़ब्ज़ा जमने दिया। चूँकि आजतक तैमूरकी क़ौमसे शफ़ी ख़ानदान या ईरानकी कोई भी बुराई नहीं हुई है, मैं यह सल्तनत आपके हाथोंसे नहीं ले लूँगा। सिर्फ़ आपकी आराम-तलबी और ग़ुमानकी वजहसे मैं यहाँतक आनेके लिये लाचार हुआ हूँ। लेकिन मुझे यहाँ तक आनेमें बहुत ख़र्चा पड़ा है और मेरे आदमी भी लम्बे सफ़र-की वजहसे बहुत थके-गये हैं और कितनी ही चीज़ोंकी उन्हें ज़रूरत है, इसलिये मैं देहलीतक चलूँगा। वहाँ पहुँचकर अपने सिपाहियोंके साथ कुछ आराम करूँगा और जो पेशकस निजामने मुझे देनेका वादा किया है, उसे लेकर मैं अपने घर वापस चला जाऊँगा। आप अपनी सल्तनत चलाइयेगा।"

महम्मद्शाहने नादिरशाहकी इन बातोंका कुछ भी उत्तर नहीं दिया, वरन् सब कुछ चुपचाप सुनकर बरदाश्त कर गये। संध्या समय वे वहाँसे अपने ख़ीमेमें वापस आये। नादिरशाहकी इन उदारताभरी बातोंका समाचार पाकर राज-दरबारके कर्म-चारी, सिपाही और सरदार सभी बड़े ख़ुश हुए।

दिल्ली-प्रवेश और क़त्ले-आम।

महम्मदशाह, नादिरशाहको पहले-पहल उसके ख़ीमेमें १६वीं-फरवरी सन् १७३६ को मिला था, जिसमें नादिरशाहने महम्मदशाहको बड़ी फटकारें बतायी थीं। उसके एक दिन बाद अर्थात् २०वीं फरवरीको निजामुलमुल्क, वज़ीर अजमुल्लाहखाँ तथा ग़ाज़ी उद्दीनखाँ नादिरशाहसे मिलने गये।

नादिरशाहने उन्हें बहुतसी चीज़ें इनाममें देकर उनका यथोचित सत्कार किया। फिर उसी दिन रातको नादिरशाहके यहाँसे वापस आकर वे महम्मदशाहसे मिलने गये। वहाँपर क्या बातें हुईं, कुछ पता नहीं। फिर पाँच सौ बेलदारोंको बुलवाकर महम्मदशाहने अपने मरे हुए सिपाहियोंको दफ़नानेका हुक्म दिया। इन सिपाहियोंमें बहुतसे तो ऐसे थे, जिन्होंने समुचित सेवा शुश्रूषा-तथा अन्न-जलके अभावसे अपने प्राण त्याग दिये थे। अन्नका भी भारी अकाल पड़ा। जहाँ नादिरशाहके पड़ावपर रुपयेका १०।१२ सेर गेहूँ मिलता था, वहाँ महम्मदशाहके सिपाही अपने पड़ावपर बड़ी कठिनाईसे एक सेर, डेढ़ सेरका गेहूँ पा सकते थे। वह भी भाग्यसेही मिलता था। इन सब बातोंसे महम्मदशाह बहुत घबरा उठा। कभी-कभी वह आत्महत्या

कर लेना चाहता था और कभी एक बार फिर भी नादिरशाहसे लड़कर अपने भाग्यकी आजमाइश कर लेना चाहता था। पर जबतक वह उसका कोई निर्णय भी नहीं कर सका था, कि उसके सरदार सरबुलन्दखाँ, महम्मदखाँ वग़ैरह नादिर-शाहसे जा मिले।

वहाँ उनकी बड़ी आदर-अभ्यर्थना हुई। अन्तमें और भी लाचार हो, २७ वीं फरवरीको महम्मदशाह नादिरशाहकी शरणमें चला गया। उसकी युद्ध-सामग्रियोंको नादिरशाहने अपने अधिकारमें कर उन्हें काबुलके रास्तेसे कन्धार भेज दिया। उसी दिन उसने अपने सिपाहियोंको तीन महीनेकी तनख्वाह इनाममें दी और दूसरे दिन देहलीकी ओर बढ़नेका विचार किया। पहले तो उसने तहमासखाँ वकीलकी अधीन-तामें चारसौ घुड़सवारोंको शाहजहानाबादके क़िलेपर क़ब्ज़ा करनेके लिये भेज दिया और फिर पीछेसे पहली मार्चको आप भी वहाँसे रवानः हुआ।

दोनों शाह अपने-अपने दल लेकर आगेकी ओर बढ़े। महम्मदशाहकी फ़ौज नादिरशाहकी फ़ौजके पीछे एक कोसके फ़ासलेपर थी। निजामुलमुल्क और सरबुलन्दखाँ वग़ैरह भी अपनी-अपनी फ़ौजके साथ, नादिरशाह द्वारा निर्धारित एक निश्चित क्रमसे आगे बढ़े। रास्तेमें पानीपत और सोनपतको जलाते और लूटते हुए वे ७वीं मार्चको सलीमाबादमें पहुँचे। यहाँसे महम्मदशाह कुछ सवार और सरदारोंको साथ लेकर नादिरशाहका समुचित स्वागत-सत्कार

करनेके लिये अपने क़िलेमें चला गया। तबतक रात हो चुकी थी। नादिरशाहने यह विचारकर, कि देहलीके लोग दुष्ट और निर्दय होते हैं, उस दिन रातके वक़ शहरमें डेरा डालना उचित नहीं समझा। वह शहरको घेरकर शहरके बाहर ही पड़ाव डालकर रह गया। दूसरे दिन प्रातःकाल अपने चुने हुए बीस हज़ार घुड़सवारोंको लेकर नादिरशाहने बड़ी सावधानीके साथ क़िलेके भीतर प्रवेश किया। बाहरसे तमाम शहर नादिरशाहकी फ़ौजसे अच्छी तरहसे घिरा हुआ था।

क़िलेके भीतर पहुँचनेपर महम्मदशाहने उसका बहुतही आदर-सत्कार किया। उसे बधाई दी और उसके साथ नाश्ता-पानी किया। सन्ध्या समयतक इन दोनोंमें बातें होती रहीं। इस बीचमें नादिरशाहने महम्मदशाहके प्रति बड़ी शिष्टता और विनम्रताका व्यवहार किया। उसने अपने सिपाहियोंको किसी भी शहरके बाशिन्देको लूटने, पीटने, काटने और मारनेकी सख़्त मुमानियत कर दी और साथ-साथ उन्हें यह भी धमकी दे दी, कि जो कोई ऐसा करेगा,उसे सख़्त सज़ा मिलेगी। सिपाहियोंका बर्ताव तो बहुत अच्छा रहा; पर नादिरशाह और उसकी पल्टनके भयसे शहरके रहनेवालेहो इधर उधर लुक-छिपकर रहते और नादिरशाहके किसी भी आदमीसे बातें नहीं करते थे। ६ वीं मार्चको नादिरशाहने सयादतख़ाँको अपने पास बुलाया और पेशकस वसूल करके न देनेके कारण वह उसपर बहुतही गुस्सा हुआ, बड़ी कड़ी-कड़ी बातें सुनायीं। सयादतख़ाँ इसके बाद दूसरेही दिन सुबहमें मर गया। कोई कहते, कि

नादिरशाहके भयसे उसने विष पान कर लिया और कोई कहते हैं, कि उसके दिलपर नादिरशाहकी इस बेइज़्ज़तीकी इतनी ज़बर्दस्त चोट लगी, कि उसके प्राण निकल गये! दूसरे दिन नादिर-शाहने सरबुलन्दखाँको बुलाया और उसे पेशकस वसूल करनेका हुक्म दिया। तहमासखाँ वकील वग़ैरहके साथ बातें करनेमें सरबुलन्दखाँको वहींपर साँझ होगयी। इसी बीचमें बाज़ारमें दूकानोंके बन्द होने और अन्न गिराँ बेचनेकी बात तहमासखाँ वकीलके कानोंमें पड़ी। उसने अपने नौ आदमियोंको दूकानें खुलवाने और रुपयेका दस सेर गल्ला बेचनेका पैग़ाम कहनेके लिये बाज़ारमें भेजा, पर इसमें व्यापारियोंको घाटा होता था; इसलिये नादिरशाहके इस हुक्मपर वे बिगड़ उठे। उन लोगोंने अपना एक दल संगठन किया और झुण्ड बाँधकर निकले। उन्हों-ने उन आदमियोंमेंसे कुछको, जो पैग़ाम लेकर आये थे और जो बाज़ारमें खानेकी चीज़ें ख़रीदने आये थे, मार डाला। साथ-साथ सन्ध्याको उन लोगोंने इस बातकी भी अफ़वाह बड़े ज़ोरोंसे उड़ा दी, कि नादिरशाह क़ैदकर लिया गया। कुछ लोगोंने तो यहाँतक कह दिया, कि उसे विष खिला कर मार डाला गया। इसपर जनता और भी भड़क उठी। बहुतेरे लोग—जिसे जो कुछ सामने मिला, वही लेकर—क़िलेकी ओर टूट पड़े। क़िलेके पासके पहरेदार, जो भीतर भाग गये, वे तो किसी प्रकार बच गये; पर जो बाहर थे, उनमेंसे बहुतेरे मारे गये। नादिरशाहके सिपाहियोंने क़िलेकी दीवारोंपर चढ़-कर, वहाँसे गोली आदि चलाकर जनताको किसी प्रकार

डरा-धमकाकर अपनी और क़िलेकी रक्षा की। सरदार कमी-रुद्दीनख़ांके दामादने, जिसने शहरमें गये हुए कुछ आदमियोंको बचानेके लिये अपने घरके भीतर छिपा रखा था, उस घरमें आग लगाकर उन्हें जला डाला।

दूसरे दिन प्रातःकाल अर्थात् रविवार ११ वीं मार्चको सवेरे आठ बजे, नादिरशाह क़िलेसे बाहर निकला। अपने घोड़ेपर सवार होकर, उपद्रवको शान्त करनेके लिये वह शहरकी ओर बढ़ा। रास्तेमें अपने जवानोंकी लाश देखकर उसका क्रोध भड़क उठा। उसने अपने सिपाहियोंके एक मज़बूत दलको उपद्रव शान्त करनेके लिये भेजा। पर साथ-साथ उसने उनसे यह भी कह दिया, कि पहले वे जनतासे सिर्फ़ डांट-डपटसे, मुनासिब तरीक़ेपर काम लेंगे। जब वे इस तरीक़ेसे क़ाबूमें न आयें, तब उन्हें क़त्लकर देनेका हुक्म भी उसने दे दिया। लेकिन उसने उन सिपाहियोंसे इस बातकी पूरी ताकीद कर दी, कि जो बेक़ुसूर और बेसरोकार हैं, उनसे वे कुछ भी न कहें।

नादिरशाहके हुक्मके मुताबिक़ सिपाही-दल शहरमें गया। उसने जनताके साथ विनम्रताका बर्ताव किया। इसपर जनता और भी ऐंठमें आगयी। उसने यह समझ लिया, कि नादिर-शाहकी ताक़त कमज़ोर पड़ गयी, इसीलिये ये सिपाही हमारी ख़ुशामद कर रहे हैं। इस दुर्भावके वशीभूत होकर वे और भी जोशमें आकर उन सिपाहियोंपर ईंट-पत्थर बरसाने और गोलियाँ चलाने लगे।

नादिरशाह उस समय चाँदनी-चौकके पास रसीउद्दौला

मस्जिदमें खड़ा होकर यह सब काण्ड देख रहा था। अन्धी जनता उसपर भी गोलियाँ और रोड़े फेंकने लगी। यहाँतक कि नादिरशाहपर भी गोली चलायी गयी। नादिरशाह तो बच गया, पर पासही खड़ा, उसका एक सिपाही इस गोलोकी चोट खाकर मर गया। इसपर नादिरशाह आग-बबूला हो उठा और शान्तिके सब विचारोंको त्यागकर उसने अपने सिपाहियोंको 'क़त्लेआम' करनेका हुक्म दे दिया। सिपाही तो पहलेसेही आग-बबूला हो रहे थे, सिर्फ़ अपने मालिकके हुक्मसे इस वक्ततक रुके हुए थे। नादिरशाहका हुक्म पातेही वे अच्छी तरहसे अपना हाथ साफ़ करने लगे। आबाल-वृद्ध-वनिता सब-के-सब उनकी तलवारों और बर्छियोंके शिकार बनने लगे। सिपाहियोंके सामनेसे एक भी आदमी बचकर जाने नहीं पाता। आदमियों-को कौन कहे, पशुतकको भी नहीं छोड़ा। वे रास्तेके सभी घरोंको लूटने और उनमें आग लगाने लगे। यह काम दो बजे दिनतक अर्थात् लगातार छः घण्टे जारी रहा। इतनीही देरमें सरा-फ़ासे लेकर ईद-गाहतक और मक़बरासे लेकर मिठाई पुलतक याने पाँच-छः कोसका रक़बा ताज़ा क़ब्रिस्तान बन गया। न एक घर देख पड़ता और न एक जिन्दा आदमीही नज़र आता। इस प्रकार पाँच-छः घण्टेमें डेढ़ लाख आदमी इस संसारसे सदाके लिये विदा हो गये।

दिनके दो बजे नादिरशाह चाँदनी-चौकसे क़िलेमें वापस आया। शहरको ऐसी दुर्गति और दुर्दशा देखकर महम्मद-शाह और निज़ामुल्मुल्क उसके पास आये। उन लोगोंने

देहलीका कत्लेआम।

"नादिरशाहने शान्तिके सब विचारोंको त्यागकर अपने सिपाहियोंको 'कत्ले आम' करनेका हुक्म दे दिया।"

[पृष्ठ—१०८]

नादिरशाहसे, नगर-निवासियोंकी ओरसे क़त्लेयाम बन्द करनेकी प्रार्थना की। नादिरशाहने इसे स्वीकार किया। उसने अपने सिपाहियोंको क़त्ल करना बन्द कर देनेका हुक्म दिया।

इसके बाद शहर भरमें उसने इस बातकी मुनादी करा दी, कि आगे फिर कोई आदमी ऐसी हरकत न करे। इस मुनादीके बाद शाहका क़त्लेयाम तो बन्द होगया; पर जो थोड़ी बहुत दक्षी-बचायी जनता थी, उसका कष्ट नहीं गया। मुर्दोंकी लाशके मारे शहरकी सड़कों और गलियोंमें चलना दुश्वार होगया। दुर्गन्धके कारण साँस लेनेका भी किसीको साहस नहीं पड़ता। कुछ मुसल्मानोंकी लाशें तो ज़मीनमें गाड़ दी गयीं और कुछ नदीमें फेंक दी गयीं। हिन्दुओंकी लाशें, एक साथ हज़ार-हज़ारकी तायदादमें, एक-एक जगह रखकर जला डाली गयीं। कितनीही स्त्रियाँ—विशेषतः हिन्दू स्त्रियाँ नादिरशाहकी फ़ौजके हाथोंसे अपनी बेइज्ज़तीकी आशंकाकर, उससे बचनेके लिये, अपने आप जलकर मर गयीं। बहुतोंने विष खा लिया। बहुतेरे मर्द और औरतोंने अपने आप फाँसी लगाकर जानें दे दीं।

इन मुर्दोंको दफ़नानेके बाद जब नगर-निवासियोंको फ़ुर्सत मिली, तब नादिरशाहके सिपाही उन्हें हज़ारों तरहसे सताने लगे। वे उनके गहने छीनते, माल और असबाब लूटते और घरमें घुसकर उनके सारे ज़ेवर-जवाहरात और रुपये निकाल लेते। इन सिपाहियोंका आतङ्क जनताके हृदयमें अब इतने ज़ोरोंसे बैठ गया था, कि एक सिपाही हज़ारों आदमियोंको एक साथ इकट्ठाकर मारता-पीटता, गालियाँ देता और बेइज़्ज़त करता।

हज़ारों तरहसे, रुपये और धनके लिये, दूसरे-दूसरे मालदारोंका पता बतानेके लिये, उन्हें कष्ट देता और सताता ; पर कोई चूँ तक नहीं कर सकता था।

इन सवारों और सिपाहियोंके लूट-खसोटका काम जब तमाम हो गया, तब नादिरशाहने धन इकट्ठा करनेका नया तरीक़ा निकाला। 'पेशकस' अर्थात् करोड़की भेंट वह अब भी भूला न था। महम्मदशाह तथा उनके सरदारोंकी ओरसे इसका इन्तज़ाम होनेमें ज़रा भी देरी अथवा ग़फ़लत होनेपर वह उन्हें लाखों बातें सुनाता लाख-लाख झिड़कियाँ देता। अन्तमें नादिर-शाहने सभी सरदार और उमरावोंसे रुपये वसूल करना शुरू किया। शहरमें उसने इस बातकी एक सूचना भिजवा दी, कि जिसके पास जो धन, रत्न अथवा अन्य बहुमूल्य पदार्थ हैं, वे सब मेरे पास भेज दें। जिनके पास नहीं हैं, वे आकर इस बातका यहाँ एकरारनामा लिख दें और अपने दस्तख़त करदें। लेकिन कहीं पीछेसे पता लगा, कि उनके पास धन-दौलत है, तो उनका सिर काट लिया जायेगा।

नादिरशाहने रुपये वसूल करनेमें ऐसी ज़ियादती और ज़ोर-ज़बर्दस्ती की, कि किसीकी भी इज़्ज़त नहीं बचने पायी। सर-दारसे लेकर दूकानदार तक सब-के-सब पीस डाले गये। कितने उमराव और सरदार तो अपनी इज़्ज़तके डरसे तमाम दिन महम्मदशाहके साथ उसके क़िलेमें छिपे रहते, रातको अपने घर जाकर खाना खाकर सोजाते, फिर कुछ अन्धेरा रहतेही महम्मदशाहके पास क़िलेमें दाख़िल होते। कितनोंहीकी बद्ध

और बेटियाँ इस रुपयेकी वसूलीमें बेइज़्ज़त हुईं। कितनेही धनी मानी और अमीरोंने कोड़े और बेत खाये। अपने अत्याचार और अनाचारके इन भिन्न-भिन्न उपायोंसे नादिरशाहने लगभग एक अरब धन हिन्दुस्थानसे वसूल किया। पर एक अरब तो सिर्फ़ कहनेको है, यथार्थमें वह इससे कहीं अधिकको रक़म ले गया होगा। कारण, जिस घोड़ेका मूल्य ५०० रुपया था, नादिरशाहके सरदारोंने उसका मूल्य केवल १०० रुपया ही ठहराया। जो रत्न माला दस हज़ार रुपयेकी थी, नादिरशाहकी कचहरीमें उसका दाम सिर्फ़ एक हज़ार रुपया लगाया गया। महम्मदशाहके ख़ज़ानेसे जो ज़वाहरात नादिरको मिले थे, उनके अतिरिक्त उसे २५ करोड़ रुपये नक़द भी मिले। निज़ामुलमुल्कने डेढ़ करोड़ रुपये दिये। कमरुद्दीन ख़ाँसे भी इतनीही रक़म वसूल की गयी। सयादतखाँसे १ करोड़ वसूल किया गया। सरवलन्दखाँको, ग़रीब होनेकी वजहसे, माफ़ी दे दी गयी। इस १ अरब रुपयेमेंसे ६० करोड़ नादिरने लिया और बाक़ी उसने अपने अमीर, उमरावों तथा सरदारों और सैनिकोंमें बाँट दिया। जो रक़म नादिरशाहके साथ गयी, उसका ब्यौरा इस प्रकार है:—

वस्तुओंका ब्यौरा—	मूल्य—
महम्मदशाह तथा उमरावों द्वारा प्राप्त रत्न और जवाहरातकी क़ीमत .	२५ करोड़ रुपये।
मोर-गद्दी तथा ६ अन्यान्य बहुमूल्य सिंहासन और मोहरोंकी क़ीमत .	६ „
सोने-चाँदीका सिक्का . .	२५ „

सोने-चाँदीकी चादरें ...	...	५ करोड़ रुपये।
हीरे, मोती और रत्नादि-जड़ित अन्यान्य वस्तुएँ ...	...	२ „
ग़लीचा, मसनद, चाँदनी आदि	...	३ „
युद्ध-सामग्री ..	...	१ „

इस प्रकार प्रचुर धन संग्रह करनेके पश्चात् नादिरशाहने अपने नौकरोंको तीन महीनेकी तनख़्वाह इनाममें दे डाली और ईरानमें इस बातका फ़रमान वहाँके शासकके पास अपने दूत द्वारा भेज दिया, कि ईरानी प्रजाजनोंका तीन वर्षका सारा राजस्व माफ़कर दिया जाये। इसके बाद उसने उन लोगोंको सज़ा देनी शुरू की, जो इस बलवेके नेता था। सैयद नेयाज़ख़ाँको—जिसने कई सवारोंको अपने घरमें बन्दकर उन्हें जलाकर मार डाला था,—फाँसीकी सज़ा दी गयी। राज-विद्रोह और बलवेके जो-जो प्रधान नेता थे, उनमें पहलेको फाँसी दे दी गयी और दूसरेका पेट फाड़ डाला गया। पश्चात् २७ वीं मार्चको नादिरशाहके पुत्र, नसीर उल्लाह मिरज़ाकी शादी औरङ्गज़ेबके पोता ऐशदान बक्सकी लड़कीसे हुई। विवाहोत्सवमें ख़ूब धूम-धाम मनायी गयी। आतिशबाज़ी और रोशनी भी हुई। महम्मदशाहने लड़केको ५० हज़ार रुपये नक़द दिये और ५० हज़ार पीछेसे भेज देनेका वादा किया।

इस प्रकार सब कामोंको तय करनेके पश्चात् नादिरशाहने १० वीं जूनको एक दरबार किया। उस दरबारमें उसने निज़ा-मुलमुल्क, सरबुलन्दख़ाँ और कमरुद्दीन ख़ाँ, वग़ैरहको भिन्न-भिन्न

खिल्लतें दीं। इसके बादमें प्रातःकाल आठ बजे महम्मदशाह अमीर, उमराव और मुसाहबोंके साथ नादिरशाहके पास दीवाने-आममें पहुँचे। नादिरशाहने उनका बड़ी धूम-धामसे स्वागत किया। उनके साथ नाश्ता पानी किया। फिर अपने हाथोंसे ताज महम्मदशाहके माथेपर रखकर, एक सिरपेच, एक बाजूबन्द, दो तलवार और एक कटार महम्मदशाहको भेंट की। फिर उसने महम्मदशाहको यों उपदेश दिया :—

"पहले तो आप अपने सब उमरावोंसे उनकी जागीर वापस लेलें। उनके दर्जे और कामके मुताबिक शाही ख़ज़ानेसे उन्हें तन-ख़्वाह दिया करें। आप किसी भी उमराव या सरदारको अपनी फ़ौज रखनेकी इजाज़त न दें। आप अपने पास ६० हज़ार घुड़-सवार हमेशा मौजूद रखें और हरएकको ५० रुपये माहवारी दिया करें। हर दस घुड़सवारपर एक दहबसी, हर दस दहबसीपर एक सुदीयल और हर दस सुदीयलपर एक हज़ारी (अफ़सर) मुकर्रर करें। अपने हरएक अफ़सरकी लियाक़त, नाम, ख़ानदान और क़ौमसे आप पूरी वाक़फ़ियत रखें। किसीको भी सुस्त और बेकार न बैठने दें। जब कोई मौक़ा आ पड़े, तब एक अफ़सरकी मातहतमें, जिसकी ईमानदारी, चाल-चलन, नेक-नीयती और हिम्मतपर आपको यक़ीन है, आप काफ़ी फ़ौज भेजें लेकिन ज्योंही वहाँ काम ख़त्म हो जाये, त्योंही आप उसे अपने पास वापस बुला लें। किसी अफ़सरको किसी हालतमें और कहीं-पर आप ज़ियादः दिनोंतक सैनिकोंके साथ ठहरने न दें; इसका नतीजा बहुत बुरा होता है। आप निज़ामुलमुल्कसे हमेशः चौक-

न्ना रहें, उसपर कभी एतमाद न करें। वह बड़ाही चालबाज़ और ख़ुदग़र्ज आदमी है। उसका हौसला इतना बढ़ा-चढ़ा है, जितना कि किसी रेआयेका कभी न होना चाहिये।"

महम्मदशाह उसकी इस नसीहतसे बड़ाही ख़ुश हुआ। उसने नादिरशाहसे इस बातका अर्ज़ किया, कि 'आपही अपनी मर्ज़ीके मुआफ़िक जिसे लायक समझें, सल्तनतके ख़ास-ख़ास ओहदोंपर भर्ती कर दें।' इसके उत्तरमें नादिरशाहने कहा,—

"यह काम आपके हक़में अच्छा नहीं होगा। इससे मेरी ग़ैरहाज़िरीमें आपका दबदबा जाता रहेगा। इसलिये जब मैं यहाँसे चला जाऊँ, तो आप जिसे जिस कामके लिये सबसे अच्छा समझें, उसे उस कामपर बहाल कर देंगे। इसपर अगर कोई बुरा माने या आपके बरख़िलाफ़ उठ खड़ा हो, तो आप मेरे पास ख़बर देंगे। मैं अपना आदमी भेजकर उसे ठीक करा दूँगा। अगर इससे भी काम न चले, तो मैं अपनी फ़ौज भी भेज दे सकता हूँ। ज़रूरत पड़नेपर मैं ख़ुद भी कन्धारसे चालीस दिनके भीतर वापस आ सकता हूँ। मेरे कहनेका मतलब यह है, कि किसी भी हालतमें आप मुझे दूर नहीं समझें।"

इतना कहने और शुक्रिया अदा करनेके बाद नादिरशाहने महम्मदशाहसे विदा माँगी। महम्मदशाह अपने सय्यास-महलमें चला गया। सब उमराव भी अपने-अपने घर गये। दूसरे दिन अर्थात् दूसरी मईको नादिरशाहने निज़ामुलमुल्क, सरबुलन्द ख़ाँ और दूसरे उमरावोंको अपने पास बुलाया, उन्हें अच्छी तरहसे समझाया-बुझाया और महम्मदशाहसे मिलकर उसके हुक्मके

मुनासिब चलनेकी सलाह दी। चलते-चलाते उसने उन्हें इस बातकी भी धमकी देदी, कि उसके देहली छोड़नेके बाद अगर वे महम्मदशाहके बरखिलाफ़ बग़ावत फैलाया करेंगे, तो उनको पूरी सज़ा दी जायेगी। कुछ उमरावोंसे उसने यह भी कहा था, कि महम्मदशाहको तख़्त देकर और निज़ामुलमुल्कको पनाह देकर उसने बड़ी ग़लती की। इसकी वजह यह थी, कि महम्मदशाह तख़्तपर बैठकर सल्तनतका इन्तज़ाम करनेके लायक़ नहीं और निज़ामुलमुल्क एक धोखेबाज़ आदमी है। पर नादिरशाह अब कर ही क्या सकता है? ऐसा करनेके लिये तो उसने पहलेसे ही अपनी ज़ुबान हार चुका था।

४थी मई सन् १७३९ ई०को नादिरशाहका पेशख़ाना सलीमाबाग़में पहुँचा। उसने इस बातकी मुनादी शहर और अपनी फ़ौजमें करा दी, कि फ़ौज-पड़ाव उखड़ जानेपर एक भी सिपाही या घुड़सवार पीछे न रह जाये और न शहरका कोई बाशिन्दाही उसे अपने घरमें छिपा रखे। कोई भी सिपाही या सरदार अपने साथ एक भी मर्द, औरत या ग़ुलाम न ले जाये। ऐसा वह तभी कर सकता है, जब कि बाज़ाप्ते लिखा-पढ़ी, सही और गवाही हो जाये और साथ-साथ वह औरत या मर्द उसके साथ जानेके लिये राज़ी हो। इस हुक्मके ख़िलाफ़ काम करनेवालेकी जायदाद ज़ब्त कर ली जायेगी और उसकी जान मार डाली जायेगी। नादिरशाहके इस फ़रमानने उसके बहुतेरे सिपाहियोंके मनसूबेपर पानी फेर दिया। सभी औरतें और ग़ुलामोंको उन्हें छोड़ देना पड़ा। जिस औरतके साथ जायज़ तरीक़े-

पर विवाह भी हो गया था, वह भी अपने घर, अपनी माँ-बापको छोड़ना पसन्द नहींकर फिर अपने घर वापस चली आयी। हाँ, कुछ ख़ास-ख़ास अफ़सर अपनी चालाकी और पाखण्डसे कुछ औरतोंके साथ शादीकर, उन्हें अपने साथ कुछ दूरतक ला सके थे ; पर नादिरशाहको जब इस बातकी ख़बर लग गयी, तो उन अफ़सरोंको उन्हें भी उनके घर वापस पहुँचा देना पड़ा।

६ठी मईको नादिरशाह सलीमाबाग़से रवानः हुआ। रवानः होते वक्त उसके पास जो पशु और मनुष्य थे, उनकी संख्या इस प्रकार है:—

हाथी	१०००
घोड़ा	७००
ऊँट	१००००
ख़ोजा	१००
क़ातिब	१३०
कारीगर	२००
बेलदार	३००
संगतराश	१००
बढ़ई	२००

इसमें १८००० पशु और १०३० मनुष्य थे।

सलीमाबाग़से नादिरशाहने अपनी फ़ौजको समेटकर लाहोर-की ओर रवानः होनेका विचार किया। वहाँपर उसे मालूम हुआ, कि फ़ौजको छोड़कर ४०० सिपाही और नौकर कहीं बाहर चले गये हैं। दिल्लीके कोतवाल सैयद फ़ौलादख़ाँको यह हुक्म देकर

कि वे उन्हें खोजकर नारदके साथ उसके पास भेज दें, नादिरशाह आगेकी ओर बढ़ा। फौलादखाँ, बहुत खोज-ढूँढके बाद ५० आदमियोंका पता लगा सका। उन्हें पकड़कर उसने नादिर-शाहके पास भेज दिया। नादिरशाहने फ़ौरन उनके सिर काट लेनेका हुक्म दे दिया। भला किसकी मजाल जो नादिरका हुक्म तामील न करे! पीछेसे कुछ और लोगोंका पता फौलाद-खाँने लगाया। पर जब नादिरशाहकी इस कड़ी सज़ाकी ख़बर उसे मिली, तब वह उन ग़रीबोंको एक-ब-एक कालके मुँहमें न ढकेलकर उन्हें महम्मदशाहके पास लाया। उसने उनसे सारा क़िस्सा कह सुनाया। इसपर महम्मदशाहको बड़ी दया आयी और उसने कहा,—"अगर ये ग़रीब नादिरशाहके पास भेज दिये जाते हैं, तो ज़रूरही वह इन सबको भी मार डालेगा। इसलिये इन बेचारे बेगुनाहोंका ख़ून करा, उनकी बद्दुआ अपने ऊपर क्यों लें? जाने दो; जहाँ इनकी तबीयत चाहे, चले जायें।"

नादिरशाह लगातार धावाकर थानेश्वरके पास पहुँचा। वहाँके कुछ लोगोंने, उसके सिपाहियोंपर, जब वे अपने जानवरोंके लिये चारा-घास माँग रहे थे, हमला किया और उन्हें मारा-पीटा। रातके वक़्त पड़ावमें घुसकर फौजके कुछ माल-असबाब भी वे लूट ले गये। इसपर नादिरशाहको बहुत क्रोध हो आया। उसने थानेश्वर और उसके आस-पासके गाँवोंको लूट लेनेका हुक्म दे दिया। बात-की-बातमें कितनेही गाँव बर्बाद हो गये और कितनेही लोगोंकी जानें भी चली गयीं। कर-नालके एक ज़मींदार द्वारा ५० हज़ार रुपये पानेपर और करनाल-

का नाम फतेहाबाद* रखनेका वादा करनेपर नादिरशाहने लूट-मार करना बन्द कर दिया। करनालसे बढ़कर नादिरशाह लाहोर पहुँचा। वहाँका सुबेदार ज़करियाखाँ उसकी पहुँचकी ख़बर पातेही घबरा उठा। उसने समस्त नगर-निवासियोंकी एक विराट् सभा की। सबकी रायसे यह बात तय पायी, कि ज़करियाँखाँ और शहरके कुछ प्रतिष्ठित लोग आगे बढ़कर नादिरशाहके सिपह-सालारके पास इस आशयका एक पत्र पेश करें,—

"यदि आप लाहोरमें क़त्लेयाम करनेके इरादेसे आगे बढ़ रहे हैं, तब तो हम लोगोंका सर आपकी तलवारके सामने है। अगर उसे लूटनेकी ख्वाहिश है, तब तो शहर एक तरहसे बिल्कुल वीरान हो रहा है। अगर रुपयेकी ख्वाहिश है, तो हम सब लोग मिलकर एक करोड़ रुपयेसे अधिक नहीं दे सकते। मतलब यह, कि हुज़ूरका जो हुक्म होगा, तावेदार हमेशा उसे बजालानेके लिये तैयार है। साथही यह भी समझ लें, कि यह एक छोटा शहर है, देहलीके सामने इसकी कुछ गिनतीही नहीं है। यहाँ लूट-मार करनेसे आपकी फ़ौजकी ख़्वाहिश कभी पूरी नहीं हो सकती।"

पत्र सिपहसालारके पास भेजा गया। सिपहसालारने उस पत्रको नादिरशाहके सामने पेश किया। नादिर-शाहने एक करोड़ रुपयेकी भेंट क़ुबूल कर ली और उसे

---

* 'फतेहाबाद'—अर्थात् विजयी लोगोंकी आवास-भूमि। यह नाम इस बातका स्मारक है, कि नादिरशाहने महम्मदशाहपर यहीं विजय पायी थी।

लेकर लाहोरको बचाते हुए, वह उसकी एक बगलसे गुज़रकर आगेकी ओर बढ़ गया। सिन्धु नदीको पारकर नादिरशाह हिन्दुस्तानसे विदा हुआ। हिन्दुस्तानके भिन्न-भिन्न शहरोंमें नादिरशाहके हुक्मसे क़त्ल किये गये मर्द और औरतोंकी तायदाद नीचे लिखे मुताबिक है:—

क़त्लेआमकी जगहें	जन-संख्या (लगभग)
लाहोरसे करनालतक (रास्तेके गाँवोंमें) .	८०००
करनालके युद्धमे . . .	१७०००
लड़ाईके पश्चात् मृत्यु (आहत मनुष्योंकी) . .	१४०००
करनालसे दिल्लीतक पानीपत और सोनपत आदि रास्तेके भिन्न-भिन्न गाँवोंमें .	८०००
क़त्लेआम (दिल्लीमें) ..	११००००
„ (इधर-उधरके गाँवोंमें) ...	२५०००
आत्म-हत्या द्वारा (नादिरशाह और उसकी फौजसे अपनी इज़्ज़त बचानेके लिये अथवा अन्यान्य कारणोंसे भी डूबकर, जलकर, विष-पानकर अथवा अपनेको फाँसीपर लटका कर आदि-आदि उपायोंसे)	६०००
लौटते समय थानेश्वर और उसके आस-पासके गाँवोंमें नादिरकी फ़ौजके हाथोंसे मारे गये लोगोंकी तायदाद . ..	१२०००
कुल जोड़ *	२०००००

*इस प्रकार केवल नादिरशाह और उसकी फौजके हाथोंसे लगभग दो लाख

नादिरशाहकी अनेकानेक कृपाओंके लिये धन्यवाद देता हुआ तथा अटक नदीके पश्चिमी भागका सारा अधिकार नादिर-शाहको सम्प्रदान करता हुआ, महम्मदशाहने जो दान-पत्र नादिर-शाहके पास भेजा था, पाठकोंके विनोदार्थ हम उसका आशय यहाँ दे देना आवश्यक समझते हैं। नादिरशाहको अने-कानेक उपाधियोंसे विभूषित करता हुआ, उसने लिखा थाः—

"थोड़े दिन पहलेकी बात है, कि आपके पाससे कितने ही राजदूत हिन्दुस्थानमें आये और वे कितने ही प्रकारके संवाद ले आये। उनकी इच्छाओंको पूर्ण करनेका मेरा विचार भी हुआ। इसके बाद महम्मद खाँ तुर्रानी मुझे कन्धारसे उन बातोंकी याद दिलानेके लिये पहुँचे। पर मेरे वज़ीर और सरदारोंने इस काममें बहुत विलम्ब कर दिया। हुज़ूरकी चिट्ठीका जवाब जानेमें भी बहुत देरी हो गयी। हमारे और आपके बीचमें इतनी ग़ल-तफ़हमी बढ़ गयी, कि आपकी फ़ौज हिन्दुस्थानकी सरहदपर पहुँच गयी। दोनोंके बीच आख़िरकार एक भारी लड़ाई हुई। ईश्वरकी इच्छाके अनुसार जीत आपकी ही हुई।—आप जम-शेदकी तरह बड़े हैं, सारे तुर्कोंके सरदार हैं।

"आपकी सत् संगतिका सुख अनुभव करनेका अवसर मुझे बड़े भाग्यसे प्राप्त हुआ। इसके बाद शाहजहाँबादमें पहुँचकर मैंने शाही ख़ज़ानेसे बहुमूल्य रत्न और जवाहिरात आपकी भेंट

मनुष्य कुछ दिनोंके अन्दर भारतवर्षके एक कोनेमें मारे गये। इससे कहीं जब-र्दस्त दर्जनों चढ़ाइयाँ भारतवर्ष पर हुई हैं। पाठक केवल नादिरशाहके आक्रमण द्वारा मारे गये मनुष्योंका अन्दाजा इससे कर सकते हैं

की। आपने भी कृपाकर उन्हें सहर्ष स्वीकार किया। पश्चात् अपनी स्वाभाविक दया और उदारताके कारण, अपने वंशकी भी गौरव-वृद्धि करते हुए आपने मेरी गद्दी और मेरा ताज फिर मुझेही वापस कर दिया। इन सारी कृपाओंके लिये, जो एक पिता भी अपने पुत्रके प्रति नहीं दिखला सकता, मैं अटक नदीके पश्चिमका अपना सारा प्रदेश, आपकी भेंट करता हूं। अर्थात् पेशावर और उसका सारा प्रदेश काबुल, ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान हज़ारीरान और उसकी घाटियाँ तथा बुख़ारा, सक्कर और ख़ुदावादके क़िले, बलूचिस्तान वग़ैरह सब मैं आपकी भेंट करता हूँ। इन प्रदेशोंकी ज़मीनसे लेकर जानवर और मनुष्यतक सभी जीवोंपर आजसे आपका क़ब्ज़ा हुआ। आजसे इन जगहोंको अपने राज्यमें मिलाकर अपने प्रबन्धकर्त्ताओंको नियुक्तकर इन प्रदेशोंका शासन और संचालन आप अपने हाथोंमें ले लें। मेरे नौकरों और प्रबन्धकोंका उन सब स्थानोंसे अब कोई सरोकार नहीं और न अब वे वहांके प्रजाजनोंसे किसी प्रकारका कर वसूल करनेकेही हक़दार हैं। अटक नदीके इस पारकीही सारी ज़मीन हिन्दुस्थानी सलतनतमें रही।

"[शाहजहांबाद, तारीख़ चौथी मुहर्रम, ११५२ अर्थात् दूसरी अप्रेल सन् १७३६ ईस्वी।]"

यह दान-पत्र पढ़कर नादिर बड़ा प्रसन्न हुआ। महम्मदशाहके आग्रहको उसने तत्क्षणही स्वीकार कर लिया। प्रदत्त-प्रदेशोंकी स्थिति क्रम-बद्ध रहनेके कारण नादिरशाहको उनके शासन-कार्य्यमें ज़रा भी कठिनाई उपस्थित नहीं होती थी और उन प्रदेशोंका कुछ हिस्सा तो नादिरशाहने पहलेसेही ख़ुरासान

प्रान्तमें मिला रखा था। नादिरशाह अब खुशी-खुशी दिल्लीसे विदा हुआ। इसके पश्चात् लाहोरसे आगे बढ़नेतकको घटनाका विवरण पहले ही लिखा जा चुका है।

अब नादिर सिन्धु नदीके तटपर पहुँचा। आगे बढ़नेके लिये जब उसकी सेना, नदीके उस पुलसे होकर, जिसे नादिरशाहने जाते समय बना रखा था, पार कर रही थी, उसी समय पुल टूट गया। नादिरशाहकी आधी सेना इस पार छूट गयी और आधी उस पार चली गयी। लाचार होकर नादिरशाहको अपनी बाक़ी सेनाको नावपर पार कराना पड़ा। अपार सेनाके साथ नावपर पार उतरना एक दिनका काम नहीं था। इसी काममें गरमीका आधा मौसम बीत गया। तेज़ लू चलनेके कारण नादिरशाहकी सेना एक प्रकारसे झुलस गयी।

इसी समय नादिरशाहने बोख़ारा और ख़ेरजमके शासकोंपर अपना पुराना बुख़ार उतारनेका विचार किया। जिस समय नादिरशाहने कन्धारपर चढ़ाई की थी, उसी समय उसका लड़का रज़ाकुलीख़ाँने भी इन दोनों शासकोंपर चढ़ाई की थी। यद्यपि रज़ाकुलीख़ाँने उन्हें हरा दिया था, तथापि उन्हें पूर्णरूपसे परास्त करनेका काम उसने अपने पिताके लिये छोड़ रखा था। इसी विचारसे, नादिरशाहने, अपने कितनेही कारीगरोंको बेड़ा बनानेकी आज्ञा दी। इससे नादिरशाहका अभिप्राय यह था, कि जिस समय वह तुर्कों अथवा तातारियोंपर आक्रमण करेगा, उस समय उसे रसद, हथियार और सिपाही आदिको पार करनेमें इन बेड़ोंसे बड़ी मदद मिलेगी।

सिन्ध नदीको पारकर जब नादिरशाह वापस जा रहा था, तब कई जगहके शासकोंने उसके रास्तेमें बाधा डाली। यद्यपि नादिरशाहने सबका मान मर्दन कर दिया, तथापि सिन्धके एक स्वतन्त्र प्रदेशके शासककी एक हरकतसे उसे वहाँपर कुछ और दिनोंतक ठहर जाना पड़ा। बात यों है:—

यहाँका शासक नादिरशाहके प्रति पहले बड़ा भक्ति-भाव रखता था। उससे सदा पत्र-व्यवहार करता था। पर वह दिलका बड़ाही कमज़ोर था। जब उसने देखा, कि नादिरशाह भारतके सभी शासकोंको परास्तकर सबसे रुपये वसूल कर रहा है, तब वह बहुत भयभीत होगया। उसके पास बहुत धन था, इसलिये वह अपनी राजधानी छोड़कर अमरावती भाग गया और वहाँकी एक पहाड़ी खोहमें उसने अपनी सारी सम्पत्ति छिपाकर रख दी और फिर लौट आया।

जब नादिरशाहने यह बात सुनी, तब उसने अपने सिपाहियोंको उसका पीछा करनेका हुक्म दिया। सिपाहियोंने उसपर हमला किया। वह सपरिवार पकड़कर नादिरशाहके पास लाया गया। नादिरशाहने डर दिखलानेके विचारसे उसे कई दिनोंतक क़ैद कर रखा। यद्यपि नादिरशाहके मनमें उसका धन लेनेका लोभ नहीं था, तथापि वह उसकी इस चालको बेवक़ूफ़ीकी चाल ठहराना चाहता था। अन्तमें नादिरशाहके भयके कारण लाचार होकर अपने सारे गुप्त रहस्यको उसे खोलनाही पड़ा। तब नादिरशाहने भी उसे छोड़ दिया। उसका राज-पाट उसेही सौंप दिया और उसे सिन्ध-प्रदेशका शासक मुक़र्रर

किया। इसके बाद वहाँके कुछ हिस्सोंको अपने अधिकारमें कर उसने अपने अफ़सरोंको बाँट दिया।

वहाँसे नादिरशाह नादिराबाद पहुँचा। यह वही स्थान है, जिसे कन्धारपर क़ब्ज़ा करते समय नादिरशाहने अपने स्मारक स्वरूप इसे बनाया था। वहाँपर पाँच दिनोंतक ठहर कर वह २६ वीं मईको हेरातमें पहुँचा। हेरातमें उसका भतीजा अली कुली और छोटे शाहज़ादे इमामकुली और शाहरुख़ आकर उससे मिले। नादिरशाहने इन सबकी ख़ातिर-बात बड़ेही प्रेमसे की। इन बच्चोंने नादिरशाहको इस बातकी भी सूचना दी, कि बड़े शाहज़ादे रज़ाकुलीखाँ किसी ख़ास ज़रूरी काममें फसे रहनेके कारण अभी आकर शाहसे मिल नहीं सके हैं। वे बाद्-ग़ीजमें शाहका दर्शन करेंगे। वहाँपर कुछ दिनोंतक ठहरकर नादिरशाहने भारतपर विजय करनेके कारण, विजयोत्सव मनाना आरम्भ किया। भारतमें प्राप्त सम्पत्तिकी इसने अपने यहाँ एक प्रदर्शनी भी खोल दी। उस प्रदर्शनीमें जगत्प्रसिद्ध मयूर-सिंहासन भी रखा हुआ था। इस सिंहासनको देखकर नादिरशाह बड़ाही प्रसन्न रहता था। वहींपर अपने कारीगरोंको ठीक उसी ढंगका, उतनीही ऊँचाई और उसी काटका एक दूसरा-मयूर-सिंहासन तैयार करनेका हुक्म दिया। मतलब यह, कि हेरातमें बड़ी धूम-धामके साथ विजयोत्सव मनाया। शाहज़ादोंको प्रचुर धन-रत्न उपहारमें दिया। एक सप्ताहके लगभग यहाँ रुककर नादिरशाह अपने बड़े पुत्र रज़ाकुलीखाँसे मिलनेके लिये बाग़-दीज़में पहुँचा। वहाँपर रज़ाकुलीखाँ पहलेसेही एक बड़ी भारी

सेनाके साथ नादिरशाहका स्वागत और अगवानी करनेके लिये खड़ा था। ज्योंही नादिरशाह रज़ाकुलीके पास पहुँचा, त्योंही उसने दौड़कर नादिरशाहका ताज-पंख चूम लिया। उसने शाह और सल्तनतके प्रति अपनी अधीनता सहर्ष स्वीकार की। नादिरशाहने भी उसका प्रेमपूर्वक आलिङ्गन किया। ईरानका राज-काज सम्हालने और वीरता-पूर्वक उसकी रक्षा करनेके लिये नादिरशाहने उसकी मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की। बागदोज़में कुछ दिनोंतक ठहरकर नादिरशाहने अपने पुत्रके साथ सुख-पूर्वक अपना समय व्यतीत किया। उसने रज़ा-कुलीखांकी फ़ौजका वहींपर निरीक्षण भी किया। सिपाहियों को समुचित पुरस्कार दिया और अपने पुत्र रज़ाकुलीख़ांको भी उपहार-स्वरूप राज-मुकुट और बख़्तर दिया। पश्चात् अपनी सेनाको लेकर तातारियोंपर हमला करनेके लिये वह बलख़ की ओर बढ़ा। रज़ाकुली और अलीकुली भी अपने-अपने सैनि-कोंके साथ अपने पिताके पीछे-पीछे रवानः हुए।

नादिरशाहका तातारियोंसे युद्ध।

ठीक वोखारेके अबुलफ़ैज़का हाल पिछले परिच्छेदमें चुके हैं। जिस समय नादिरशाह देहलीमें था, उस वोखारेके शासक अबुलफ़ैज और ख़ेरजमको शाहज़ादा दोनोंने मिलकर दूसरी बार ईरानी सल्तनतकी सरहदपर किया। खूब लूट-खसोट मचायी, ईरानी प्रजा और शाहज़ादा रज़ाकुलीख़ांके दिलमें भी दहशत पैदा कर दी। नादिरशाहको इस बातकी जब ख़बर लगी, तब वह बहुत गुस्सा हुआ और उसने ठान लिया, कि हिन्दुस्थानसे वापस जानेके बाद इन्हें इनकी करतूतका मज़ा चखाऊँगा। रज़ाकुलीख़ाँ एक भारी फ़ौजके साथ इनके मुक़ाबिलेको रवानः हुआ। उसके पहुँचनेके पहलेही वोख़ारे-का शासक भाग गया। पर इलवर औक्ससको पार कर खुरा-सानमें लूट-मार मचानेके ख़यालसे बढ़ आया। रज़ाकुलीख़ांके पहुँचनेकी ख़बर पातेही वह अपने क़िले, अबीउर्दमें भाग गया और उसने समझा, कि यहाँपर किसी बातका भय या ख़तरा नहीं है। लेकिन वहांसे अपना दल मज़बूतकर ज्योंही वह पीछे हटनेका विचार कर रहा था, त्योंही एक-ब-एक उसे ख़बर लगी, कि रज़ाकुलीख़ाँ आगे बढ़ रहे हैं। इस ख़बरसे उसकी सेना

बहुत घबरा उठी। सारी फ़ौज तितर-बितर हो गयी। इलबर भी भागकर अपनी राजधानी खेरज़ममें चला गया; लेकिन इन दोनों राजाओंकी सज़ा अभी पूरी नहीं हुई है। नादिरशाहने इन्हें समुचित दण्ड देनेकी जो प्रतिज्ञा दिल्लीमें की थी, वह अब पूरी होनेवाली है।

अस्तु; पाठकोंको याद होगा, कि सिन्धु नदीके तटपर पहुँचतेही नादिरशाहने अपने कारीगरोंको औक्सस नदी पार करनेके लिये चालजमें पहलेसेही बेड़ा बनानेको भेज रखा था। नादिरशाहके हुकमके मुताबिक वहाँ ग्यारह सौ बेड़े बनकर तैयार थे। बाग़-दीज़से चलकर अपनी फ़ौजके साथ ३१वीं जुलाईको नादिरशाह औक्सस नदीके तटपर पहुँचा। बेड़े तो वहाँ पहलेसे तैयार ही थे, झट-पट नदीको पारकर नादिरशाह इस दिनके भीतरही दल-बल सहित वोखारेकी सरहदपर आ धमका।

वहाँके बहुतसे सरदार और सुबेदार नादिरशाहके सिपहसालारसे आ मिले, तथा उसे नादिरशाहका प्रतिनिधि समझकर उन लोगोंने उसका बहुत आदर-सत्कार किया तथा सबने अपनी-अपनी भेंट चढ़ायी। इसी बीचमें नादिरशाहके दोनों लड़के रज़ाकुलीख़ाँ और अलीकुलीख़ाँ भी वहाँपर पहुँच गये। नादिरशाहके हुकमके मुताबिक आक्सस नदपर जो पुल बाँधा जा रहा था, उसके ख़त्म होनेपर नादिरशाहकी ईरानी फौजके, झुण्ड-के-झुण्ड सैनिक नदीको पारकर तातारी प्रदेशमें उतरने लगे। सैनिकोंका यह जमघट देखकर वहाँका शासक बेतरह घबरा उठा। वह समझ गया, कि नादिरशाहकी फौजसे

मुक़ाबिला करनेमें सिर्फ़ उसका राज्यही नहीं नष्ट हो जायेगा, वरन् उसपर और उसके परिवारपर भी आफ़त आजायेगी। इस विचारसे उसने अपने वज़ीरे-आज़मको नादिरशाहकी सेवामें भेजा। नादिरशाहने भी उसके आगमनका समाचार पाकर उसे अपने डेरेमें बुलवाया, उसके साथ बड़ी सुजनता और सभ्यताका वर्त्ताव किया। पश्चात् वज़ीरे-आज़मने नादिरशाहकी सेवामें अपने राजाका, जो निवेदन उपस्थित किया, उसका आशय इस प्रकार है:—

"विश्व-विख्यात ईरानके शाहनशाह नादिरशाहकी सेवामें तूरानके राजाका यह नम्र निवेदन है, कि आपकी विजय-ध्वजा चारों तरफ़ फहरा रही है। हिन्दुस्थान विजयकर जिस प्रकार आपने अपने बल और पराक्रमका परिचय दिया है, उससे मैं पूर्ण-तया परिचित हूं। किसीसे भी आपका शौर्य और साहस छिपा नहीं है। ऐसी अवस्थामें तूरानका एक साधारण राजा ईरानके शाहनशाहके साथ भला क्या मुक़ाबिला कर सकता है? प्रथम तो आपको मुझसे लड़नाही नहीं चाहिये। यदि आप लड़नेके लिये बिल्कुल आमादा हो जायेंगे, तो भी मैं आपसे कदापि नहीं लड़ूंगा। मेरी तो हार्दिक इच्छा है, कि मैं ईरानके शाहनशाहके चरणोंमें सदा सर झुकाये रहूं। उनसे सदा मित्रता एवं प्रेमका सम्बन्ध बनाये रखूं। आपके सामने रण-क्षेत्रमें खड़ा होना मेरे साहस और सामर्थ्यसे बाहरकी बात है और मेरे जैसे सामान्य मनुष्यके साथ लड़नेमें आपकी शोभा भी तो नहीं होती! कारण, जिसकी विजय-वैजयन्ती दिग्दिगन्तमें फहरा रही है और

जिसने अपने प्रबल पराक्रमसे मुग़लिया सल्तनत जैसे प्रबल साम्राज्यकी भी नींव ढीली कर दी है, उसका एक तुच्छ शासकपर आक्रमण करना कदापि शोभा-स्पद नहीं। अतएव तूरानका यह तुच्छ राजा आपके आधिपत्यको सहर्ष स्वीकार करता है तथा अपनी यह तुच्छ भेंट अपने वज़ीर द्वारा आपके चरणोंमें प्रर्णित कर आशा करता है, कि जिस उदारता और सज्जनताके साथ आपने हिन्दुस्थानके बादशाह महम्मदशाहके साथ वर्त्ताव किया है, वैसाही वर्त्ताव आप इसके साथ भी करेंगे।"

नादिरशाहने इसका उत्तर इस प्रकार दियाः—

"आपके राजाने जो सन्देश भेजा है, उसके अक्षर-अक्षरसे विनम्रता टपक रही है। मेरे आक्रमणके पूर्वही उन्होंने जो मेरी अधीनता स्वीकार करली, इसके लिये उन्हें धन्यवाद है। साथही आप मेरी ओरसे उन्हें इस बातकी भी सूचना दे दें, कि यदि वे अपनी रक्षा अति शीघ्र चाहते हैं, तो वे खुद मेरे पास आ जायें।

"वे इस बातका पूरा विश्वास रखें, कि एकबार किसी बातका वादाकर फिर उसके प्रति विश्वास-घात करना नादिरका काम नहीं है। यदि उन्हें मेरी अधीनता स्वीकार है, तो वे मेरे पास चले आयें। जिस प्रकार नादिरने हिन्दुस्थानमें किया है, उसी प्रकार वह उनके मस्तकपर भी अपने हाथोंसे मुकुट रखेगा और भविष्यमें भी सदा पारस्परिक मैत्रीका बन्धन दृढ़ रहेगा।"

नादिरशाहका यह उत्तर पा, वज़ीरे-आज़म फ़ौरन अपने राजाके पास गया। उसने उसने सारी बातें कह सुनायीं। नादिरशाहका उत्तर सुन, तूरान अथवा तातारियोंका राजा

बड़े पसोपेशमें पड़ा। वह दिन रात यही सोचने लगा, कि जायें या नहीं? उसके सामने एक बड़ा विकट प्रश्न आ उपस्थित हुआ। एक ओर अगर नादिरशाहके हुक्मका अनादर करता है, तो दूसरी ओर अपनी मान-मर्यादा मिट्टीमें मिलाता है। वह सोचने लगा, कि "नादिरशाहका मुक़ाबिला करनेमें भी तो मैं बिल्कुल असमर्थ हूँ। कारण, मेरी सेना सजी-सजायी नहीं और न लड़ाई करनेके लिये मेरी ओरसे किसी प्रकारकी तैयारीही की गयी है।" अन्तमें अपनी डाँवाडोल मतिको स्थिर कर, नादिरशाहके पास जानाही उसने अच्छा समझा और बेधड़क उसके पास चला गया।

वहाँ जा, बड़ी विनम्रतासे उसने नादिरशाहको प्रणाम किया। नादिरशाहने भी उसे बड़ी शिष्टतासे अपनेपास बैठाया और उसका यथेष्ट आदर-सत्कार किया। दोनोंमें बड़ी देरतक बातें हुई। अन्तमें नादिरने प्रस्ताव किया, कि आक्सस नदी ईरानी और तातारी राज्योंके बीचकी सीमान्त-रेखा क़ायम की जाये। इसके उस पारका सब स्थान ईरानी राज्यमें मिला दिया जाये और पारस्परिक मैत्रीका स्मारक स्वरूप-तूरानके राजा अबुलफ़ैजकी लड़कीसे नादिरशाहके भतीजेसे विवाह कर दिया जाये।

नादिरकी बातको कौन काट सकता था? सुतरां, नादिरके प्रस्तावको अबुलफ़ैजने हार-मानकर—लाचार होकर—स्वीकार कर लिया। आक्सस नदीके दक्षिण और पश्चिम भागका सारा हिस्सा, साथ-साथ बाल्ख़ और उसके अन्दरके खानोंको भी अबुलफ़ैजने नादिरशाहके हवाले किया। पश्चात् अपनी

कन्याकी शादी उसने नादिरशाहके भतीजे अलीकुलीखाँसे कर दी और इस प्रकार नादिरशाहको सन्तुष्टकर अपनी जान और मालकी रक्षा की।

अपने भतीजे अलीकुलीखाँकी शादी अबुलफैजसे करनेके बाद दूसरेही दिन अर्थात् सन् १७४० ई०के अगस्त महीनेके तीसरे सप्ताहमें नादिरशाह अपने दल-बलके साथ ख़ारेज़मकी ओर बढ़ा। ख़ारेज़म एक बहुत बड़ा राज्य है। यह आक्सस नदीके किनारेपर स्थित है और जहाँ आक्सस नदी कास्पियन समुद्रसे मिलती है, वहाँतक फैला हुआ है। इसमें बहुत बड़े-बड़े शहर और दुर्भेद्य दुर्ग हैं। यही कारण है, कि बहुतेरे बादशाह इस राज्यपर अपनी आँख गड़ातेही रह गये, पर कोई इसे अपने काबूमें न ला सका था।

ख़ारेज़मपर नादिरशाहके आक्रमण करनेका कारण पाठक पढ़ चुके हैं। यहाँका प्रधान 'दुर्ग' हज़ारा है, जो एक विशाल और दुर्भेद्य चहारदीवारीके अन्दर बना हुआ है। लगभग डेढ़ महीनेतक लगातार चलकर नादिरशाह १३ वीं अक्टूबरको हज़ारा पहुँचा। नादिरशाहके पहुँचनेका समाचार पातेही वहाँका राजा अलबर अपने दुर्गमें जा छिपा। नादिरशाह इस दुर्गकी प्रशंसा पहलेसेही सुन चुका था। अतएव इसपर किसी प्रकारसे अपने उत्साहका दुरुपयोग और अपव्यय न कर, उसने एक दूसराही उपाय सोच निकाला। वह ख़ारेज़मकी राजधानी ख़ैवापर आक्रमण करनेके बहानेसे आगे बढ़ा। यहाँ उसका उद्देश्य यह था, कि जब हमारी फौज ख़ैवापर

आक्रमण करती हुई आगे बढ़ती जायेगी, तब ख़ामख़ाह इलवर अपनी राजधानीकी रक्षा करनेके लिये हज़ारासे निकलकर खैवाकी ओर बढ़ेगा।

नादिरशाहका यह अनुमान बहुत ठीक निकला। ज्योंही उसकी फ़ौज हज़ारासे कुछ दूर आगे बढ़ी, त्योंही इलवर अपने हज़ारा दुर्गसे निकलकर खैवाकी रक्षा करनेके लिये एक दूसरे मार्गसे आगे बढ़ा। बस, अब नादिरशाहकी फ़ौजने रास्तेमेंही उसे घेर लिया। महज़ मामूली एक लड़ाई हुई। इलवर और उसकी फ़ौज हार गयी। बहुतेरे लोग मारे गये। इलवर अपनी जान ले, एक छोटेसे कमज़ोर क़िलेमें जा छिपा। नादिरशाहकी फ़ौजने उसे वहाँपर भी जा घेरा। इलवर अपने चन्द साथियोंके साथ उस क़िलेके भीतरसेही नादिरशाहकी विशाल फ़ौजका मुक़ाबिला करनेका दुस्साहस करता था। अन्तमें नादिरशाहकी फ़ौजने उस क़िलेको तोड़ डाला। उसके भीतर घुसकर इलवरको पकड़कर वे लोग उसे नादिरशाहके सामने लाये। नादिरशाहने उसके हठ और दुराग्रहपर क्रुद्ध हो, उसे मार डालनेका हुक्म दे दिया। अपने हठ, दुराग्रह और मूर्खताके कारण इलवरने इस प्रकार अपनी जान गँवायी। ख़ारेज़मके सारे राज्यपर नादिरशाहका अधिकार हुआ।

ख़ारेज़मपर विजय प्राप्त करनेके पश्चात् रज़ाकुली और अलीकुलीने मशहद वापस चले जानेके लिये नादिरशाहकी आज्ञा माँगी। क्योंकि जबसे उनके भाई नसरुल्लाख़ाँ, नादिरशाहके साथ, हिन्दुस्तानपर चढ़ाई करने गये, तबसे आजतक अर्थात् पाँच वर्षके

भीतर उन लोगोंकी एक दूसरेसे मुलाकात नहीं हुई थी। नादिर शाहकी आज्ञा पा, दोनों अपने भाईसे मिलनेके लिये चले गये। इधर नादिरशाह नव-प्राप्त राज्यमें कुछ दिनोंतक ठहरकर वहाँकी राज्य-व्यवस्था ठीक करनेमें लग गया। यहाँका राज्य-प्रबन्ध अबुलफ़ैजके भाई अबुलताहिरके हाथोंमें सौंपकर वह वहाँसे रवानः हुआ। आक्सस नदीको पारकर वह दिसम्बर महीनेके मध्य भागमें मेरूनगरमें पहुँचा। वहाँ कुछ दिनोंतक विश्राम लेनेके बाद वह अपने क़लातके क़िलेपर पहुँचा। यह स्थान नादिरको बहुतही प्रिय था। उसने पहलेसेही विचारकर रखा था, कि अपने जीवनके शेष भागमें, राज-काजके सभी झंझटोंसे तर्के-ताल्लुककर, अपनी आयुके अन्तिम दिन, सुख और शान्ति पूर्वक यहींपर व्यतीत करूँगा। फलतः यहाँपर उसने एक परम सुरम्य और विशाल भवन निर्म्माण करनेकी आज्ञा अपने कर्म्मचारियोंको दी। इसके मुताबिक हम्मामख़ाना, दीवानख़ाना, सरदारख़ाना और आमख़ाना, वग़ैरह तैयार होने लगे। इनके निर्म्माणमें पानीकी तरह धन बहाया जाने लगा। नादिर दिल्लीसे जो विपुल सम्पत्ति लादकर ईरानमें लाया था, वह क़लातको 'दिल्ली' बनानेके प्रयत्नमें लगायी जाने लगी। अन्तमें क़लात ईरान देशमें एक सबसे प्रबल, प्रशस्त और सुरक्षित दुर्ग बन गया। दिल्लीसे लायी हुई सम्पत्ति भी यहींपर रखनेके लिये ढोकर लानेको आज्ञा उसने अपने कर्म्मचारियोंको दे दी।

क़लातको सब प्रकारसे श्री-सम्पन्न बनाकर नादिर सन् १७४१ ई० के दिसम्बर मासके अन्तिम सप्ताहमें वहाँसे मशहदके

लिये रवानः हुआ। उसने बड़ी धूम-धामसे मशहद नगरमें प्रवेश किया। शुरू जनवरीसे लेकर १० वीं मार्चतक नाना प्रकारके उत्सवोंके कारण मशहदका दृश्यही कुछ और हो रहा था। कहीं गाना-बजाना, कहीं नाच-रङ्ग और कहीं रोशनी-आतशबाज़ी आदिसे ऐसा मालूम पड़ता था, कि इतने दिनोंतक वहाँपर लगातार दीवालीही मनायी जा रही थी।

इतनी धूम-धामसे उत्सव मनानेका कारण भी यथेष्ट था और वह यही, कि पाँच वर्षकी छोटी अवधिमें नादिरशाहने अनेक बड़े-बड़े राजाओंको परास्त किया, अनेकोंको अपने वशमें किया और अनेक देशोंको अपने राज्यमें मिला लिया था। यहाँ तक, कि इन्हीं पाँच वर्षोंके भीतर ईरानी सल्तनतका विस्तार आक्सस नदीसे लेकर सिन्धु नदीतक हो गया।

पर इतनेपर भी लोभी तथा असन्तोषी नादिरका हौसला पूरा नहीं हुआ। यूफ्रेटीज़ और टिग्रीज़ नदियोंके तटपर स्थित तुर्कोंकी जगहको भी उसने अपने राज्यमें मिला लेनेका विचार किया। साथ-ही-साथ रूसियोंके साइप्रस और अरेक्सस प्रदेशपर क़ब्ज़ा कर लेनेका भी इरादा किया। परन्तु अभी उसे अपने भाई जाहिरदौलाकी असामयिक मृत्युका बदला चुकाना बाक़ी था, इसलिये उसने कुछ दिनोंतक विश्राम करनेके पश्चात्, शेरवान पर्वतकी ओर कूच किया। तीसरी मईको, जब वह मजेन्द्रान प्रदेशके एक जङ्गलसे होकर गुज़र रहा था, कि एक झाड़ीके अन्दरसे किसी दुष्टने उसकी ओर निशाना करके एक बन्दूक़ चलायी। गोली नादिरके दाहिने हाथमें लगकर उसके घोड़ेके

सिरमें लगी। घोड़ा ज़मीनपर गिर पड़ा और मर गया। शाहज़ादा उस समय नादिरशाहके साथही जा रहा था। इस आकस्मिक घटनासे उसकी तबीयत बिल्कुल घबरा उठी। बहुतेरे कर्म्मचारी और मुसाहब इस षड्यन्त्रका मूल प्रतिपादक रज़ाकुलीखाँकोही बतलाते हैं। पर नादिरशाहके समयके अथवा उसके बादके जितने इतिहास-लेखक होगये हैं, वे उसे निर्दोष बतलाते हैं। इस कामकी जड़में कौन था, इस बातका कोई भी ठीक-ठीक पता न लगा सका। हाँ, इस बातपर दृष्टि रखते हुए, कि मुसल्मानी दरबारोंमें राज्यके लिये पिता-पुत्र अथवा भाईकी हत्या कोई विशेष आश्चर्य्य-जनक बात नहीं। यह सम्भव भी हो सकता है, कि रज़ाकुलीखाँकी साज़िशसे यह कारवाई की गयी हो; लेकिन किसी विशेष प्रमाणके अभावमें केवल अनुमानका किला बनाना इतिहास-लेखकका कर्त्तव्य नहीं है। अतः जब रज़ाकुलीखाँके सम्बन्धमें कोई भी प्रमाण—प्रत्यक्ष अथवा गौण, प्राप्त नहीं, तब रज़ाकुलीखाँके मत्थे दोष मढ़ना नितान्त अनुचित है। धर्म्म-शास्त्र अथवा न्याय-शास्त्रका भी तो यही नियम है।

दिलावर नामक एक वर्बर सरदारके लड़केकी साज़िशसे यह घटना हुई थी, ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं। ख़ैर, आततायी नादिरशाहपर गोली चलाकर एक घने जङ्गलकी ओर भाग चला। नादिरशाहके सिपाहियोंने उसका पीछा किया। अन्तमें वह पकड़ा गया और मार डाला गया। इसके पश्चात् नादिरशाहने देगिस्तानपर अपना अधिकार जमाया। उसके

बल, विक्रम और पराक्रमकी चर्चा सुन-सुनकर उस प्रदेशके जितने असभ्य और बर्बर सरदार थे, सब एक-एक कर नादिर-शाहके पास आने लगे और नादिरशाहसे क्षमा-प्रार्थना करते हुए, सबने उसकी अधीनता स्वीकार करनेकी प्रतिज्ञा की।

रेगिस्तानसे नादिर फिर अपनी राजधानीमें वापस चला आया। नये-सालका प्रथम मास उसने बड़े-बड़े देशोंके राजाओं और बादशाहोंका अभिवादन स्वीकार करनेमें व्यतीत किया। इसी महीनेमें टर्कीके शाह सुल्तान महम्मदसे सन्धि करनेकी भी चर्चा चली। नादिरशाहने सारे मेसोपोटामियापर अपना क़ब्ज़ा रखनेका प्रस्ताव उपस्थित किया। इस प्रकार ईरान राज्यका प्रचुर विस्तारकर, राज्य-दण्डको त्यागकर उसने कलातमें जाकर शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करनेका विचार किया। देहलीसे लायी हुई सारी सम्पत्ति तो पहलेसेही वहाँपर सजी-सजायी रखी थी। मुग़ल बादशाह महम्मदशाहने भी नादिरका तातारियोंपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्ष्यमें अपने एक दूतके हाथों अभिवादन-संवाद भेजा था। उसने चन्दनकी बनी हुई एक ऐसी चीज़ उपहार-स्वरूप भेजी थी, जिसकी खुदाई और कटाईकी बारीकी देखकर नादिर-शाह चकित हो गया। इस उपहारको स्वीकारकर उसने भी प्रत्युपहारमें महम्मदशाहके पास कुछ ऐसी वस्तुएँ अपने राज-दूतके हाथ भेजीं, जो रूप, गुण और मूल्यमें महम्मदशाहकी भेजी सामग्रियोंसे किसी प्रकार भी कम न थीं। साथही नादिर-शाहने हिन्दुस्थानसे लाये गये गायक, गायिकाओं और नर्तकि-योंको देहली वापस भेज दिया।

नादिरके इन कामोंसे इस बातका अच्छी तरहसे पता लगता है, कि नादिरशाह सिर्फ एक उजड्ड लड़ाका ही न था, वरन् इसके साथ-साथ उसका हृदय रस-लोलुप भी था। उसकी इच्छा ईरान देशमें संगीत विद्या और नृत्य-कलाका प्रचार करनेकी भी थी। फलतः डेढ़ही वर्षके अवसरमें नादिरशाहके सदुद्योगसे बहुतेरे गवैये और नर्त्तक ईरान-देशमें तैयार हो गये अच्छी-अच्छी विद्याओंको, मनोहर कलाओंको और बहुमूल्य रत्नोंको बाहरसे ला-लाकर, ईरान-भाण्डारको सुसम्पन्न बनानेकी ओर सदा उसका ध्यान रहा करता था। यह वर्ष अर्थात् सन् १७४२ ई० का समय नादिरशाहके किसी विशेष काममें नहीं कटा। हाँ, इस वर्षके शेषका कुछ भाग उसने उत्तरीय प्रान्तोंको दबाने तथा जार्जिया और सरकाशियाका प्रबन्ध ठीक करनेमें व्यतीत किया।

सन् १७४३ ई०में नादिरशाहकी अवस्था छप्पन वर्षकी हो चुकी। एक ओर तो वह राज-पाटके झंझटोंसे छुटकारा पा सुख-शान्तिमय जीवन व्यतीत करनेका विचार करता, पर दूसरी ओर बेचारा अपने स्वभावसे लाचार है। सन् १७४२ ई० में कुछ विश्राम करनेके पश्चात् फिर उसका चित्त किसी युद्ध अथवा आक्रमणके लिये व्यग्र हो उठा। इस बार फिर भी उसने अपनी बहुत दिनोंकी अभिलाषाको पूरा करनेका—अर्थात् तुर्कोंपर आक्रमण करनेका—विचार किया। इसलिये १७४३ ई०के प्रारम्भमें अपनी फ़ौज लेकर वह बग़दादकी ओर बढ़ा। रास्ते-परके अनेक मुख्य-मुख्य स्थानोंपर उसने अपना अधिकार जमा

लिया। बग़दादके सरदार अहमदने उसके पास एक बहुतही विनम्र सन्देश भेजा, जिसमें उसने नादिरके आक्रमणको स्थगित रखनेका प्रयत्न किया था; पर दूसरी ओर तुर्की दरबारमें सुलतान द्वारा नादिरशाहका मुक़ाबिला करनेके लिये बड़ी भारी तैयारी हो रही थी। इस अभिप्रायसे सुल्ताननें अपने सभी सरदार और गवर्नरोंके पास यह धार्मिक सन्देश कहला भेजा था, कि ईरानियोंको क़ैद करना और मार डालना सबका फ़र्ज़ है; क्योंकि वे नास्तिक और सत्य-पथके विरोधी हैं।

यह समाचार पातेही नादिरशाह तत्क्षणही मसलपर अपना अधिकार करनेके लिये और बग़दादके गवर्नर अहमदको परास्त करनेके लिये बग़दादकी ओर रवानः हो गया। मसल एक बड़ा भारी शहर है। उस समय वहाँका गवर्नर हुसेन था। अलेप्पोके बादशाहने अपनी सारी सेना हुसेनकी मददमें भेज दी। नादिर भी आगे बढ़ता गया। टिग्रीज़ नदीपर उसने एक भारी पुल बाँध दिया और उसीपरसे अपनी सारी फौजको उस पार उतार ले गया। फिर अपनी सेनाका सङ्गठनकर वह मसलपर अपनी तोपें और बन्दूकें दागने लगा। वहाँके वीर सिपाहियोंने पाँच दिनोंतक शहरकी रक्षा की। पर अन्तमें हुसेनने नादिरशाहके पास अपने दो दूतोंकी मार्फ़त सन्धिका सन्देश भेजा; साथ-ही उसने यह भी कहला भेजा, कि 'आप ज़रा हमलोगोंकी स्थितिपर विचार करें। हमलोगोंके हाथोंमें इस शहरकी रक्षाका भार सौंपा गया है। सुल्तानका हुक्म है, कि हमलोग लड़कर इसकी रक्षा करें। ऐसी अवस्थामें हम लोग जब अपने मनसे

आपके साथ सन्धि कर लेंगे, तब हमलोगोंकी क्या हालत होगी? इसलिये कुछ दिनोंके लिये आप मोहलत मञ्जूर करें। मैं सुल्तानके पास लिखता ही हूँ और साथही ऐसी कोशिश भी करता हूँ, जिसमें आपमें और उनमें सन्धि हो जाये।"

नादिरशाहने इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। जबतक कुस्तुनतुनियासे सुल्तानका इस विषयमें कोई निर्णयात्मक उत्तर नहीं आ जाये, तबतक उसने अपना आक्रमण रोक रखना स्वीकार कर लिया और इस बीचमें वह अपना समय अमन-चैनमें, बग़दादके आस-पासके गाँवोंमें घूमने, उन्हें देखने और वहाँके आदमियोंसे मिलने और बात-चीत करनेमें बिताने लगा। हुसेन और नादिरशाहके बीचमें इस समय मैत्री भी बड़ी गाढ़ी हो गयी। एकके पास दूसरेके यहाँसे हमेशा तोहफ़े और उपहार आने-जाने लगे। हुसेनने एक बड़ा बेड़ा बनवाया था। टिग्रीज़ नदीमें सन्ध्या समय नादिरशाह उसी बेड़ेपर जल-विहारके लिये निकला करता था। बग़दादके बहुतेरे मौलवी और उमराव भी नादिरशाहके साथ रहते थे। नादिरशाह उनसे धार्मिक वाद-विवाद किया करता था। वे भी उसे सन्तुष्ट रखनेके लिये, उसकी बातोंका अपने मनके प्रतिकूल होनेपर भी पुष्ट पोषणही किया करते थे। वे सदा उसकी "हाँ-में-हाँ" मिलाया करते थे।

इस स्थानपर एक इतिहासकारका एक बड़े मार्केका प्रश्न है। वह पूछता है, कि एक ओर नादिरशाहकी फ़ौज बग़दादके पास अड़ी खड़ी है, दूसरी ओर टर्कीके सुल्तानसे मुक़ाबिला है। साथ-साथ यहींपर ऐसे प्रदेश, जिन्हें नादिरशाहने

अभी अपने अधिकारमें किया है, अव्यवस्थित और बिना किसी प्रबन्धके पड़े हुए हैं। ऐसी अवस्थामें नादिरशाहका मुसल्मान मौलवियोंसे धर्म्मके बेकार-बेकार विषयोंपर वाद-विवाद करना, दुश्मनके साथ उनकी किश्तियोंपर आमोद-प्रमोद करना, सेनाके सङ्गठनकी ओर ध्यान न देना और नव-विजित प्रदेशोंकी शासन-व्यवस्था न करना क्या नादिरके लिये उचित था? इसका उत्तर हम इस प्रकार दे सकते हैं:—

ऐसे समयमें नादिरशाहका इस प्रकार आमोद-प्रमोदमें लीन रहना कदापि उचित नहीं—विशेषतः ऐसी अवस्थामें, जब उसकी प्रवृत्ति अथवा मनका झुकाव विशेष रूपसे इस ओर है भी नहीं। पर आजका नादिर दस दिन पहलेका नादिर नहीं है। आज नादिरके मनोभाव वैसे नहीं, जैसे एक महीना पहले थे। आज अपनी ही की हुई एक हरकतसे वह एक प्रकारसे पागल हो रहा है! वह ख़ुद ही नहीं समझता है, कि अब उसे क्या करना चाहिये और क्या नहीं? असल बात यह है, कि यदि तीसरी मई सन् १७४१ ई० में जिस समय नादिरशाह मजन्द्रानके जङ्गल होकर गुज़र रहा था और जिस समय किसी आततायीने उसपर गोली चलायी थी, उस समय यदि वह मर गया होता, तो ईरानकी हालत वैसी कभी न होने पाती, जैसी उसकी मृत्युके पश्चात् अथवा जीवनकालमें ही होगयी थी,—वरन् शाहज़ादा रज़ाकुलीखांके सुराज्यमें वह और भी फूलता-फलता और नादिरशाहकी कीर्ति-कौमुदी भी एक प्रकारसे सुरक्षित रहती; पर ऐसा न होने पाया।

जिस समय नादिरशाहपर गोली चलायी गयी और उस गोलीने नादिरशाहकी जान न लेकर, उसके घोड़ेका काम तमाम कर डाला, उस समय नादिरशाहके कुछ मुसाहबोंने नादिरशाहके कानोंतक यह ख़बर पहुँचा दी, कि रज़ाकुलीख़ाँकीही साज़िशसे उसपर गोली चलायी गयी थी। बात ग़लत थी या सही, यह कोई भी नहीं जानता; पर स्वभावसेही क्रोधान्ध नादिरने बिना इस बातके तथ्यातथ्यका कुछ पता लगाये, यह कठोर आज्ञा देदी कि "रज़ाकुलीख़ाँकी आँखें निकाल लो।" यह हुक्म रज़ाकुली-ख़ाँके क़सूरकी सज़ा था अथवा निर्दोष रज़ाकुलीख़ाँके पूर्वकृत जन्मका भोग था, यह परमात्मा जाने! पर नादिरशाहके हुक्मसे उसकी दोनों आँखें निकाल ली गयीं।

कुछ लोगोंका कहना है, कि नादिरशाहने एक-ब-एक अपने निकालनेकी आज्ञा नहीं दी,—बरन् पहले तो उसने मुसाहबोंकी बातोंपर विश्वासही नहीं किया। इसपर मुसाहबोंने निम्न-लिखित बातें नादिरशाहसे कहीं,—"जाँ-पनाह! ये बातें हम लोग नहीं कहते, बल्कि आपकी प्रजा कहती है। राज्य-लोभी शाहज़ादेने आपसे राज्य लेनेके लिये षड्यन्त्र रचा है। उस षड्यन्त्रमें कुछ और लोग भी शामिल हैं; उन्हीं लोगोंमेंसे कुछ लोगोंका यह कथन है। जनताको आपकी अथवा शाहज़ादेकी क्या परवाह है? जनता तो चार आनेकी बातको सोलह आने बनाकर निस्संकोच भावसे कहती है। आपकी उम्र बढ़ती हुई देखकर शाहज़ादेका धैर्य्य छूटता जा रहा है। अतएव वे आपके प्राण लेनेके लिये अनेकानेक प्रपञ्च-प्रयत्न कर रहे

हैं। राज्य-लोभ एक ऐसा पदार्थ है, जिसमें पिता पुत्रका और पुत्र पिताका शत्रु बन बैठता है। स्वार्थान्ध चक्षुको धर्म्माधर्मकी सूझ तनिक भी नहीं रहती। क्या आपको यह स्मरण नहीं है, कि इसी स्वार्थके कारण, राज्य-लोभमें पड़कर सलीम, औरङ्गजेब—सब एक दूसरेके शत्रु बन गये। इसी अवस्थामें यदि शाहज़ादा रज़ाकुली आपकी जान ले लेना चाहते हैं, तो इसमें आश्चर्य्यकी क्या बात है?"

इसका नादिरशाहने यों उत्तर दिया,—"वफ़ादार सरदारो! यदि इस नीच पुत्रका अपने पिताकी हत्या करनेका प्रयत्न आश्चर्य-जनक नहीं, तो याद रखो, कि ऐसे पुत्रके प्रति नादिरका फ़ौरनही फ़ैसला सुना देना भी कोई आश्चर्य्य-जनक बात नहीं! लेकिन मैं उसे मारना नहीं चाहता। इससे उसके सब दुःखोंका एक साथही अन्त हो जायेगा। नादिरके प्रति विद्रोह करनेका फल उसे कुछ भी नहीं मिलेगा। इसलिये मेरा हुक्म है, कि पितृ-द्रोहके अपराधमें इसकी दोनों आँखें निकाल ली जायेंगी, जिससे इसको अपने कियेका फल जन्मभर भोगना पड़ेगा।"

"जो गुस्सेमें आकर काम करता है, वह शान्तिमय, एकान्त स्थानमें बैठकर पश्चात्ताप भी करता है।"—यही उक्ति नादिर-शाहके लिये चरितार्थ होने लगी। दिन-रात वह उदास रहता था, कभी कुछ बकता और कभी कुछ सुनता! कोई भी काम करनेमें अब उसकी तबीयत नहीं लगती। यही कारण है, कि नादिरशाहकी इस समय ऐसी हालत होरही है। अस्तु; नादिर अब शान्त, एकान्त जीवन व्यतीत करना चाहता है; पर दूसरेही

वर्ष ऐसी घटना उपस्थित होजाती है, जिसके लिये उसे फिर अपना शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करनेका विचार छोड़कर तुर्कोंके विरुद्ध लोहा लेना पड़ता है।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि हुसेनके अनुरोधसे, सन्धिके विचारसे, अपना आक्रमण कुछ दिनोंके लिये स्थगित कर, नादिर, बग़दादके इधर-उधरके गाँवोंमें भ्रमण कर रहा था। उसी समय उसे यह ख़बर मिली, कि—"अमाल उगली नामक एक तुर्क सिपहसालारने, जो उस समय आरमीनिया प्रदेशके कारस नामक स्थानमें था, परशियाके सारे प्रमुख सरदारों और सूबेदारोंके पास इस आशयका पत्र लिखा है, कि वे नादिरशाहके विरुद्ध उठ खड़े हों। इतनाही नहीं, ख़ास-ख़ास जगहोंपर उसने अपने इस आन्दोलनके प्रचार और समर्थनके लिये दूत भी भेजे हैं। साथही उसने यह भी कहला भेजा है, कि ईरानकी गद्दीका हक़दार नादिरशाह नहीं, वरन् शफ़ी है। इसलिये हमलोगोंको ऐसा उद्योग करना चाहिये, कि नादिरशाहको सिंहासनसे हटाकर उसकी जगहपर शफ़ीको, जो ईरानकी गद्दीका सच्चा हक़दार है, शाह मुकर्रर करें। इस शफ़ी नामक व्यक्तिकी जीवन-कथा बड़ीही रहस्यपूर्ण है। इसका असल नाम महम्मद अली था। दरिद्रताके कारण यह फ़क़ीर होगया और भीख माँगकर किसी तरह अपना जीवन-निर्वाह करता था। एक दिनकी घटना है, कि भीख देते समय किसी सज्जनने उसके चेहरेकी ओर कुतूहल-भरी दृष्टिसे देखकर कहा था, कि 'तुम्हारी शक्ल-सूरत शफ़ीसे मिलती-जुलती है।' इसपर उसने अजीब सूरत बना ली और

बहुतही विनम्रतापूर्वक ओज-भरे ढङ्गसे कहा,—"मैं तो अपना गुप्त रहस्य कभी, किसीपर प्रकट करना नहीं चाहता था। मेरा किस वंशमें जन्म है और मैं किसका पुत्र हूँ, ये सारी बातें किसीको भी कहनेका मेरा विचार नहीं था। पर जब आपने मुझे आज मेरे रूप-रङ्गसे पहचानही लिया है, तब मुझे वाध्य होकर सब यथार्थ बातें खोलनी पड़ती हैं। आपको यह विदित हो, कि मुझेही लोग शाहज़ादा शफ़ी कहते हैं।" उसकी इन बातोंको सुनकर झुण्ड-के-झुण्ड लोग उसे देखनेके लिये वहाँ आने लगे। लोगोंकी ऐसी भीड़ देखकर वहाँके गवर्नरने उसे वहाँसे निकाल दिया। वह वहाँसे बग़दाद चला गया। बग़दादमें उसने वहाँके गवर्नर सुल्तान अहमदसे परिचय किया। सुल्तान अहमदने यह जानकर, कि शफ़ी ख़ानदानका यही शाहज़ादा शफ़ी है, उसकी ख़ातिर-बात की और उसको वहाँसे कुस्तुनतुनियाके शाहके पास भेज दिया। शाहने भी इसे अपना पक्ष-समर्थक जान, इसके रहनेके लिये एक सुन्दर मकान दिया और वे उसे जीवन-निर्वाहके लिये ख़र्च भी देने लगे।

सन् १७३०ई०में सुल्तान अहमद जब शासन-च्युत किया गया, तब वह भी कुस्तुनतुनियासे निकाल दिया गया और फिर बहुतही दुःखपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगा। कुछ दिनोंतक वह तसलोनि-कामें रहा और उसके बाद कुछ दिनोंतक लेमन्समें मारा-मारा फिरता रहा। फिर भी वह एक बार एक तुर्क-जेनरलके साथ मिल गया और इसी आधारपर अमाल उगलीने यह अफ़वाह उड़ाकर नादिरशाहके विरुद्ध लोगोंको उभारना चाहा है।

अस्तु; जमाल उगलीके पत्रका समाचार ज्योंही नादिरशाहके पास पहुँचा, त्योंही वह अपने पड़ावपरसे चल पड़ा। वह अमेरकी ओर आगे बढ़ा। रास्तेमें कई अनिवार्य कारणोंसे उसे विलम्ब हो गया; अतएव वह कारसमें सन् १७४४ ई० के जुलाई महीनेमें पहुँचा। कारसके गवर्नरने नादिरशाहका आधिपत्य पहले स्वीकार नहीं किया। इसपर नादिरशाहकी फ़ौजने उसके क़िलेको घेर लिया। अब अपनेको असमर्थ देख, दूसरेही दिन कारसके गवर्नरने नादिरशाहसे आक्रमण स्थगित करनेकी प्रार्थना की और कहा, कि 'जबतक मैं तुर्कीके शाहके पास पत्र लिखकर अपनी असमर्थताका समाचार भेजता हूँ और उन्हें आपसे सन्धि करनेके लिये लिखता हूँ, तबतक आप अपना आक्रमण स्थगित रखें। नादिरशाहने उसकी इस प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया और कई सरदारों और कुछ सैनिकोंको क़िलेकी निगरानीमें रखकर अपनी बाक़ी सारी पल्टन लेकर वह वहाँसे लौट गया।

दूसरे वर्ष अर्थात् सन् १७४५ ई०के मार्च महीनेमें नादिरशाह इरवानकी ओर बढ़ा। पर रास्तेमें उसके सामने एक बड़ा भारी बखेड़ा आ खड़ा हुआ। इसलिये उसे आगे बढ़नेका इरादा छोड़ना पड़ा। इसी बीच अर्थात् जून मासमें उसे यह ख़बर मिली, कि तुर्कोंका भूतपूर्व वज़ीर आज़म महम्मद पाशा, एक महती सेनाके साथ अरज़ेरुम होकर नादिरशाहके मुक़ाबिलेमें आरहा है। उसके साथ अन्यान्य बारह तुर्क सरदार भी सहायतामें आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त दो और सरदार महम्मद पाशासे आमली-

अपनी फ़ौजके साथ आकर मिलेंगे। अभिप्राय यह है, कि तुर्क लोग हर तरहसे सुसज्जित होकर इस बार नादिरशाहसे मुक़ाबिला करनेके लिये आगे बढ़ रहे हैं। नादिरशाहको ज्योंही इसका समाचार मिला, त्योंही वह मारे ख़ुशीके फूल उठा। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया, कि 'चाहे जो हो, अब एकही बारमें सारा फ़ैसला हो जायेगा—या तो इस महायुद्धमें विजय प्राप्त कर, विजय-मुकुट अपने मस्तकपर धारणकर सदाके लिये विजयी कहलाऊँगा अथवा परास्त हो, रणाङ्गनमें अपना शरीर त्यागकर इस दुःखद जीवनसे छुट्टीही पा जाऊँगा।' इस विचारसे नादिरशाहने अपने पुत्र नसरुल्लाको उन दो तुर्क सरदारोंके मुक़ाबिलेमें भेजा, जो दियाबेकर होकर महम्मद पाशासे मिलने आ रहे थे। इसके बाद उसने अपनी अनुपस्थिति-में इमाम कुलीको खुरासानका और ईब्राहीमको इराक़का शासक नियुक्त किया और वह स्वयं एक विशाल सेना लेकर महम्मद पाशासे मुक़ाबिला करनेके लिये रवानः हुआ। २८ वीं जुलाईको वह उस स्थानपर पहुँचा, जहाँ दस वर्ष पूर्व उसने अब्दुल्लाहको परास्त किया था। दूसरे दिन महम्मद पाशा एक लाख घुड़-सवार और चालीस हज़ार पैदल सेना लेकर उस स्थानके पास पहुँचे। महम्मद पाशाकी गति बड़ीही धीमी थी। उनका पड़ाव एक पहाड़के पास पड़ा। दूसरे दिन, अर्थात् ३०वीं जुलाईको दोनों दलोंमें एक साधारण मुठभेड़ हो गयी। तुर्क सेना ज़बर्दस्त होनेपर भी पीछे लौट गयी।

जिस समय महम्मद पाशा पहुँचा था, उस समय यदि वह

अपने सारे दलबलके साथ नादिरशाहकी फ़ौजपर हमला कर देता, तो बहुत सम्भव था, कि नादिरको नीचा देखना पड़ता। पर महम्मद पाशाको यह बात न सूझी! इसके दोही कारण हो सकते हैं—पहला यह हो सकता है, कि महम्मदशाह पहले दर्जेका कमज़ोर और डरपोक हो, साहस उसमें तनिक भी न हो और दूसरा कारण यह हो सकता है, कि नादिरके नाम और अतुल पराक्रमके स्मरणमात्रसेही वह डर गया हो। जो हो, पर इतना ज़रूर कहा जा सकता है, कि नादिरका रोब उस-पर ग़ालिब हो गया और इसीसे वह पहली बार मज़बूत होता हुआ भी, पीछे हट गया। इससे उसकी बहुत बड़ी हानि हुई। इधर उसकी सेना भी बहुत घबरा उठी। यद्यपि पहले मोर्चेपर महम्मद पाशाके हुक्मसे वह पीछे हट गयी थी, पर इस बातसे उसे बहुत ग्लानि और लज्जा हुई। सेनाके वीर सिपाही चाहते थे, कि जैसे भी हो,आगे बढ़कर नादिरशाहका मुक़ाबिला करें; पर महम्मदपाशा अपना पाँव पीछे खींच रहा था। उसकी इस हरकतपर सब सिपाही असन्तुष्ट और क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने निश्चय कर लिया, कि अब अगर महम्मद पाशा ऐसा बर्त्ताव करेंगे, तो हमलोग उनका हुक्म न मानकर अपने इच्छानुसार काम करेंगे।

वहाँ तो तुर्कोंके ख़ीमेमें ये सब बातें हो रही हैं, यहाँ नादिर-शाहका पुत्र नसरुल्लाह, जिन दो तुर्क सरदारोंका मुक़ाबिला करनेके लिये आगे गया था, उनपर विजय प्राप्तकर चुका, इस बातकी सूचना उसने एक पत्र द्वारा नादिरशाहके पास भेज दी।

पत्र पढ़कर नादिरशाह बड़ाही प्रसन्न हुआ। उसने उस पत्रको उसी वक्त् एक तुर्क क़ैदीके हाथसे महम्मद पाशाके पास भेज दिया। ज्योंही उस क़ैदीने पत्र लेकर महम्मद पाशाके ख़ीमेमें प्रवेश किया, त्योंही बड़ा भारी कोलाहल शुरू हुआ। अनुसन्धान करनेपर पता लगा, कि नादिरशाहके प्रति आक्रमण करनेमें विलम्ब करनेके कारण तुर्क सैनिकोंने महम्मद पाशाकी हत्याकर डाली है।

इधर ख़ीमेमें कोलाहल और हाहाकार मचा हुआ है और उधर नादिरशाह अपनी सारी फ़ौज लेकर अपने दुश्मनोंपर टूट पड़ता है। उसने उन्हें चारो ओरसे घेर लिया। एक तो वे पहलेसे ही असङ्गठित हो रहे थे, दूसरे अब उनका कोई अधिनायक भी नहीं था। ऐसी अवस्थामें वे क्या करते? निदान सब अपनी-अपनी जान बचानेकी चिन्तामें भागने लगे। नादिरशाहके कुछ सैनिकोंने उनका पीछा किया और बाक़ी सब लोग उनकी युद्ध-सामग्रियाँ लूटने लगे। इस युद्धमें बहुतसी सामग्रियाँ नादिर-शाहके हाथ लगीं। बहुतेरे तुर्की सरदार मारे गये। हता-हत सैनिकोंकी संख्या बारह हज़ारसे ऊपर हो थी।

इस प्रकार तुर्कोंपर विजय प्राप्त करनेके पश्चात् नादिरशाह कुछ दिनोंतक उस स्थानपर विश्राम करनेके लिये ठहर गया। इस बीचमें उसने लूटे हुए धनका बहुतसा हिस्सा अपने सैनिकोंमें बाँट दिया। इसके बाद वह हमदमकी ओर बढ़ा। हमदमपर अपना क़ब्ज़ाकर उसने इस्पहानपर चढ़ाई की। बिना रोक-टोकके उसपर भी उसने अपना दख़ल जमा लिया। इन स्थानोंपर ठहर-

कर उसने इन नव-प्राप्त राज्योंका समुचित प्रबन्ध किया। इस वक्त दिसम्बरका महीना था। इसी समय खातूनके बादशाहका एक दूत नादिरशाहके पास अच्छे नज़रानेके साथ पहुँचा। वह अपने बादशाहके यहांसे एक पत्र भी ले आया था। इस पत्र द्वारा खातूनके बादशाहने नादिरशाहकी कामयाबी और फ़तहयाबीपर मुबारकबादी भेजी थी और साथ-साथ यह भी अर्ज़ किया था, कि नादिरशाह अपने किसी एक अफसरके द्वारा दोनों राज्योंकी (अर्थात् नादिरशाह और अपने राज्यकी) सीमा ठीक करा दें। यह शख्स बड़े उजबकोंके खानदानका था और इसने अपने बाहुबलसे ख़ातूनकी गद्दीपर कब्ज़ा किया था। इसका एक और भाई खातेका राजा था। नादिरशाहने उसकी इस प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया और उसके दूतको नौ अरबी घोड़े और सुन्दर रत्न-जड़ित एक तलवार देकर वापस भेज दिया।

अपने अन्तिम और महाप्रबल शत्रु तुर्कोंको परास्त करनेके बाद, नादिरशाहको कोई ऐसा बादशाह अथवा सरदार आस-पासमें नज़र नहीं आया, जिसका दमन करना उसे आवश्यक प्रतीत होता। ऐसी ही अवस्थामें, नादिरशाह शान्तिमय जीवन व्यतीत करना चाहता है। उसकी मानसिक परिस्थिति दिन-पर-दिन बिगड़तीही जाती है। चिन्ता बढ़ती जाती है। चित्तमें ज़रा भी चैन नहीं है। इसलिये वह तुर्कोंसे सदाके लिये सन्धि कर लेना चाहता है। इस विचारके वशीभूत हो, उसने अपना एक दूत, तुर्की दरबारमें, सन्धि करनेके पैग़ामके साथ भेजा। सुल्तानने उसे कुबूल कर लिया। सन् १७४७ ई० के जनवरी मासमें

सन्धि होगयी। उस समय नादिरशाहकी अवस्था ६० वर्षकी थी। तुर्की-सन्धिका निपटारा हो जानेपर, वह अब एकान्त और शान्तिमय जीवन व्यतीत करनेके लिये तैयार होगया।

नादिरशाह बहुत दिनोंसे मक्केमें एक मस्जिद और ईरानी मुसाफ़िरोंके लिये एक मुसाफ़िरखाना बनानेका विचार कर रहा था; पर अब शान्ति और एकान्त-वासके लिये उसका मन इतना व्याकुल हो रहा है, कि अपने उस विचारको भी उसने छोड़ दिया। यहाँ यह स्मरण रखनेकी बात है, कि नादिरशाहका यह विचार गत चार-पाँच वर्षोंसे है; पर शान्तिमय जीवनके लिये नादिर अपने इन सद्विचारोंको भी त्यागकर रहा है। शान्तिके लिये वह इस समय पागल सा हो रहा है!

मृत्युके पूर्व नादिरशाहकी अवस्था।

मनुष्य सोचता कुछ है और करनेवाला करता कुछ औरही है। इधर नादिरशाह अपने राज-काजके सारे झंझट-झमेलोंसे छुट्टी ले, जैसा कि पाठक बार-बार पढ़ चुके हैं, अपने जीवनका शेष भाग क़लातगढ़के सुरम्य प्रासादमें शान्ति एवं सुख पूर्व्वक व्यतीत करना चाहता है। उधर उसे ख़बर मिलती है, कि ईरानका सुबेदार सरदार तक़ीखाँ नादिरशाहकी अधीनता भङ्गकर अपने एक स्वतन्त्र-राज्यके संस्थापनका प्रयत्नकर रहा है। साथही वह नादिरशाहपर आक्रमण करनेके लिये एक फ़ौज भी तैयार कर रहा है। यहाँपर यह स्मरण रखनेकी बात है, कि सरदार तकीखाँ नादिरशाहका एक बहुतही विश्वास-पात्र अनुचर था। राज-काजकी सभी बातोंमें नादिरशाह उसकी सम्मतिको प्रधानता देता था और उसके आग्रहानुसार बहुत बार चलता भी था। तक़ीखाँ भी, सदा-सर्वदा उसकी जी-जानसे भलाई करना चाहता था। नादिरशाहकी आज्ञाओंपर मर मिटनेके लिये वह सदा तैयार रहता था। पर जब बुरे दिन आते हैं, तब मित्र भी बैरी बन बैठते हैं। अस्तु; तकीखाँकी बग़ावतकी बात सुन नादिरशाहकी हालत धधकती हुई आगके अङ्गारेकीसी होगयी।

प्रचण्ड क्रोधानलसे प्रज्वलित होता हुआ वह विप्लवका दमन करनेके लिये आगे बढ़ा। क्रोध मनुष्यको अन्धा बना देता है। रास्तेमें जितने सरदार मिलते गये, एक-एकको उसने क़त्ल करना शुरू किया। रास्तेपरके सब गाँवोंको उसने उजाड़ना शुरू किया। लड़के-बच्चे, स्त्री-पुरुष और बूढ़े-जवान किसीका भी तनिक विचार न कर, वह रास्तेके सभी गाँवोंके रहनेवालोंको क़त्ल करता गया। फलस्वरूप रास्तेके गाँवोंमें एक भी आदमी नहीं रहा। बहुतोंने अपनी जानके भयसे जङ्गल और पहाड़ोंकी शरण ली। सच तो यह है, कि नादिरशाह इस समय बिल्कुल पागल सा हो गया है। उसे अर्थ और अनर्थका तनिक भी ज्ञान नहीं है। उसकी ऐसी हालत देख, स्वभावतः उसकी प्रजा भी उससे बिगड़ने लगी। पर अभीतक उसके शासनका आतङ्क लोगोंके हृदयमें इतना अधिक जमा हुआ था, कि वे खुल्लम-खुल्ला बिगड़ उठनेका भी साहस नहीं कर सकते थे।

इसी समय नादिरशाहको यह दूसरा समाचार मि सेगिस्तानमें भी बग़ावतका झण्डा खड़ा हो गया और बलवाई लोग उससे मुक़ाबिला करनेके लिये आगे बढ़ रहे हैं। यह समाचार पाकर नादिरने अपने भतीजे अलीखाँको बलवाइयोंका दमन करनेके लिये एक अच्छी सेनाके साथ आगे भेज दिया। अलीखाँके साथ उसने अपने एक वयोवृद्ध एवं अनुभवी सरदार तहमाशखाँको भी भेज दिया। अपने चाचासे विदा ले, अलीखाँ जब आगे बढ़ा, तब उसके हृदयमें नाना प्रकारके भाव उत्पन्न होने लगे। राज्य-लोभने उसकी मनुष्यता और

सहृदयतापर अधिकार कर लिया। इतिहासके पाठकोंके लिये ऐसी घटना कोई नयी नहीं। राज्य-लक्ष्मीके लोभने किसके हृदयको कलुषित और विचारको भ्रष्ट नहीं किया ? और विशेषकर मुसल्मान बादशाहोंके इतिहासोंके तो पन्ने-पन्ने इस प्रकारके षड्यन्त्रोंसे रङ्गे पड़े हैं। पिता द्वारा पुत्रकी हत्या, पुत्रके हाथों पिताका खून और भाईसे भाईकी हत्याके हज़ारों उदाहरण सदा-सर्वदा हमारे दृष्टिगोचर होते रहते हैं। फिर अगर अलीखाँ अपने चाचा नादिरशाहपर हाथ साफ़ कर, प्रशस्त साम्राज्यपर अपना अधिकार स्थापित करना चाहता, तो आश्चर्य्य ही क्या था ?

निदान उसने अपना यह विचार, मार्गमें तहमाशखाँपर प्रकट करही दिया। एक दिन रास्तेमें तहमाशखाँको एकान्तमें बुलाकर बड़े गम्भीर भावसे उसने पूछा,—"सरदार तहमाशखाँ ! क्या आपके हृदयमें अपनी उन्नति करनेकी अभिलाषा है ?

सरदार तहमाशखाँ, अलीखाँके इस प्रश्नका भाव ठीक-ठीक समझ न सका। इसलिये उसने अलीखाँसे कहा,—"आपके इस कथनका आशय मैं ठीक-ठीक समझ नहीं सका। आपके कहनेका अभिप्राय क्या है, कृपाकर मुझे स्पष्ट शब्दोंमें बतलाइये।"

इसपर अलीखाँने उत्तर दिया,—"मेरे कहनेका क्या अभिप्राय है ? मैंने तो अपने हृदयका अभिप्राय स्पष्ट शब्दोंमें आपपर प्रकट कर दिया है। इतनेपर भी यदि आप नहीं समझ सके हों, तो ध्यान देकर सुनिये। चाचाने मुझे सेगिस्तानका बलवा दबानेके लिये भेजा है। चलिये, मैं वहाँका बादशाह बनता हूँ और आप वज़ीरे-आज़म बनें। कहिये, आपकी क्या इच्छा है ?"

तहमाशखाँने इसके उत्तरमें कहा,—"मेरे नामजद शाह-ज़ादा! आप यह क्या कह रहे हैं? अपने हाथोंसे अपने पिता तुल्य चाचा नादिरशाहका ख़ून! तोबा कीजिये! मेरी तो समझ-मेंही यह बात नहीं आती!"

फिर अलीखाँ बोला,—"तहमाशखाँ! यह ख़ून न मेरे हाथोंसे होगा और न आपके हाथोंसे। आपको मालूम है, कि सेगि-स्तानकी सारी प्रजा बाग़ी बन गयी है। ऐसी हालतमें चाचा या तो उनका ख़ून करेंगे या उन्हें क़ैद करेंगे। फिर वे भी किसी-न-किसी प्रकार अपना बदला चुकायेंगे ही! इस कामके लिये आपको ज़रा भी तकलीफ़ करनेकी ज़रूरत नहीं। अब आप बताइये, कि आपका क्या विचार है?"

इसपर तहमाशखाँका चित्त व्यग्र हो उठा और उसने कहा,—"शाहज़ादा! ज़रा आप इस बातपर ग़ौर कर लें, फिर जो समझें, करें। इस बुरे कामका नतीजा क्या होगा, इसपर भी आप ज़रा ख़याल कर लीजिये। मुझे बड़ा आश्चर्य है, कि आपके हृदयमें इस महाकलुषित भावका समावेश कैसे हुआ?"

इसका उत्तर अलीखाँने क्रोध-भरे शब्दोंमें यों दिया,—"मैं अधिक वाद-विवाद करना नहीं चाहता। आप अपना अन्तिम निर्णय स्पष्ट शब्दोंमें बता दीजिये। कहिये,—हाँ या ना।"

तहमाशखाँ बोला,—"शाहज़ादा! कम-से-कम इस जन्ममें तो मुझसे ऐसा अधम कृत्य नहीं हो सकता। सम्भवतः आपसे भी ऐसा कुकर्म्म नहीं हो सकेगा; पर यदि आप इसे करनेके लिये कमर कसही लेंगे, तो लाचार होकर मुझे आपको क़ैद

करना पड़ेगा और इस समाचारको आपके चाचा नादिरशाहके पास पहुँचाना होगा। इसका फल क्या होगा, यह आप भली भाँति विचार कर सकते हैं। अगर मैं मान लूँ, कि इस काममें आपकीही सफलता होगी, तथापि आप याद रखें, कि इसका परिणाम कदापि सुख-दायक नहीं हो सकता। आप अभी जिस सुखका अनुमान कर रहे हैं, वह तो केवल बाहरी आभासमात्र है। उसके भीतर घोर सङ्कट छिपा हुआ है।

अलीखाँ,—"मैं अधिक बातें सुनना नहीं चाहता। इस सम्बन्धमें आपका अन्तिम उत्तर क्या है, मैं केवल यही जानना चाहता हूँ। व्यर्थकी बातोंसे क्या मतलब ?"

तहमाशखाँ,—"इस जन्ममें तो कम-से-कम ऐसी दुष्कृति मेरे इन हाथोंसे होही नहीं सकती—किसी हालतमें भी नहीं हो सकती। इतनाही नहीं,—वरन् तुम्हारे द्वारा भी, जहाँतक मुझसे हो सकेगा, मैं ऐसा कुकर्म न होने दूँगा।"

अब अलीखाँ जान गया, कि तहमाशखाँ उसके बहकावेमें नहीं आ सकता। इसलिये उसने सेगिस्तानमें पहुँचकर उसे मरवा डालनेका विचार, मन-ही-मन निश्चित कर लिया। उसने बलवाइयोंसे मिलकर अपना यह विचार कार्य्य-रूपमें परिणत करना स्थिर किया, उसके सब सिपाही भी इस बातको जान गये। कुछ दिनों बाद वह सेगिस्तान पहुँचा। सेगिस्तान तथा उसके आस-पासके प्रदेशोंपर अधिकार कर वह वहांका स्वतन्त्र राजा बन बैठा। पर इतनेसेही उससे सन्तोष नहीं हुआ। वह सारे ईरानका बादशाह बननेका हौसला

रखता था। पर जबतक नादिरशाह जीवित है,तबतक उसका यह हौसला स्वप्नमें भी पूरा नहीं हो सकता। अतएव उसने अब बहुत जल्द नादिरशाहका काम तमाम कर डालनाही ठीक समझा और इसके लिये उसने चार हत्यारे भी ठीक किये। उन्हें मुँह-माँगे रुपये दिये। साथ-साथ उन्हें यह भी विश्वास दिलाया, कि इस प्रयत्नमें सफल होनेपर, पुरस्कार स्वरूप उन्हें पूरी-पूरी जागीर-ज़मींदारी भी दी जायेगी।

इधर तो नादिरशाहके प्रति अपने भतीजे अलीखाँ द्वारा ऐसा विकट षड्यन्त्र रचा जा रहा है, उधर नादिरशाह तथा उसके अधीनस्थ देशोंकी क्या हालत है, पाठक ज़रा उसे भी सुन लें। आप पहलेही पढ़ चुके हैं, कि नादिरशाह इन दिनों बहुतही चिन्तित है। उसके राज्यमें यत्र-तत्र बलवा उठ खड़ा होता है। नादिरशाह उन्हें दबानेके लिये, क्रोधान्ध हो, बड़वानलकासा भलङ्कर रूप धारण करता है। पर ये बातें दिन-दिन और भी बढ़ती ही गयीं। बलवा रुकनेके बदले आगकी चिनगारियोंकी तरह और भी इधर-उधर फैलता गया। इसका प्रधान कारण क्या है? क्या नादिरशाह निर्बल हो गया है अथवा उसकी राज्य-व्यवस्था ढीली पड़ गयी है? इन सब बातोंका उत्तर, पाठक नीचेकी पंक्तियोंमें पढ़ें।

हमारी समझमें तो इन सारी अशान्ति और उपद्रवोंका मूल कारण यही है, कि लोभके वशीभूत हो नादिरशाहने अपने राज्यका प्रसार इतना अधिक कर लिया है, कि उसका सम्हालना उसके लिये अब बहुत कठिन हो रहा है। यद्यपि हिन्दुस्थान और

बुखारा आदि देशोंको जीतकर भी उसने अपने राज्यमें न मिलाया और इस प्रकार बड़ी बुद्धिमानीका काम किया, तथापि जो देश अभी उसके पास मौजूद हैं, उनका विस्तार भी थोड़ा नहीं है। एक ओर काकेशस है, तो दूसरी ओर अरब-समुद्र! पश्चिममें यूफ्रेटीज़ नदी है, तो पूर्वमें सिन्धु नदी! भला ऐसे समयमें जब न रेलका प्रबन्ध है और न सेना-सञ्चालनके लिये अच्छे-अच्छे मार्ग हैं, तब कौन कह सकता है, कि यह राज्य छोटा है? इन सब कठिनाइयोंके होते हुए भी यदि कोई ऐसे बड़े राज्यका प्रबन्ध ठीकसे करना चाहे, तो एक जबर्दस्त सेनाकी जरूरत है। साथ-ही-साथ शासन-सङ्गठनके योग्य बहुत बड़े मस्तिष्क और प्रवीण कार्य-कर्त्ता भी होने चाहियें, जिसके लिये एक बड़ी रकमकी भी ज़रूरत है। पर क्या नादिरशाहकी प्रजा इतनी बड़ी रकम देनेमें समर्थ है? नहीं, कदापि नहीं। दरिद्र देशकी दुःखी प्रजाके पास इतना धन कहाँ? और न इतना धन नादिरशाह अपने पाससेही लगानेके लिये तैयार है।

उधर सेनाकी हालत भी बहुत बुरी हो चली है। तेरह वर्षोंके अविराम युद्ध और आक्रमणोंने उसे शिथिल कर दिया है। अब उसके योद्धागण अपने शरीरको कुछ आराम देना चाहते हैं। पर नादिरशाहको यह बात पसन्द नहीं। इतने विस्तृत राज्यका अधिकारी होनेपर भी उसके हृदयसे लोभ नहीं गया। अब भी उसके हृदयमें नये राज्योंपर अधिकार करनेकी आकांक्षा पहलेकीही तरह बनी हुई है। इसके लिये वह अपने सैनिकोंको कोसता है। पर उन बेचारोंमें अब पहलेकी तरह उत्साह नहीं है। फलतः नादिर

शाहके डरके मारे कोई-न-कोई बहाना बता, सभी सैनिक सेनासे-हटते जाते हैं। इतनाही नहीं, नये लोग भी सेनामें भर्ती होनेके लिये अग्रसर नहीं हो रहे हैं। लाचार वह तातारियों और अफ़ग़ानियोंको सेनामें भर्ती करता है ; पर वे भी कुछ दिनोंतक रहकर अपने घर वापस चले जाते हैं। इसका प्रधान कारण यह है, कि उन्हें ठीक समयपर तनख़्वाह नहीं मिलती और न मिलनेकी कोई आशा ही दिखाई पड़ती है। कारण, जो रुपये नादिर हिन्दुस्थानसे लूटकर लाया था, उसे तो उसने इसलिये जमाकर रखा है, कि जीवनके शेष भागमें बैठकर उन्हीं रुपयोंको सुख और मौजसे उड़ायेंगे। इधर राज्यसे जो आमदनी होती है, उससे अधिक ख़र्चकी ज़रूरत होती है। ऊपरसे युद्धने राज्यके कोषका एक प्रकारसे दिवाला निकाल दिया है। ऐसी हालतमें चढ़ते हुए ख़र्चको चलानेके लिये वह नये-नये करोंका विधान कर रहा है, पर ग़रीब प्रजा उसे अदा करनेमें असमर्थ हो रही है।

इन सब बातोंका परिणाम यह हुआ, कि नादिरशाहके प्रति प्रजाजनोंका असन्तोष दिन-पर-दिन बढ़ता गया। सेना भी उसका साथ छोड़ती गयी। उसके पुराने सरदार और साथी सभी, उससे अलग होते गये। उधर प्रजावर्ग भी नये-नये करोंको देनेमें असमर्थ हो, नादिरशाहके भयके कारण देश छोड़ बाहर भागने लगा। इस स्थितिका अनुभवकर उसके राज्यमें उपद्रव और विप्लवका भी आरम्भ हो चला। भिन्न-भिन्न प्रदेशोंके सूबेदार और सरदार, राज्यकी इस कमज़ोरीसे फ़ायदा उठा, अपने-अपने स्वतन्त्र राज्य संस्थापित करने लगे।

अस्तु इन सारे परिवर्त्तनोंका प्रभाव नादिरशाहपर कैसा पड़ा होगा, विचारशील पाठक स्वयं इसका अनुमानकर सकते हैं। उसके आचार-विचारमें महान् परिवर्त्तन हो गया। उसमें न अब पहलेकासा धैर्य्य रहा, न साहस। जिस कामको बहुत उत्साह-पूर्व्वक, बड़े ज़ोरके साथ, वह शुरू करता, मानसिक दुर्बलता उसमें इतनी अधिक आगयी, कि थोड़ी देर बाद-ही उसपर वह अनेकानेक पश्चात्ताप करने लगता। अपने बड़े विश्वासी सरदारोंपरसे भी उसका विश्वास उठ गया! किसी बातमें अब वह उनकी राय तक नहीं लेता! राय लेनेकी बात तो दूर रहे, उनकी स्थिति और पदकी तनिक भी परवाह न कर, बहुत बार ऐसा देखा गया है, कि वह उन्हें भरी सभामें बेइज़्ज़त कर बैठता है। इतनाही नहीं, जहाँ पहले वह बुरी तरह पराजित होनेपर भी तनिक नहीं घबराता था, वहाँ अब साधारण-सामान्य हारपर अपना साहस, शान्ति और सहनशीलता सब खो बैठता है। अपनी सैन्य-शक्तिका तनिक भी ध्यान न रख, वह उन्हें असाध्य कार्योंको करनेकी आज्ञा दे डालता। पर जब उसके सिपाही और सरदार उसमें विफल हो जाते, तब वह उन्हें बेइज़्ज़त करता तथा उनके प्रति अनेकानेक अपमान-जनक शब्दोंका प्रयोग करता है।

एक समयकी बात है, कि नादिर तातारियोंके साथ युद्ध कर रहा था। शत्रु पक्षवालोंने उसपर ऐसा भयंकर वार किया, कि उस वारसे उसकी जान बचनेकी आशा न थी। उसका एक सिपाही, जो उसकी बग़लमें खड़ा था, यह हाल देख रहा

था। राज-भक्तिके भावके वशीभूत हो, वह तुरन्त नादिरशाहके सामने बढ़ आया और उस वारको अपनी छातीपर लेकर, मालिकका नमक अदा कर दिया! पर यह भी नादिरशाहसे नहीं देखा गया। वह झट बोल उठा,—"बेवक़ूफ़! क्या तूने मुझे नामर्द समझ रखा है!" इन शब्दोंके सुनतेही उस बेचारे आहत, स्वामि-भक्त सेवकने अपना प्राण त्याग कर दिया। अपने प्राण-रक्षक भृत्यके साथ नादिरशाहका ऐसा बर्ताव, उसका पागलपन नहीं तो और क्या कहा जा सकता है?

इस मानसिक परिवर्त्तनका नादिरशाहके शरीरपर भी पूरा असर पड़ा। रात-दिन उसका चेहरा चिन्ता, शोक तथा ग्लानिसे ढका हुआ देख पड़ता था। जब कोई मनुष्य कभी उसके सामनेसे होकर गुज़रता था, तो मारे क्रोधके वह व्यग्र हो उठता था। जो नादिरशाह अपनी युवावस्था तथा इसके बाद भी शायदही कभी बीमार पड़ा हो, वही इन सब कारणोंसे सदा रोग-ग्रस्त रहने लगा। जिस समय उसने भारतवर्षपर आक्रमण किया था, उसी समय उसे उदर-रोग होगया था, पर दिल्लीके एक शाही हकीमके इलाजसे उसका वह रोग उस समय दूर हो गया था। इस समय फिर उसी रोगने उसे आ दबाया। अब उसके मुँहपर वह तेज नहीं, शरीरमें वह स्फूर्ति नहीं और न उसका चित्तही अब कभी प्रसन्न रहता है। उसकी कमज़ोरी भी बढ़ती जाती है। इससे उसके स्वभावमें कुछ चिड़चिड़ाहट भी आ गयी है। जो सरदार उसके परम हितैषी थे और जिन्हें वह जी-जानसे मानता था, वे भी अब

उसके स्वभावमें यह परिवर्त्तन देख,अत्यन्त दुःखित और चिन्तित रहा करते हैं।

नादिरशाहमें अविश्वासकी मात्रा भी अब बेहद बढ़ गयी है। जिन नौकर और सरदारोंपर वह अपने हृदयसे अधिक विश्वास करता था तथा जो नौकर उसे प्राणसे भी अधिक प्यारा समझते थे,उन्हीं सरदारों और नौकरोंको अब वह सन्देह-भरी दृष्टिसे देखता है। फलतः वे सरदार और नौकर भी अब उससे डरते हैं। वे सदा उससे सावधान और सतर्क रहने लगे हैं। वे नादिरके सामने जाने और दरबारमें बैठनेमें भय खाते हैं। एक-दो बार तो ऐसा भी देखा गया, कि दरबारमें बैठे हुए जिस सरदारकी ओर उसने अपनी तीव्र दृष्टि डाली, वह बेचारा अपनी मौत निकट जान, दरबारकोही केवल छोड़कर नहीं हट जाता था,—वरन् नादिरके राज्यसेही सदाके लिये अपना नाता तोड़ लेता था। कहनेका अभिप्राय यह, कि नादिरशाह इस समय बावला हो गया है! उसके हृदयमें अब एक भी सद्विचार स्थान नहीं पाता!

उपर्युक्त बातोंसे प्रवर पाठकगण यह न समझ लें, कि इन मानसिक तथा शारीरिक परिवर्त्तनोंके साथ साथ उसकी आन्तरिक महदाकांक्षामें भी किसी प्रकारका परिवर्त्तन हो आया है, वरन् उसकी वह इच्छा ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। विश्व-विजेता बननेका हौसला उसके हृदयसे अब भी दूर नहीं हुआ है। वह तुर्कोंको दूसरी बार परास्त करनेके प्रयत्नमें लगा हुआ है। इसके अतिरिक्त औरोंपर भी वह बड़े ज़ोरोंसे आक्रमण कर आगे बढ़नेका

विचार कर रहा है। इसी समय उसने सुना, कि राज्यमें चारो तरफ़ उपद्रव मच रहा है। उसका एक परम विश्वास-पात्र सरदार तक़ीख़ाँ उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है। इतनाही नहीं, बल्कि वह एक भारी सेनाको अपने साथ ले, नादिरशाहके राज्यपर अधिकार जमानेके लिये आगे बढ़ रहा है। रेगिस्तान-के लोग भी बलवाई बन, नाना प्रकारके उपद्रव मचा रहे हैं। इस्फ़हानने भी सर उठाया हैं। संक्षेपमें, नादिरशाहके अन्तर्गत जितने प्रदेश थे तथा उसकी नौकरीमें जितने सरदार थे, सब एक-एक करके उससे अलग हो गये।

ऐसे समयमें नादिरशाहके हृदयमें कैसे भावोंका संचार हुआ होगा, यह उसके स्वभावमें होनेवाले परिवर्त्तनोंको ध्यानमें रख, पाठक सहजमेंही अनुमान कर सकते हैं। चारो तरफ़से अशान्तिका समाचार पाकर नादिरकी मुखाकृति बिल्कुलही बदल गयी। साधारण रीतिसे गम्भीर तथा विचारशील नादिरकी मुख-मुद्रा अब बड़ी भयावह प्रतीत होने लगी! प्रलय-कालके सूर्य्यके सामने, क्षुब्ध महासागरके सामने अथवा विकट बड़वा-नलके सामने, सम्भव है, मनुष्य क्षण-भरके लिये स्थिर रह जाये; पर इस समय पृथ्वीतलपर एक भी ऐसा प्राणी नहीं,जो क्रोधान्ध नादिरके सामने एक पल भी ठहर सके! दुर्वासाका क्रोध अथवा परशुरामकी उग्रता संसारमें विख्यात है; पर नादिरको उग्रता और क्रोधके सामने इस समय वे भी मात हैं। इस समय नादिरकी क्रोधाग्निके सामने बड़वानल और प्रलयकालका भयंकर दृश्य भी तुच्छ हो रहा है। परशुराम अथवा दुर्वासाका क्रोध

नादिरका काल और नर-मुण्डोंका मीनार।

Burman Press, Calcutta.

[पृष्ठ—१६२]

तो उन्हींके लिये था, जो सदाचार तथा धर्म्मके पथसे भ्रष्ट थे; पर नादिरके क्रोधके सामने तो दुराचारी और सदाचारी, दुर्जन और सज्जन तथा अपराधी और निरपराध सभी समान हैं। क्रोधके वशीभूत होनेसे नादिरके हृदयसे सब प्रकारके सुविचार इस समय दूर हो गये हैं। जो कोई भी उसके सामने पड़ जाता, नादिर फ़ौरन उसका सिर, धड़से अलग कर, पृथ्वीपर गिरा देता है! जिस शहरमें बलवा होनेकी खबर उसके पास पहुँचती, वह आग-बबूला हो, उसी शहरमें जा पहुँचता तथा बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष तथा दोषी-निर्दोषका तनिक भी विचार न कर, सारा शहर-का-शहर जलाकर ख़ाक कर डालता। उसकी इस हरकतसे बहुतेरी जगहोंकी प्रजा अत्यन्त त्रस्त और भयभीत होकर, अपनी जान ले और नादिरका राज्य छोड़कर भाग गयी। शहर-का-शहर उजाड़ हो गया! बस्ती-की-बस्ती वीरान बन गयी! न मालूम नादिरके हाथोंसे कितने सहस्र मनुष्योंका प्राण-नाश हुआ। लोगोंके हृदयमें भय उत्पन्न करनेके लिये नादिरने अपने राज्यके एक स्थानपर नर मुण्डोंका मीनार बनवा दिया। तक़ीज़ाँ और अन्यान्य सरदारोंकी उसने ऐसी दुर्गति की, उनके वंशको इस क्रूरताके साथ उसने विध्वंस किया, कि जिसकी बात सुनकर आज भी हृदय काँप उठता है!—रोंगटे खड़े हो जाते हैं!

क्रोध पापका मूल है और पापसे मनुष्यका क्षय होता है। अब नादिरशाहके पापका घड़ा भर गया। असंख्य प्रजाजनोंके हाहाकारका नादिरपर अब असर पड़ने लगा। नादिरशाह ताड़ गया, कि उसका काल उसके सरपर नाच रहा है! पल-पलपर

उसे अब अपने प्राणोंका भय होने लगा! हा, कालका भी पञ्जा कितना भारी, ज़बर्दस्त और कितना मज़बूत होता है! बड़े-बड़े योद्धा, साहसी, धीर और वीर भी इसके आगमनका आभास पाकर घबरा जाते हैं। उनका ख़ून सूख जाता है। मृत्यु-कालमें अपनी सारी अहम्मन्यता और घमण्डको भूलकर वे संसारको निस्सार रूपमें देखने लगते हैं! रण-धीर नादिरकी भी इस समय ऐसीही अवस्था हो रही है!

अस्तु; सन १७४७ ई० के जून महीनेकी बात है। नादिरशाह बलवाइयोंको शान्त करनेके लिये मशहदसे रवानः हुआ। फ़तहा-बाद पहुँचते-पहुँचते सन्ध्या हो चली। सारी पल्टन नादिर-शाहके साथ थी। उसका भतीजा अलीकुली तथा उसका लड़का अली अकबर भी उसके साथ था। नादिरशाहका विचार था, कि पल्टनको अलीकुली और अली अकबरके हवाले कर अपने कुछ आदमियोंके साथ आगेकी ओर बढ़े, पर मार्ग-जनित अनेका-नेक कष्टोंके झेलेने तथा महीनों लगातार युद्ध करते रहनेके कारण सब सिपाही थके हुए थे। सरदार और सिपहसालार सब भी थोड़ा आराम करना चाहते थे। यह बात नादिरशाहको मालूम हो गयी। उसने इसे स्वीकार कर लिया। इसलिये कुछ दिनोंतक फ़तहाबादमें रहकर, पूरा विश्राम कर लेनेके बाद आगे बढ़नेका विचार स्थिर हुआ। फलतः सारी पल्टन वहीं-पर ठहर गयी। कोई काम-काज न होनेके कारण वे सब इधर-उधर घूम-घामकर अपना मन बहलाने लगी।

इधर नादिरशाहके मस्तिष्कमें विचित्र-परिवर्त्तन हो आया।

उसने अपने जीवनकालमें न मालूम कितने सूर्य्यास्त देखे होंगे ; पर आजका सूर्य्यास्त उसके लिये बड़ाही विचित्र और विलक्षण था। आजके सूर्य्यको अस्त होते देखकर वह सृष्टिके सारे पदार्थोंकी अनित्यता और निस्सारताका अनुभव करने लगा ! सूर्य्यके उदय और अस्तसे उसे मनुष्यके भावोंके उदय और अस्त—उत्थान और पतनका बोध होने लगा ! उसके जीवनमें यह पहलाही अवसर है, जब उसका विचार संसारके भौतिक विभवसे विचलित हो, अध्यात्म-तत्वकी ओर अग्रसर हुआ है ! वह अब समझने लगा है, कि प्रबल, प्रतापी, प्रचण्ड तेजधारी, मार्तण्डका पतन अवश्यम्भावी है, तो इस तुच्छ मानव शरीरकी बातही क्या है ? इस विचारमें मग्न हो, सहसा वह एक बार काँप उठा ! उसके सारे शरीरमें कँपकँपी समा गयी ! वह बड़ाही भयभीत हो गया ! उसके होठ सूखने लगे ! जीभ तालूमें सटने लगी। शरीर बिल्कुल शिथिल हो गया। वह भीतर-ही-भीतर धैर्य्य धारण करनेका लाख प्रयत्न और साहस करता है, पर उसकी सारी चेष्टाएं बेकार होती हैं। मुसाहब और सरदार भी उसके पास मौजूद हैं। शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित सिपाही सब भी उसकी निगरानी और रक्षाके लिये उसके तम्बूके चारों तरफ़ चौकसी कर रहे हैं। पर तौ भी नादिरका भय दूर नहीं होता—उसके शरीरका कम्पन दूर नहीं होता।

नादिरशाहकी यह हालत देख, सभी लोग आश्चर्य-चकित हो गये ; पर किसकी हिम्मत, जो उसके सामने चूं तक भी करे। अभीतक उसके रोब और आतङ्कका असर उनके दिलपर

इतना अधिक पड़ा हुआ है, कि वे उसके स्वास्थ्यका हाल पूछने-का भी साहस नहीं करते। शेरके दाँतोंको भी उखाड़ लेनेका साहस करनेवाले नादिरशाहकी यह दशा निस्सन्देह दयनीय है—यह किसी प्रलयकारी परिवर्त्तनका परिचायक है! निदान बादशाहोंके बादशाह नादिरशाहकी यह हालत देख, उसके पास बैठे हुए कर्म्मचारी इस बातका अनुमान करने लगे, कि सम्भवतः अब इनकी मृत्यु बहुतही निकट है। सम्भव है, मुसाहबोंका यह अनुमान ठीक हो, पर नादिरशाहसे यह बात पूछे कौन?

धीरे-धीरे रात भी अधिक हो चली। राज्यके सभी कर्म्म-चारी और सिपाही सब सोने चले गये। वज़ीर और सिपह-सालार सभी अपने-अपने ख़ीमेमें आराम कर रहे हैं। अबतक भी नादिरशाहका भय, आतंक और कम्पन दूर नहीं हुआ। इसलिये उसने अपने एक नौकरको सिपहसालारके पास तथा दूसरेको वज़ीरके पास भेजकर उन्हें बुलवा भेजा। यद्यपि उस समय वे विश्राम कर रहे थे; गहरी नींदमें खर्राटे ले रहे थे, तथापि नादिरशाहकी आज्ञाको टालनेका उन्हें साहस न हुआ! विशेषकर जब, कि नौकरोंने उनके रोगकी वृद्धिकी बात कही, तब भला वे कैसे नहीं जाते? झट-पट अपने लिबास-पोशाक पहनकर वे फ़ौरन नादिरशाहके पास आये। उसे देखकरही वे समझ गये, कि इसके मस्तिष्कमें किसी प्रकारका भय प्रवेश कर गया है, जिससे यह इतना व्यग्र हो रहा है। बादशाहको अपना-अपना यथोचित आदर-सम्मान प्रदान करनेके बाद वज़ीर आज़मने पूछा,—"जिनके नाममात्रके श्रवणसे बड़े-बड़े वीरोंका कलेजा

काँप उठता है, क्या कारण है, कि वेही शाहों-के-शाह नादिरशाह आज स्वयं इतना अस्वस्थ हो रहे हैं?"

इनके उत्तरमें नादिरशाहने बड़े मधुर शब्दोंमें यों कहा,—"मेरे वफादार और बुज़ुर्ग वज़ीर! आपलोग आकर दूरपर क्यों बैठ गये? आइये, कृपाकर मेरे पास आकर बैठिये। आप लोग मेरे इस आसनपर विराजमान होइये।"

नादिरशाहके मुखसे आज पहले-पहल ऐसे मधुर शब्दोंको सुन, वज़ीर और सिपहसालार अपने-अपने स्थानसे उठकर नादिरशाहके पास आकर बिछावनपर बैठ गये। फिर नादिरशाहने उनसे कहना शुरू किया,—"आज सूर्य्यास्तके समयसे मैं हदसे जियादः अस्वस्थ हूँ; इतना भय, और आतंक मेरे जीवनमें आज पहले-पहल मालूम हुआ है। आज सूर्यास्त होनेके बादसे मेरे हृदयमें ऐसी-ऐसी भावनाएँ उत्पन्न हुई हैं, जैसी मेरे जीवनमें कभी नहीं हुई थीं। उस समय मानों मुझसे कोई यह कह रहा था, कि—'नादिर! इस नाशवान्, अनित्य संसारमें कोई भी मनुष्य अजर-अमर होकर नहीं आया है। मनुष्यके शुभाशुभ कर्म्मोंके अनुसारही उसका यश और अपयश इस पृथ्वी-तलपर रह जाता है। मनुष्यको चाहिये, कि वह अपने इस अल्प और क्षण-भङ्गुर जीवनमें सदा सत्कार्य्य करे; अन्यथा केवल उसकी अपकीर्त्तिही यहाँ रह जाती है। इस तुच्छ जीवनकी अवधि पूरी होनेपर क्या सज्जन और क्या दुर्जन सभी इस संसारसे कूच कर जाते हैं। काल किसीको भी नहीं छोड़ता। काल-चक्रके फ़ौलादी पंजेसे कोई भी शरीर-

धारी प्राणी अपनी रक्षा नहीं कर सकता। उदयके पश्चात् अस्त तथा अस्तके पश्चात् उदय होताही रहता है। उन्नतिके बाद अवनति तथा अवनतिके बाद उन्नति होती है। दिनके बाद रात और रातके बाद दिन होती ही है। इसी प्रकार जीवनके बाद मरण और मरणके बाद जीवन होता है। यह तो सृष्टिका नियम है। इस नियमसे बाहर कोई भी मनुष्य नहीं हो सकता। सभी इस नियमके अधीन हैं। नादिर! तुम्हारी आयु आज पूरी हो चुकी! आज तुम्हारी जीवन-यात्रा समाप्त हो चुकी! आज सूर्यास्तके साथ-साथ तुम्हारा भी मरण निश्चित है, इसे तुम बिल्कुल ठीक जानो! मृत्युके इस आक्रमणको रोकनेमें तुम्हारी कोई भी सेना समर्थ नहीं हो सकती। इसलिये अब अपने जीवनके अन्ततक यदि तुम्हें परमात्माका नाम लेना हो, तो ले लो।' मेरे दाना वज़ीर! इसका क्या रहस्य है? मेरी समझमें तो यह बात तनिक भी नहीं आती। वरन मेरा चित्त चञ्चल, व्यग्र और भयातुर हो उठा है। इसका कारण क्या है, यह भी मेरी समझमें नहीं आता!"

शाहन्शाहकी ये बातें सुनकर वज़ीरे आज़मने कहा,—"शाह-न्शाह ईरानके मुखसे ऐसे कायरतापूर्ण शब्दोंको सुनकर मुझे बड़ाही आश्चर्य हो रहा है! विश्व-विजेता बननेकी महदा-कांक्षा रखनेवाले बादशाह! आप मृत्युके भयसे इतने भीत हो जायें, यह बात तो मैंने आजही सुनी है। मेरा तो यही अनुमान है, कि यह केवल आपकी अस्वस्थ प्रकृतिका परिणाम है। अनागत भयकी कल्पनासे भयभीत हो जाना कायरोंका

लक्षण है। ईश्वर नादिरशाहके लिये ऐसा अकीर्त्तिकर भाव कदापि शोभा नहीं दे सकता! जहाँपनाह! मेरी गुस्ताख़ी माफ़ करें। बहादुर लोग मौतको सामने आयी देखकर भी कम-से-कम एक बार तो अवश्यही डट जाते हैं। आप वृथा चिन्ताभार अपने मस्तिष्कपर बोझ न डालें। अपने भावोंमें किसी प्रकारका भी विकार अथवा विकलता उत्पन्न न होने दें। जिन बातोंके रहस्यके विषयमें आपने पूछा है, उनमें कोई भी विशेषता नहीं है। यदि आपके चित्तमें शान्ति नहीं है, तो दो चार नर्त्तक-नर्त्तकियोंको बुलाकर आप उनका नाच-रङ्ग देखें-सुनें। क्यों सिपहसालारजी! आपका क्या विचार है?"

सेनापतिने विनम्रतापूर्वक इसका उत्तर दिया,—"वज़ीर साहब जो कुछ फ़रमाते हैं,वह बहुत ठीक है। मेरा तो विचार है, कि बहुत दिनोंके युद्धके अनवरत परिश्रमसे बादशाह सलामतकी तबीयत ख़राब हो गयी है। इसी कारणसे मनमें ऐसे-ऐसे व्यर्थके विचारोंका समागम हो आया है। मधुर गानोंके श्रवणसे तथा सुन्दर नृत्योंके अवलोकनसे, बहुत सम्भव है, बादशाहकी ये सारी चिन्ताएँ दूर हो जायें।"

वज़ीर और सिपहसालारकी इन बातोंसे नादिरशाह बहुत खुश हुआ। उसने उल्लास-भरे शब्दोंमें कहा,—"शाबास! मेरे प्यारे दोस्तो! निस्सन्देह ये शब्द नादिरशाहकेही वज़ीर और सिपहसालारके मुखसे शोभा पाते हैं! इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, कि आपके वाक्य बहुतही ओजपूर्ण और उत्साह-वर्द्धक हैं। पर यदि आप मेरे दिलकी बात पूछें, तो मैं यही कहूँगा, कि

न जाने क्यों मेरे मनमें एक विचित्र चिन्ताका समावेश हो आया है। लाख कारण ढूँढ़नेपर भी मैं इसका पता नहीं पा सका हूँ। मेरी अस्वस्थ्य प्रकृतिमें कुछ भी परिवर्त्तन होता नहीं देख पड़ता। आपकी बातोंसे प्रसन्न होनेपर भी मैं अपने हृदयमें सच्ची प्रसन्नताका अनुभव नहीं कर पाता। अस्तु ; यदि आपलोगोंकी मर्ज़ी हो,तो गायक और गायिकाएँ बुलवायी जायें। महफ़िल सज जाये।"

सब इन्तज़ाम ठीक हो गया। महफ़िलकी तैयारी होने लगी। राज्यके उच्चपदस्थ कर्मचारी नादिरशाहकी आज्ञा सुन, दौड़-दौड़कर उस महफ़िलमें आने लगे। पश्चात् नादिरशाह भी आकर एक बहुत क़ीमती मख़मली गद्देपर बैठ गया। गाना शुरू हुआ। तवायफ़ोंके नाच और गाने होने लगे। उत्साहमें आकर तवायफ़ोंने भी अपनी कला-कुशलताका इतना अच्छा परिचय दिया, कि बादशाह मारे ख़ुशीके मस्त होगया। जो गाने उसे अच्छे लगते, उन्हें गानेके लिये वह बार-बार फ़रमाइश करने लगा। इसी तरह बहुत रात बीत गयी। बादशाहको नींदने आघेरा। अब उसे सोनेकी ख़्वाहिश हुई। सरदार लोग भी उसके इस मनोभावको ताड़ गये। निदान बादशाहके हुक्मसे महफ़िल बरख़ास्त की गयी! बादशाह अपने तम्बूमें, अपनी ख़ास बेगम सिताराके साथ सोने चला गया। सरदार वग़ैरह भी अपने-अपने डेरोंमें आराम करने चले गये।

सितारा बेगम।

Burman Press, Calcutta

[पृष्ठ—१७१]

नादिरशाहकी मृत्यु।

पाठक पूर्व परिच्छेदमें यह पढ़ चुके हैं, कि नाच-गानके बाद नादिरशाह अपनी बेगम सिताराके साथ सोनेके लिये खीमेंमें चला गया। पाठकोंके आगे सिताराका नाम गत परिच्छेदमेंही पहले-पहल आया है, इसलिये उसका परिचय जाननेके लिये पाठक स्वभावतः उत्सुक होंगे। पाठक किसी पूर्व परिच्छेदमें नादिरशाहके भारत-आक्रमणकी बात पढ़ चुके हैं। उस परिच्छेदमें यह चर्चा भी हो चुकी है, कि नादिरशाहके दिल्लीपर विजय प्राप्त करनेके बाद, दिल्लीके तत्कालीन बादशाह महम्मद-शाहने अनेकानेक चीज़ें इस नवीन विजेताको भेंट की थीं, उन्हीं भेटोंमें सितारा भी एक थी।

सितारा एक राठोर-राजपूतकी कन्या थी। उसका असल नाम अहल्याबाई था। वह परमा सुन्दरी थी। जिस प्रकार उसे अपने रूपका अभिमान था, उसी प्रकार उसे अपने कुल और धर्म्मका भी गौरव था। उसकी अनुपम सुन्दरताका समाचार किसी प्रकार महम्मदशाहके कानोंतक पहुँच गया। व्यसन-विलासी महम्मद इस समाचारको सुनकर उसे प्राप्त करनेके लिये व्यग्र हो उठा। पहले तो उसने अनेक उपायोंसे उसके सम्बन्धि-

योंको अपने काबूमें कर बालिका अहल्याको अपने महलमें लाना चाहा। पर उसके ये सब छल-प्रपञ्च और प्रयास विफल हुए। निदान उसने उस बालिकाके सम्बन्धियोंको मरवाकर बलपूर्व्वक अबला अहल्याका अपहरण करनेका निश्चय किया। इसी निश्चयके अनुसार उसने अपनी सेनाको उसके सारे सबन्धियों को पकड़ लानेके लिये भेजा। उन राजपूत वीरोंने पहले मुग़लिया सेनाका अच्छी तरहसे मुक़ाबिला किया; पर कहाँ इधर असंख्य मुग़ल-सेना और कहाँ उधर मुट्ठीभर राजपूत वीर! निदान राजपूत-पक्षके सभी वीरोंने बालिकाके धर्म्मकी रक्षाके लिये अपने प्राण गवाँ दिये! मुग़लोंने ज़बर्दस्तीसे घरमें घुसकर अहल्याका हाथ पकड़ लिया। वह बलात् महम्मदशाहके पास दिल्लीमें लायी गयी। व्यभिचारी महम्मद उसके अनुपम रूपपर मुग्ध हो गया। उसे इतनी प्रसन्नता हुई, कि जितनी इन्द्रलोकका राज्य प्राप्त करनेसे भी किसीको नहीं हो सकती। पहले तो उस राजपूत-कन्याने महम्मदको दुर्वृत्तिका घोर विरोध किया। वह अपनी जान देने और महम्मदकी जान लेनेपर भी उतारू होगयी। पर बेचारी करही क्या सकती थी?—लाचार थी! अपनी जानभी न दे सकी; चौबीसो घण्टे शाहके रक्षक उसके पास मौजूद रहते थे। अहल्याका यह धर्म्म-हठ देखकर महम्मदशाह भी कुछ दिनोंतक बड़ी सावधानीसे उसके पास जाता था। अलगसे बातें करता, अपनी वासना परितृप्त करनेके लिये तरह-तरहके प्रलोभन दिया करता और ज्योंही वह बिगड़ उठती, त्योंही महम्मद शाह निराश भावसे उसकी आँखोंके आगेसे दूर

हट जाता। कुछ दिनोंतक वार-वार निराश होने और झिड़-कियाँ खानेपर भी महम्मदने अपना मनसूबा नहीं छोड़ा। ठीक है, कामियोंकी सर्वत्र यही हालत होती है!

संगतिका प्रभाव भी संसारमें कितना प्रवल होता है! सिंहका बच्चा भी गीदड़ोंकी संगतिमें रहकर और पलकर अपना वंश-गौरव और पराक्रम भूलकर गीदड़सा बन जाता है। पाठक! इसमें ज़रामें सन्देह न करें। जब महम्मदशाहने देखा, कि अपने किये कुछ बन न पड़ा, तो कई धूर्त्त धायोंको उसने बालिका अहल्याके बहकानेका काम सुपुर्द किया। पहले कुछ दिनोंतक तो वह अपने आग्रहपर डटी रही। पर 'कीट—भृङ्ग-न्याय'के अनुसार, शनैः शनैः उसके स्वभावमें परिवर्तन होने लगा। वह अपने आग्रहसे विचलित होने लगी। व्यभिचारी मर्दों और वेश्या-वृत्तिकरनेवाली मुसल्मान धायोंकी सङ्गतिमें निरन्तर चौबीसो घण्टे रहकर भी वह जितने दिनोंतक अड़ी रही, वही उसके लिये बड़ी भारी वात थी। अन्तमें अपने धर्म्म, जाति और सम्बन्धवाले लोगोंसे किसी प्रकारकी वाहरी सहायता प्राप्त होते न देख, वह महम्मदशाहके प्रेमका शिकार वन गयी। महम्मदशाहकी और-और पटरानियोंकी तरह वह भी महलोंमें रहने लगी।

जब नादिरशाहने दिल्लीपर विजय प्राप्त की, तब महम्मदशाहने नादिरशाहको प्रसन्न करनेके लिये, अन्यान्य वेगमोंके साथ सिताराको भी उसकी भेंट की। सिताराकी सूरत देख, नादिर-शाह उसपर लट्टू होगया। सर ड्यूरेण्डने अपने 'नादिर शाह'

नामक ग्रन्थमें लिखा है, कि पहले तो सितारा नादिरशाहको अपने पासतक फटकने नहीं देती थी ; पर अन्तमें परवश और असमर्थ हो, उसे नादिरशाहका साथ स्वीकार करनाही पड़ा। कुछ काल बाद दोनोंमें बड़ा प्रेम हो गया। तबसे नादिरशाह रात्रिका समय सदा सिताराकेही साथ बिताया करता था। इसी लिये नादिरशाहकी अन्यान्य बेगमें सितारासे डाह भी करने लग गयी थीं। जब कभी नादिर बाहर जाता, तब सिताराको भी अपने साथ लिये जाता। उसी सिताराके साथ आज फ़तहाबादमें नादिरशाह अपने ख़ेमेमें सोने जाता है।

ज्योंही नादिरशाह सिताराके पास पहुँचा, त्योंही सितारा उसका मुख देखकर आश्चर्य्य-चकित होगयी। उसने पूछा,—"प्राणनाथ ! आज आपकी हालत ऐसी क्यों है? आप इतने उदास क्यों देख पड़ते हैं?" नादिरशाहने पहले तो उसकी बातको टाल देना चाहा। पर उसके बहुत आग्रह करनेपर नादिरशाहने कहा,—"प्रिये ! न मालूम क्यों, आज सन्ध्या समयसे मेरा चित्त बहुतही उदास है ? हृदय भय और व्यग्रतासे भर गया है। रह-रहकर मेरी तबीयत घबरा उठती है। हृदयमें बहुत ढाढ़स लाना चाहता हूँ ; पर दिल जैसाका तैसा बना रहता है। मालूम होता है, मेरी मृत्यु बहुतही निकट है ?"

नादिरशाहके इन कातरता-भरे शब्दोंको सुनकर सितारा घबरा उठी। उसने कहा,—"प्राणनाथ ! आप यह क्या बक रहे हैं? मौत आपके दुश्मनको आये। आपपर उसका आक्रमण क्यों होने लगा ? चिन्ता और भय केवल मानसिक विकार

मात्र है। आप प्रसन्न मनसे बातें करें। आपकी तबीयत अभी ठीक हो जायेगी, नींद आजानेसे फिर प्रातःकाल किसी प्रकारका रोग अथवा कष्ट आपके पास फटकने नहीं पायेगा।

सिताराके सान्त्वना देनेपर नादिरशाह उसकी गोदमें अपना सिर रखकर सो गया। सितारा उसके सिरपर अपना हाथ फेरने लगी। नादिरशाहको सोये अभी थोड़ीही देर हुई थी, कि वह एक-ब-एक घबराकर उठ बैठा। पहले तो हँसने लगा, फिर उसका मुख महा भयङ्कर देख पड़ने लगा! सितारा यह हाल देखकर बहुत डर गयी। उसने नादिरशाहसे प्रेम भरे शब्दोंमें घबराकर उठनेका कारण पूछा। नादिरशाहने कहा,— "प्रिये! तुम मेरे लिये बेकार चिन्ता कर रही हो। मैं बार-बार तुमसे कह रहा हूं, कि मेरी मृत्यु सन्निकट है। संसारमें मैं अब मिनटोंका मेहमान हूँ। अपने किये अनर्थों—अन्यायोंका मैं आज फल भोग कर रहा हूँ। अभी मैंने जो स्वप्न देखा है, उससे भी तो मालूम होता है, कि आज रातको इस संसारसे मेरी विदाई होगी।"

सिताराने विनीत भावसे पूछा,—"नाथ! आपने ऐसा क्या स्वप्न देखा है, जो इतना डर गये हैं?"

नादिरशाहने कहा,—"मैंने देखा है, कि मेरे राज्यकी सभी प्रजा बिगड़ उठी है। सबने मेरे विरुद्ध बलवा कर दिया है। सबका कहना है, कि मैं महा अत्याचारी और अन्यायी शासक हूँ। मेरी शासन-नीति, मेरे एक भी प्रजाजनको पसन्द नहीं है। मेरे सभी सरदार, सुबेदार, बेटे तथा भतीजे भी मुझसे बिगड़

उठे हैं। अलीकुली, जिसे मैंने हालमेंही सिपहसालार बनाया है, वह मुझे मरवा डालना चाहता है। उसकी ख़्वाहिश है, कि मेरी मृत्युके बाद वही यहाँके राज-सिंहासनपर बैठे। वे सब मिलकर आज रातकोही मेरा काम तमामकर दिया चाहते हैं।"

वह ऐसी बातें करने लगा, जिनसे यही मालूम होता है, कि नादिरशाहकी हालत इस समय शेक्सपियरके 'मैकबेथ'की सी हो रही थी। उसके चारो ओर विभीषिकामय दृश्य दिखाई दे रहे थे।

सिताराने कहा,—"नाथ! यह सब आप क्या कह रहे हैं? स्वप्न भी कभी सच्चा होता है? एक अलीकुली क्या, यदि हज़ार अलीकुली आयें, तो भी वे आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। दुनियाँमें किसीको भी हिम्मत नहीं, कि आपकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ चूँ तक करे। कृपाकर आप तनिक भी न घबरायें। आप निश्चिन्त होकर आरामसे मेरी गोदमें सो जाइये। डर किस बातका है? फ़ौजी सिपाही तो चारो तरफ़ पहरा दे ही रहे हैं।"

सिताराके इन शब्दोंका उत्तर नादिरशाहने इस प्रकार दिया,—"प्रिये! तुम नहीं जानती हो। मेरा स्वप्न झूठा नहीं, बिल्कुल सत्य है। अलीकुली कई दिनोंसे मुझसे अलगही रहता है। वह तो आज महफ़िलमें भी नहीं आया था। कई सरदार, जिन्हें मैं जानसे भी अधिक मानता था, मुझसे बहुत असन्तुष्ट हैं और वे अलीकुलीका साथ दे रहे हैं। सारी सेनापर उन लोगोंने अपना प्रभाव जमा रखा है। कितनेही अफ़ग़ानी मुझे मार डालनेके लिये भर्ती किये गये हैं। मेरी हत्या करनेके बाद उन्हें इनाममें काफ़ी रक़म दी जायेगी।"

इसपर सिताराने कहा—"प्राणेश्वर! यह सब प्रलाप-विलाप बेकार हैं। आप विश्वास रखिये, आपका कुछ भी नहीं होगा। इस समय आप धैर्य्य धारण करें, फिर प्रातःकाल इन सब बातोंका समुचित प्रबन्ध किया जायेगा। बहुत रात बीत गयी है। इस समय इन बातोंको छेड़नेसे शोर-गुल अधिक बढ़ जायेगा। चारों तरफ़ कोलाहल मच जायेगा। अतः आप सुख-पूर्वक निश्चिन्त हो विश्राम करें।" इस प्रकार समझा-बुझाकर सिताराने अपनी स्त्री-सुलभ भाव-भङ्गियोंके सहारे शाहको कुछ सन्तुष्ट किया। शाह फिर उसकी गोदमें सो गया। सितारा थोड़ी देर तक जागी रही। शाहके सुखपूर्वक सो जानेपर उसके चित्तमें भी कुछ शान्ति हुई। वह भी सो गयी।

पाठक! अब ज़रा अलीकुलीकी करामात सुनिये। उधर नादिरशाह तो आज सन्ध्या समयसेही बेचैन था। इधर अलीकुली उसकी हत्या करनेके प्रबन्धमें लगा हुआ था। उन लोगोंने चन्द अफ़ग़ानियोंको इस कामके लिये पहलेसे मुक़र्रर कर रखा था, कि आज रातको जब नादिरशाह अपने तम्बूमें सोनेके लिये जाये, तभीसे ये अफ़ग़ानी उसकी घातमें लग जायें। जब इस बातका पूरा पता मिल जाये, कि नादिरशाह नींदमें सोया हुआ है, तब वे उसके तम्बूमें घुस जायें और उसकी हत्या कर डालें। यदि वे इस काममें सफल-मनोरथ हुए, तो उन्हें पर्याप्त पुरस्कार प्रदान किया जायेगा! मौलाबख़्श तथा अशरफ़ख़ाँ, जो नादिर-शाहके दो परम प्रिय अनुचर थे तथा जो अब छिपे-छिपे नादिरके जानी दुश्मन बन बैठे हैं, इस बातका पता लगानेपर मुक़र्रर हुए।

अस्तु; जब नादिरशाह सोनेके लिये महफ़िलसे उठकर चला गया, तब दूतोंने अलीकुलीखाँको इस बातकी ख़बर दी। अलीकुली, मौलाबख़्श, अशरफ़खाँ आदि निश्चित हत्यारोंको लेकर नादिरशाहके ख़ीमेकी ओर रवानः हुआ। अलीकुलीको पहलेही इस बातकी ख़बर लग गयी, कि नादिरशाह आज बेगम सिताराके साथ सोने गया है। अतएव वे लोग उसी ओर चल पड़े। ख़ीमेके पास जाकर सब एक ओर छिप गये। ख़ीमेमें जबतक हल्ला होता रहा, वे सब अपनी जगहपर बैठे रहे। जब उन्हें इस बातका विश्वास वहींपर बैठे-बैठे हो गया, कि नादिरशाह अब सिताराके साथ गाढ़ी नींदमें ख़र्राटे ले रहा होगा, तब मौलाबख़्श अपनी जगहसे उठकर नादिरशाहके ख़ीमेकी ओर देखने आया। उसने देखा, कि दोनों स्वामी-स्त्री सुखपूर्वक सोये हुए हैं। उसने झट यह ख़बर अपने अन्यान्य साथियोंको दी। निदान सब-के-सब अब नादिरशाहके ख़ीमेकी ओर रवानः हुए।

मृत्युके मुखमें अभी-अभी पहुँचनेवाले नादिरशाहको निद्रा कहाँ? ज्योंही हत्यारे ख़ीमेमें घुसना चाहते थे, त्योंही नादिरशाह जाग पड़ा! वह ताड़ गया, कि अब मेरा काल आ गया! पासमें रखे हुए फावड़ेको उठाकर वह झट अपने बिछावनसे कूद पड़ा और सामनेके दो हत्यारोंका काम उसने क्षण भरमेंही तमाम कर दिया! इतनेमें सिताराकी भी नींद खुल गयी। वह भी एक तलवार लेकर आततायियोंपर टूट पड़ी! नादिरशाहने उसे ऐसा करनेसे रोकना चाहा। उसने कहा,—"सितारा! तू अब यहाँसे जल्द भाग जा। मेरा तो वक़्त अब पूरा हो चुका

तू क्यों अपनी जान देगी ? मेरी मुहब्बतको अब तू भूल जा। और अपनी रक्षाका कोई उपाय कर।

नादिरशाह सितारासे यह कहही रहा था, कि इतनेमें एक तीसरे हत्यारेने आकर उसकी गर्दनपर एक भयङ्कर वार किया। नादिरशाह उस वारको न देख सका था। बस, उसकी गर्दन धड़से अलग हो, पृथ्वीपर गिर गयी! इस प्रकार अनेक देशोंके वि जेता, अनेक बादशाहोंके बादशाह, असीम साहसी, महापराक्रमी, वीरवर नादिरकी संसार-लीलाका अन्त होगया!

नादिरकी यह अवस्था देख और उन हत्यारोंसे अपनी सतीत्व-रक्षा करनेमें अपनेको असमर्थ जान, सितारानेभी अपने हाथकी तलवारको गले लगा लिया और अपने पतिका अनुगमन किया!

नादिरशाहकी मृत्युके थोड़ीही देर बाद मौलाबख़्श तथा अशरफ़ ख़ाँने उस ख़ीमेमें प्रवेश किया। अपने कार्य्यमें सफल होकर, वे सब परम प्रसन्न हुए। ख़बर पातेही अलीकुली भी घटना-स्थलपर आ जुटा। वहीं यह निश्चित हुआ, कि प्रातःकाल अलीकुली सिंहासनारूढ़ हो, नादिरशाहका ताज पहन, शासन-दण्ड अपने हाथोंमें ग्रहण करे।

"ज़मीं किसकी मकाँ किसका, ये जबतक दमका फेरा है।
ये स्वहोशाम है और रोज़ रौशन है, सवेरा है।
हुई' जब बन्द आँखें, जान ले चिड़िया बसेरा है।
ऐ पुतले ख़ाकके! फिर महल तेरा है न मेरा है।

नादिरशाहका रूप और चरित्र।

नादिरशाहका शरीर लम्बा और सुडौल था। देखनेमें बड़ाही सुन्दर था। मुँह लम्बा, नाक लम्बी और कुछ ऊपरकी ओर उठी हुई तथा आँखें बड़ी-बड़ी थीं। बदन गठा हुआ और नसें तनी हुई थीं। उसका रंग साँवला था। उसकी आवाज़ बहुत तेज़ और बलन्द थी। कुछ फ़ासलेपर खड़ा हुआ मनुष्य,उसकी साधारणतया धीमी आवाज़को भी भली भाँति सुन सकता था। उसकी त्योरियाँ सदा चढ़ी हुई रहती थीं। उसके शरीरसे मस्ती और स्फुर्ती सदा टपकती रहती थी। उसके प्रथम दर्शन मात्रसे लोगोंके हृदयमें उसका भय छा जाता था।

ये सब बातें तो हुईं उसके शारीरिक सङ्गठनके सम्बन्धकी। अब हम यहाँपर उसके चरित्रकी भी कुछ चर्चा कर देना चाहते हैं। स्थूल दृष्टिसे विचार करनेपर उसका चरित्र पग-पगपर कलंकित प्रतीत होता है और सर्व साधारणकी धारणा भी कुछ ऐसीही है। पर यह धारणा सर्वतोभावेन ठीक कदापि नहीं कही जा सकती। यों तो इस संसारमें बिल्कुल निष्कलङ्क चरित्र कदाचित्ही किसीका कहा जा सकता है। निष्कलङ्क तो केवल परमात्मा ही है। जब मर्यादा पुरुषोत्तम

रामचन्द्र या योगिराज कृष्णचन्द्र तक समालोचकोंके कुठार-प्रहारसे अपनेको नहीं बचा सके, तब संसारमें दूसरा ऐसा कौन पैदा हो सकता है, जिसपर कलङ्कके दो-चार छींटे उसके जीवन-पटपर रास्तेमें चलते भी न पड़ जायें।

नादिरशाह तो एक साधारण मनुष्य था और जिस प्रकार मनुष्यके भीतर भले-बुरे दोनों गुण रहते हैं, उसी प्रकार नादिरशाहके हृदयमें भी सद्‌गुण तथा दुर्गुण दोनों वर्त्तमान थे। मनुष्य होते हुए मनुष्यके सदृश हार्दिक तथा मानसिक दुर्बलता उसमें भी पायी जाती है। पर किसी मनुष्यकी परीक्षा उसके गुणोंकी बहुलतापर होती है। यदि किसी मनुष्यमें सद्‌गुणोंकी अधिकता है, तो उसके अन्दर कुछ अवगुणोंके रहनेपर भी वह भला मनुष्यही कहा जायेगा। इस बातको ध्यानमें रखते हुए हमारे विचारमें नादिरशाह उतना बुरा आदमी नहीं था, जितना लोग उसे समझते हैं। यदि सिकन्दरको इतिहास-लेखकोंने भला माना है, यदि नेपोलियनका दर्जा इतिहासमें अच्छा गिना जाता है, तो इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, कि नादिरशाह भी एक अच्छा आदमी था। पाठकगण! आइये, हमलोग इसकी परीक्षा कर देखें, कि नादिर किस कोटिका मनुष्य था?

नीतिकारोंका कथन है :—

'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी।
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति॥'

इस नीतिवाक्यको सामने रख हम देखते हैं, कि नादिरशाह बड़ा भारी उद्योगी था—पुरुषसिंह था, इसमें तिल मात्र भी शंसय

नहीं। उसके निरन्तर उद्योगका ही यह फल था, कि एक अदना, साधारण, सामान्य वरन् परम दरिद्र परिवारमें जन्म लेकर भी, वह एक दिन शाहोंका शाह बन गया। वह केवल ईरान और तुर्किस्तानकोही अपने कब्ज़ेमें नहीं लाया, वरन् अफ़गानिस्तान, बलूचिस्तान, हिन्दुस्तान और अर्बिस्तानका भी मालिक बन बैठा। बाल्यकालमें नादिरशाहकी जैसी परिस्थिति थी, वैसी यदि सिकन्दर और नेपोलियनकी होती, तो उनके गुण-गानमें आज इतिहासके इतने पन्ने कदापि नहीं रंगे जाते। सिकन्दर और नेपोलियन घरके दरिद्र नहीं थे। उनके पास विद्या, बुद्धि और साधन भी थे। नेपोलियनने तो आधुनिक विज्ञानसे भी बहुत कुछ लाभ उठाया; पर यह सौभाग्य और गौरव नादिरशाहको ही प्राप्त है, कि लिखने-पढ़नेसे कुछ भी सम्बन्ध न होनेपर भी उसने दरिद्रताको लात मार, अपने एक मात्र उद्योगसे इतने देशोंके राजा-महाराजोंको परास्तकर उनपर अपना सिक्का जमाया। हमारा तो यहाँतक विश्वास है, कि यदि इन दिनों नादिरशाह होता, अथवा यदि संग्रामके सारे आधुनिक साधन उस समय उसके पास मौजूद होते, तो जिस विश्व-विजयकी अभिलाषाको जर्मनीका कैसर अथवा फ्रांसका नेपोलियन पूरा न कर सका, उसे नादिरशाह अवश्यही करके छोड़ता। आज वह संसारके इतिहासमें विश्व-विजेताके नामसे प्रसिद्ध होता; पर यद्यपि वह ऐसा नहीं हो सका, तथापि जो कुछ उसने किया, उतनाही नेपोलियन और सिकन्दरकी विजयोंसे किसी प्रकार कम नहीं है।

यह तो हुई नादिरके उद्योगकी बात। अब उसके पुरुषार्थकी

बात भी ले लीजिये। नादिरशाह परम पुरुषार्थी और वीर-केसरी था। जहाँपर उद्भटसे उद्भट योद्धाओंकी भी अक्ल कोई काम नहीं करती, वहाँपर, ऐसा अनेक बार देखा गया है, कि नादिरशाहने केवल अपना फावड़ा लेकरही समस्या हल कर दी है और अपनी अतुलित वीरता द्वारा हज़ारों विपक्षियोंका शिरच्छेदनकर दुश्मनोंके छक्के छुड़ा दिये हैं।

इतनाही नहीं, उसके जीवन-कालके युद्धोंमें अनेक बार हमें ऐसी घटना भी मिली है, कि एक ओर विपक्षियोंकी असंख्य सेना सारे अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित होकर नादिरशाहकी फ़ौजपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ी आ रही है और दूसरी ओर नादिरशाह अपनी मुट्ठीभर सैनिकोंसे उनका मुक़ाबिला करनेके लिये अड़ा खड़ा है। उसकी फ़ौज अपने आगे विपक्षियोंकी असंख्य सेनाको देखकर घबरा उठती है और पीछेकी ओर लौटना चाहती है। पर वीरवर नादिरशाह अपनी उसी मुट्ठी-भर सेनाको ललकारता हुआ आगे बढ़ाता है और सबसे पहले आपही दुश्मनोंपर टूट पड़ता है। शत्रु-दल गोलियों और तलवारोंका हज़ारों वार उसपर करता है; पर पुरुषसिंह नादिर उन्मत्त गजराजकी तरह दुश्मनोंके कदली-वनको उजाड़ता और संहार करता हुआ, बार-बार बचकर फिर अपने दलमें आ मिलता है। तारीफ़ तो नादिरशाहकी इस बातमें है, कि अपने जीवन-कालमें, उसने जो सैकड़ों युद्ध किये, उनमें बराबरही वह अपनी सारी फ़ौजसे आगे रहा, उसपर दुश्मनोंके लाखों वार हुए; पर किसी युद्धमें उसके शरीरपर एक घाव भी न लगा!

उदारताकी मात्रा भी नादिरशाहमें किसी प्रकारसे कम नहीं थी। न जाने अपने शासन-कालमें लूट-पाट तथा पराजित बादशाहोंके उपहारोंमें उसे कितने करोड़ रुपये मिले होंगे ? यदि उन्हें वह संचित करना चाहता, तो उन रुपयों और असबावोंको रखनेकी भी जगह उसके पास नहीं होती। पर उसने ऐसा नहीं किया। केवल अपनी उदारताके वशीभूत हो, उसने उन सारे धन-रत्नोंको अपनी फ़ौज और नौकरोंमें बाँट दिया। अपने आदमियोंको वह समय-समयपर इनाम भी बहुत अधिक दे दिया करता था। एक दिनकी घटना है, कि वह अपने महलमें ख़ानगी लिबासमें बैठा था। एक वृद्ध द्वारपाल, अपने सामान्य वेशमें उसकी तावेदारीमें उसके पासही खड़ा था। नादिरशाहको उस द्वारपालकी अवस्था देखकर सहसा बड़ी दया आ गयी। उसने एक-ब-एक बिना कुछ कहे-सुने, उसे एक हज़ार अशर्फ़ियाँ बख़शीश दे दीं। नादिरशाहके दानने उस द्वारपालको एकही क्षणमें दरिद्रसे धनवान् बना दिया! अपने मुसाहबोंके यह पूछनेपर, कि इतनी अशर्फ़ियाँ लेकर यह वृद्ध पुरुष क्या करेगा, नादिरशाहने उत्तर दिया, कि 'इसके मर जानेपर कम-से-कम इसके लड़के तो सुख-चैनसे अपनी ज़िन्दगी बसर करेंगे।'

नादिरशाहकी स्मरण-शक्ति भी बड़ी तीव्र थी। वर्षों पेश्तरकी बात वह क्षण भरमेंही स्मरण कर ले सकता था। अकसर वह वर्षों पहलेकी बीती घटनाको भी समय पड़नेपर ज्यों-का-त्यों दुहरा देता था। अपने हज़ारों नौकरोंमें प्रायः सबके नाम उसे याद रहते थे। प्रायः सभी सिपाहियोंके

नाम भी उसे याद थे। उसकी इस विलक्षण और अद्भुत स्मरण-शक्तिको देखकर उसके कर्म्मचारी चकित-विस्मित रह जाते थे।

एक समयकी बात है, कि वह दरबारमें बैठा हुआ था। एक अफ़ग़ानी सिपाही उसके पास आया और नौकरीकी प्रार्थना की। इसपर नादिरशाहने उससे पूछा,—"क्या इसके पहले तुम और कहीं नौकरी करते थे?" सिपाहीने उत्तर दिया,—"हाँ, हुज़ूर! इसके पहले मैं एक राजाके पास नौकरी करता था। मेरी सेवासे प्रसन्न हो, समय-समयपर वे मुझे बहुत इनाम दिया करते थे। नमक-हलाली और वफ़ादारीके साथ सदा मालिकका काम करनाही मेरा स्वभाव है। सिपाहीकी यह बात सुनकर नादिरशाह बोला,—"सन् १७३१ ई० में तुम मेरी फ़ौजमें सिपाहीका काम करते थे न? एक दिन तुम्हारे किसी कामसे ख़ुश होकर मैंने तुम्हें इनाम भी दिया था। क्या वह बात तुम्हें याद है, मियाँ अब्दुल्लाह!"

मियाँ अब्दुल्लाह अपने पुराने मालिकके मुँहसे अपना नाम सुनकर बहुत ताज्जुबमें आ गया। वह इस बातपर बहुत आश्चर्य्य करने लगा, कि इतने बड़े बादशाहको मेरे जैसे तुच्छ सिपाहीके सम्बन्धकी, इतने दिनोंकी पुरानी घटना, आजतक याद है! फिर हाथ जोड़कर वह सिपाही बोला,—"जहाँपनाह! आपकी बात बिल्कुल ठीक है। यह गुलाम आपकी ख़िदमतमें था और आज फिर आपकी ख़िदमत करनेके लिये हाज़िर हुआ है।"

नादिरशाहने फिर पूछा,—"जो एक हज़ार रुपये मैंने तुमको दिये थे, क्या उस रक़मको अपने बाल-बच्चोंको खिलाने-

पिलानेमें तुमने ख़र्च कर डाला है ? मुझे तो प्रतीत होता है, कि उन रुपयोंके ख़र्च हाजानेपरही तुम मेरे पास फिर नौकरी करनेके लिये आये हो।"

सिपाहीने उत्तर दिया,—"शाहन्शाह ! वे रुपये ख़र्च तो नहीं होगये ; पर खो ज़रूर गये हैं। एक दग़ावाज़ औरतसे मेरा काम पड़ गया। उसीके हाथों मैंने अपना सारा माल-असबाब छोड़ रखा था। एक दिन वह एक दूसरे पुरुषके साथ फँसकर और मुझे दरिद्र बनाकर कहीं भाग गयी है। इसलिये मैं फिर भी हुज़ूरकी ख़िदमतमें हाज़िर हुआ हूँ। मुझे पूरी उम्मीद है, कि हुज़ूर इस ख़ाकसारपर ज़रूरही मिहरबानी करेंगे।"

नादिरशाह और उस सिपाहीके बीच इस वार्त्तालापको सुनकर वहाँपर उपस्थित सारे दरबारी शाहकी इस अपूर्व स्मरण-शक्तिपर दाँतों उँगलियाँ काटने और कहने लगे,—"सन् १७३८ ईस्वीकी एक महज़ मामूली बात आज आठ बर्षोंके बाद भी शाहको बख़ूबी याद है।

नादिरशाहमें और भी अनेक सद्गुण भरे पड़े थे। वह बड़ा भारी कर्त्तव्य-परायण मनुष्य था। उसके दैनिक जीवनमें कदाचित्‌ही कोई ऐसा समय व्यतीत होता हो, जब कि वह किसी-न-किसी काममें संलग्न न पाया जाता हो। आहार-विहार और आमोद-प्रमोदमें चाहे जितना लवलीन क्यों न हो, पर यदि कोई राज-कार्य्य उसके सामने आकर उपस्थित होता, तो वह सबको लात मारकर फ़ौरन राज-काज देखनेमें लग जाया करता था। एक दिनकी बात है, कि वह राज-कार्य्यके सभी दैनिक झंझटोंसे

मुक्त हो, रात्रिमें नाच-गान सुन रहा था। उसी समय एक राज-कर्म्मचारीने उसके पास आकर किसी कामकी सूचना दी। नादिर तत्क्षण महफ़िलसे उठ गया और उस कार्य्यमें लग गया। चन्द मुसाहबोंने और कुछ देरतक महफ़िलमें ठहरनेकी प्रार्थना की; पर उसने किसीकी एक भी न सुनी। वह यह कहता हुआ महफ़िलसे विदा हुआ, कि —"पहले मेरे सामने राज-काज है आमोद-प्रमोद तो छुट्टीके सामान हैं।" यदि ऐसा कर्त्तव्य-ज्ञान और ऐसी तत्परता नादिरशाहमें न होती, तो नादिरका नाम भी कोई न सुन पाता।

नादिरशाह अपनी न्यायप्रियताके लिये भी बहुत प्रसिद्ध था। न्याय करते समय, राजा-रङ्क, धनी-दरिद्र, सबको वह एकही दृष्टिसे देखता था। वह किसीके साथ किसी प्रकारका भेद-भाव नहीं रखता था। पक्षपात किस चिड़ियाका नाम है, यह कभी उसने जानाही नहीं। एकही प्रकारके अपराधके लिये वह जो दण्ड एक साधारण प्रजा-जनको देता था, राज्यके बड़े-बड़े कर्म्मचारियों और अपने सम्बन्धियोंको भी वह वही दण्ड देता था। इस तरह न्यायका तो वह एक प्रकारसे आदर्शही था।

नादिरशाह अपने वचनका बड़ाही सच्चा था। एक बार उसके मुँहसे जो बात निकल जाती, जी-जानसे उसका पालन करना, वह अपना फ़र्ज़ समझता था। वह कभी अपने वचनसे नहीं टलता था। फलतः वह यह भी चाहता था, कि उसके राज्यके सभी मनुष्य तथा उसके अधीनस्थ सभी व्यक्ति अपने वचनके अनुकूल आचरण करें। जब वह किसीको अपने वचनके

विपरीत काम करते देखता था, तब वह उस आदमीपर बुरी तरह बिगड़ उठता था। वह उसे ऐसा कठिन दण्ड देता था, कि लोग उसे मन-ही-मन क्रूर, निर्दयी और ज़ालिम भी कह डालते थे।

नादिरशाह सादगीका तो मानों अवतारही था। वह सदा सादा वस्त्र पहनता और साधारण भोजन ग्रहण करता था। किसी प्रकारके शृङ्गार अथवा सजावटसे उसे बड़ी घृणा रहा करती थी। वह कहा करता था, कि 'अपने बदनको इन शृङ्गारों और सजावटोंसे सजना-धजना तो स्त्रियोंका काम है। पुरुषको परमात्माने इसके लिये पैदा नहीं किया है।' पर, खान-पानका शौक न होनेपर भी रात्रिमें थोड़ीसी शराब वह सदा पिया करता था और ऐसा वह इस लिये करता था, जिसमें दिन-भरकी थकावट-माँदगी दूर होजाये। यह विचारकर कि ईरानके प्रायः सभी लोग मदिरा पान करते हैं, तथा मदिरा-पान वहाँ धर्म्म-संगत है, इसलिये नादिरशाहका यह अभ्यास दूषित नहीं कहा जा सकता।

रात्रिमें उसके दरबारे खासमें हमेशा महफ़िल बैठा करती थी। राज्यके बड़े-बड़े कर्म्मचारी उस महफ़िलमें इकट्ठा हुआ करते थे। नादिरशाह भी कुछ समय तक उस महफ़िलमें बैठता था और नाच-रङ्गमें शरीक हुआ करता था। सम्भव है, कुछ पाठक नादिरशाहके इस कामको बुरा समझें और कहें, कि जिसके हाथोंमें इतने बड़े साम्राज्यके शासनका उत्तरदायित्व था, जिसके सिरपर इतनी प्रजाके पालनका भार था, उसके

लिये इस प्रकार नाच-रङ्गमें शामिल होना, कभी प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। परन्तु बात यह है, कि जिसकी नित्यकी, दिन-चर्या हजारों लाखों आदमियोंके भाग्यको उलट-पलट देनेवाली होती है, जिसके हृदयमें संसार-ग्रासिनी आकांक्षाएँ होती हैं, वह यदि अपने मस्तिष्कको विराम लेने न दे, तो वह अवश्यही विकृत हो जायेगा और वह किसी कार्यके योग्य भी नहीं रह जायेगा। नादिर भी इसी विचारसे नाच-रंगमें शरीक हुआ करता था। अतः नादिरशाहका यह कार्य भी राजनीतिक दृष्टिसे विशेष गर्हित और अक्षम्य नहीं कहा जा सकता। हाँ, यह अक्षम्य तभी कहा जा सकता था, जब कि वह सदा भोग-विलासमेंही डूबा रहता और अपने राज-काजकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता अथवा उसकी उपेक्षा करता।

ये बातें तो हुईं नादिरशाहकी प्रशंसाकी। अब पाठकोंको यह बतला देना भी हमारा कर्त्तव्य है, कि उसमें कोई दोष था अथवा नहीं। ऐसा अनुमान करना, कि उसमें कोई दोष नहीं था, सरासर ग़लत होगा; कारण, आख़िरकार वह भी मनुष्यही था और संसारमें कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं पाया गया है, जो सर्वतो-भावेन दोषोन्मुक्त हो। अतः नादिरशाहके चरित्रमें भी कुछ दोष और अवगुण अवश्य थे। जबतक उन दोषों और अवगुणोंका यहांपर उल्लेख नहीं किया जायेगा, तबतक, हमारी समझमें, उसकी जीवनी अधूरीही रह जायेगी। अस्तु।

नादिरशाहमें अनेकानेक अनुपम सद्गुणोंके रहते हुए भी, उसमें कई अवगुण थे; परन्तु हमारे विचारसे तो उसमें एकही

बड़ा भारी और प्रधान अवगुण था। अन्यान्य अवगुण उसी एकके सहायक मात्र थे—वह प्रधान अवगुण था, नादिरशाहका क्रोध। वह जब कोई काम अपने मनके विरुद्ध होता देखता, अथवा किसीके अपराधकी बात सुनता, तब मारे क्रोधके अन्धा हो जाता था। भले-बुरे और यश-अपयशका विचार उसके हृदयसे जाता रहता था। परिणामकी तनिक भी परवाह न कर वह अपनी भीषणातिभीषण दण्डाज्ञा प्रदान कर देता था। उसकी आज्ञासे चारों ओर तहलका मच जाता था। सारी प्रजा 'त्राहि! त्राहि!' करने लग जाती थी। यदि नादिरशाहमें यह अवगुण नहीं होता, तो आज 'नादिरशाही फ़रमान' जैसे मुहावरेकी सृष्टि नहीं होती। यदि दयावान् होते हुए भी नादिरशाह 'महान् निर्दयके' नामसे इस संसारमें प्रसिद्ध है, तो वह केवल अपने भयंकर क्रोधकेही कारण। यदि नादिरशाहके भीतर यह अवगुण नहीं होता, तो आज उसकी गिनती शाह सुलेमान और राजा विक्रमादित्यकी श्रेणीमें होती। इसीलिये हमारे शास्त्रकारोंने कहा है, कि 'क्रोध मनुष्यका हन्ता है।' एक मात्र इसी दुर्गुणके कारण नादिरशाह अपनी सारी सुख्यातियोंसे हाथ धो, आज संसारमें अपख्यातिका पुञ्ज बना हुआ है।

अपने चाचाकी हत्या, पुत्रकी आखें निकलवा लेना तथा दिल्लीके क़त्लेआमकी बातें सुनकर, लोग, यह कह सकते हैं और कहते भी हैं, कि वह बड़ा भारी निर्दय और क्रूर-हृदय था। हम इस कथनका खण्डन नहीं करते। अपने चाचाकी हत्या करनेमें उसने केवल अपनी निर्दयता और अमानुषिकताकाही

परिचय नहीं दिया है, वरन् घोर विश्वासघात भी किया है। परन्तु यदि दूसरी दृष्टिसे देखा जाये, तो यही मालूम होगा, कि अपने चाचाकी हत्याकर नादिरशाहने, उसे, इतने दिनोंतक अपनी पैतृक सम्पत्तिपर अनुचित अधिकार जमा रखनेके अपराधका दण्ड दिया था। नादिरशाहके माँगनेपर भी वह उसे अपने पास फटकने नहीं देता था। नादिरशाहकी महत्वाकांक्षा बहुतही बढ़ी-बढ़ी थी। वह बादशाह बनना चाहता था और उसका चाचा उसके मार्गमें भारी बाधक था। इसलिये रास्तेके इस रोड़ेको हटाकर दूर फेंक देनाही नादिरशाहने उचित समझा और उसने अपने चाचाकी हत्या कर डाली। पर यहाँपर यह प्रश्न किया जा सकता है, कि नादिरशाहकी महत्वाकांक्षा क्या केवल हत्याके द्वाराही पूरी हो सकती थी? बात भी ठीक है। क्या अपने चाचाको क़ैदकर वह अपना काम पूरा नहीं कर सकता था? किसीको अपने घरमें निमंत्रितकर उसकी हत्या करना, विश्वासघात, अमानुषिकता तथा गर्हित कर्म्म नहीं तो और क्या कहा जा सकता है?

उसने अपने पुत्रकी हत्या भी इसी प्रकार क्रोधमें आकर कर डाली। सच है, जब मनुष्यके भीतर क्रोधाग्नि प्रज्वलित होती है, तब बेचारी बुद्धि, ज्वालासे विकल होकर, बाहर चली जाती है। क्रोधान्ध नादिरशाहने अपने पुत्रके भले-बुरेका, तनिक भी विचार नहीं किया और गुस्सेके प्रबल आवेशमें आकर, उसने उसकी आँखें निकलवा डालीं। इसके परिणाम-स्वरूप उसे जीवनभर पश्चात्ताप करना पड़ा। इतनाही क्यों? हम

तो यहाँतक समझते हैं, कि जिस दिन उसने अपने पुत्रकी आँखें निकलवा डालीं, उसी दिनसे पापका भूत उसके सरपर सवार हो गया! वह पागल और उन्मत्त हो गया तथा शेक्सपियरके 'मैकबेथ'की तरह प्रलाप-विलाप करता हुआ, अन्तमें इस लोकसे बहुत बुरी तरह विदा हुआ!

देहलीके क़त्लेआमका काम भी किसी प्रकारसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। माना, कि दिल्लीवालोंने झूठी अफ़वाहें उड़ाकर नादिरशाहके कई सिपाहियोंको मार डाला और इसीके प्रतिशोध-स्वरूप नादिरने क़त्लेआमका हुक्म जारी कर दिया। किन्तु यहाँपर यह विचारना है, कि क्या उस अफ़वाहमें दिल्लीकी सारी जनता मौजूद थी? यदि नहीं, तो सिर्फ कई मनुष्योंके अपराधके लिये सारे शहरको उजाड़ डालना तथा वहाँके आबाल-वृद्ध वनिता,—सभी लोगोंका संहार करना क्या उचित था? यदि यह कहा जाये, कि अपराधी और निरपराधका विचार करनेके लिये उसके पास समय कहाँ था, तो हम यह कहेंगे और आशा है, इसे सभी स्वीकार करेंगे, कि जल्दबाजीमें, बिना किसी प्रकारका विचार किये, उसने ऐसा काम क्यों कर डाला, जिसके लिये, केवल संसारही अनन्त कालतक उसकी निन्दा नहीं करेगा,—वरन् परमात्माके सामने भी वह सख़्त गुनहगार साबित होगा?

"Lives of great men, all remind us,
We can make our life sublime,
And departing leave behind us,
Foot-prints on the sands of time."

"महापुरुषोंकी जीवनियोंको आदर्श मानकर हमलोग भी अपने जीवनको उच्च बना सकते हैं और इस प्रकार इस असार संसारसे विदा होते समय अपना-अपना स्मृति-चिह्न काल अनन्तके पटपर अङ्कित कर जा सकते हैं।"

पाठक प्रवर! नादिरशाहकी जीवनी, पिछले परिच्छेदोंमें समाप्त हो चुकी। आपने देख लिया, कि किस प्रकार एक साधारण और सामान्य व्यक्ति भी अपने निरन्तर उद्योग, अतुल साहस, असीम उत्साह, प्रबल परिश्रम तथा अविराम कार्य्य द्वारा उस स्थान और अवस्थाको प्राप्त होगया, जिसके लिये बड़े-बड़े बादशाह भी लोलुप और लालायित रहते हैं। यदि किसीको इस संसारमें महान् बननेकी अभिलाषा हो, तो वैसा होनेके लिये, उसे नादिरशाहसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। इस संसारमें किसी प्रकारकी सफलता प्राप्त करनेके लिये निरन्तर उद्योग और साहस,—येही दो परम प्रधान साधन हैं। जिस पुरुषमें ये दोनों

साधन सदा-सर्वदा वर्त्तमान रहेंगे, कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि सफलता सदा उसकी दासी बनी रहेगी। इसी सम्बन्धमें गोस्वामीजीने अपनी सतसईमें कहा है:—

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
मैं बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ॥"

निरुद्यम और निरुत्साह पुरुष इस संसारमें कोई भी कार्य्य नहीं कर सकते। यह संसार एक महान् समर-क्षेत्र है। इसमें अपनी अपनी स्थिति और स्मृतिकी रक्षाके लिये निरन्तर युद्ध होते रहते हैं। जो दुर्बल हैं,जो निरुद्यम हैं,जो आलसी और निरुत्साह हैं, ईश्वर और भाग्यके भरोसे जो हाथ पर-हाथ रख बैठे हुए हैं, वे सदा दरिद्री नहीं बने रहेंगे,—इस संसारमें उन्हें सदा ठोकरें ही नहीं मिलती रहेंगी—वरन् उनका अस्तित्व भी उनके मरनेके साथ-ही-साथ दुनियासे सदाके लिये लुप्त हो जायेगा। परन्तु जो परिश्रमी और उत्साही हैं, जिनमें बल और उद्योग है, भाग्यके बदले जो अपने उद्योग या प्रयत्नकोही प्रधान मानते हैं, लाख विपत्तियोंके सिरपर आनेपर भी जो तनिक भी घबराते नहीं,—वरन् साहस और धैर्यके साथ इस समर-क्षेत्रमें सभी वारों और प्रहारोंका सामना करते हुए और उनसे बचते हुए आगे बढ़ते जाते हैं, वेही माईके लाल विजय और सफलता प्राप्त करते हैं तथा विश्व-विजयीकी उपाधिसे विभूषित हो, इस संसारमें अपने नामको अजर और अमर बना जाते हैं। हमारे चरितनायक नादिरशाह भी ऐसेही पुरुष-पुङ्गवोंमें एक थे।

एक बात और है। मनुष्य अनेकानेक दुर्बलताओंका आकर

है। उसके स्वभाव और चरित्रमें बहुतेरी कमज़ोरियाँ रहा करती हैं। मनुष्य स्वभावतः अपनेको उन कमज़ोरियोंसे बचाना भी चाहता है। उसका जीवन-धर्म भी यही कहता है, कि वह अपनी इन दुर्बलताओंका दमन करे। परमात्माने इसीलिये मनुष्यको बुद्धि प्रदान की है और इसी बुद्धिकी बदौलत मनुष्य पशुओंसे श्रेष्ठ समझा जाता है; परन्तु इस बुद्धिका विकाश और परिमार्जन तभी होता है, जब मनुष्य सोच-समझकर काम करता है। बिना सोचे-विचारे काम करनेवाले मनुष्य सदा ठोकरें खाया करते हैं। वे चोट भी सहते हैं और संसारमें अपना उपहास भी कराते हैं। इन उपहासों और ठोकरोंसे अपनेको बचानेके लिये मनुष्यको अनुभवकी आवश्यकता होती है। ये अनुभव दो प्रकारके होते हैं। एकको व्यावहारिक अनुभव कहते हैं और दूसरेको काल्पनिक है। व्यावहारिक अनुभव तो संसारके व्यवहार-व्यवसाय तथा मिलन-समागमसे प्राप्त होता है और काल्पनिक अनुभव पुस्तकोंके पठन-पाठन और मननसे। हाँ, पुस्तकोंके निर्व्वाचनमें मनुष्यको बड़ाही सावधान होना चाहिये। अच्छी पुस्तकोंके अध्ययनसे जिस प्रकार मनुष्य अपने जीवनको सार्थक और सफल बना सकता है, उसी प्रकार गन्दे और ओछे भावोंसे भरी पुस्तकोंका पठन-पाठन उसकी ज़िन्दगीको बिगाड़ और बेकार बना देता है।

प्रस्तुत पुस्तक कितनोंके जीवनको सुधारेगी, इसका तो हमें कोई अन्दाज़ नहीं; पर इतना हम ज़रूर कह सकते हैं, कि यह किसीके जीवनको भ्रष्ट कदापि नहीं कर सकती। तो भी यहाँपर

एक बार यह स्मरण दिला देना हम अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं, कि नादिरशाहका जीवन यदि एक ओर—जैसा कि पहले कहा जा चुका है—बल, साहस और उत्साहका ज्वाज्वल्यमान उदाहरण है, तो दूसरी ओर उसके जीवनमें कई कलङ्क-कालिमा-पूर्ण घटनाएँ भी पायी जाती हैं। नादिरशाह बड़ा भारी क्रोधी था। अपने स्वार्थ-साधनके लिये वह पूरा निर्दय बन बैठता था। 'Nothing is unfair in love and war'—अर्थात् प्रेम और युद्धमें किसी प्रकारका कार्य्य भी अनुचित नहीं, इस पाश्चात्य कथनका वह एक ख़ासा नमूनासा था और इसी प्रकारके कतिपय अन्यान्य दोष भी उसके जीवन-चरित्रमें पाये जाते हैं। आशा है, पाठक नादिरशाहके इन दोषोंसे अपनेको बचानेका प्रयत्न करेंगे। किसी विचार-शील मनुष्यने कहा है,— 'A man becomes wise by the follies of his anceesstors.'—अर्थात् अपने पूर्वजोंकी कमज़ोरियों और ग़लतियोंको जानकर मनुष्य सावधान हो जाता है। इसलिये 'नीर-क्षीर-विवेकी हंस'की सुनीतिका अवलम्बनकर पाठक इस पुस्तकके पाठ तथा मननसे लाभ उठायेंगे।

घटना-चक्र
सचित्र जासूसी उपन्यास।

इस उपन्यासमें अङ्गरेज-जातिकी पारस्परिक शत्रुताका बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। "लार्ड पेमब्रोक" नामी एक सम्भ्रान्त अङ्गरेज किस प्रकार शत्रुओंसे छलाये जाकर अपनी अविवाहित लड़की को "क्लिओपेट्रा" सहित भारतवर्षमें भाग आये, किस प्रकार उनके छल-छद्मने भारतमें भी उनका पीछा न छोड़ा, किस प्रकार भारतकी सरकारी जासूस "दक्षाजी रघुनन्द" ने शत्रुओंके हाथसे बारम्बार उनकी रक्षा की, किस प्रकार शत्रुओंके जासूस लार्ड पेमब्रोककी दाई-नौकरानी बनकर घुस गये, किस प्रकार दुष्टोंके षड्यन्त्रसे लार्ड पेमब्रोकको भयानक खूनी मामलेमें गिरफ्तार हो हवालात

जाना पड़ा, किस प्रकार डाकूने शत्रुओंके इशारेसे उनपर आक्रमण किया, किस प्रकार उनकी लड़की "क्लिओपेट्रा" समुद्रमें फेंक दी गयी, किस प्रकार जासूस र॰पन्तने समुद्रमें कूदकर उनकी लड़का उद्धार किया, किस प्रकार बड़े बड़े जासूसोंकी मददसे "लार्ड पेमब्रोक" को अदालतसे रिहाई मिली. आदि सैकड़ों दिलचस्प घटनाओंका वर्णन है। दाम २॥),

जासूसके घर खून
सचित्र जासूसी उपन्यास।

इस उपन्यासमें विलायतके सुप्रसिद्ध जासूस मिस्टर राबट ब्लेककी ऐसी ऐसी जासूसियां दी गयी हैं, कि मारे ताज्जुबके दांतों उंगली काटनी पड़ती है। सुन्दर सुन्दर २ चित्र भी हैं। दाम सिर्फ १॥) है। रेशमी जिल्द २) रु०

पता—आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

❀ जासूसी कुत्ता

सचित्र

जासूसी उपन्यास

पाठक! हम दावेके साथ कहते हैं, कि आजतक आपने ऐसा उपन्यास न पढ़ा होगा। इसमें आडी नामक एक स्वामि-भक्त कुत्तेने कैसी करामातें दिखाई हैं और अपने गरीब स्वामीको "लार्ड" जैसे बड़े ओहदेपर पहुंचा दिया है, कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। साथ ही इस उपन्यासमें यह शिक्षा भी खूब मिल सकती है, कि मनुष्य नेकपनकी और परिश्रमके बलपर कहांतक उन्नति कर सकता है। हमारा एकान्त अनुरोध है, कि यदि आपको उपन्यासोंसे कुछ भी शौक न हो, तो भी आप इसे अवश्य पढ़ें, आपको पछताना न पड़ेगा, क्योंकि इसमें साम्य-परिवर्त्तनका ऐसा सुन्दर चित्र अङ्कित किया गया है, कि

सदाचार निकम्मे मनुष्य भी कुछ दिनोंमें अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसमें मौकेके सुन्दर सुन्दर ४ चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १॥), रेशमी जिल्द २) है।

ऐय्यारी और तिलिस्मका अनूठा उपन्यास।

ऐय्यारी और तिलिस्मी खेलोंसे भरा हुआ, आश्चर्य व्यापारों और रोम-हर्षण घटनाओंसे डूबा हुआ यह अनूठा उपन्यास पढ़ने ही योग्य है। इस उपन्यासमें ऐसी ऐसी ऐय्यारियां खेली गयी हैं, कि पढ़कर पाठक फड़क उठेंगे। इस उपन्यासके पढ़ते समय पाठकोंका खाना, पीना, सोना, बैठना सब भूल जायगा। इतनेपर भी १००० पेजके बड़े पोथेका दाम, सिर्फ ४) है।

पता—आर, एल, बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

दुर्गादास

वीर-रस-पूर्ण सचित्र ऐतिहासिक नाटक।

बङ्ग-साहित्यमें जिस नाटककी धूम मच गयी थी, बङ्ग-भाषामें जिस नाटकके अनेकों संस्करण हाथो हाथ बिक गये थे, कलकत्तेके बङ्गला थियेटरोंमें जिस नाटकके खेलते समय दर्शकोंको जगह मिलना कठिन हो जाता था, वही धुहधुहाता हुआ वीर-रस प्रधान ऐतिहासिक नाटक हि न्दीमें छपकर तय्यार है। बङ्गला में यह नाटक नाटकोंका 'मुकुट मणि' है। इसमें "औरङ्गजेब" महाराणा राजसिंह, भीमसिंह, राणा उदयसिंह शिवाजीके पुत्र महाराष्ट्राधिपति "शम्भाजी" और शाहजादे अकबर, दलेल तथा कामबख्श प्रभृतिके इतिहास-प्रसिद्ध भीषण युद्धोंका वर्णन बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें किया गया है। मुगल-रमणियों और राजपूत ललनाओंके चरित्रका खाका बड़ी ही बारीकीसे खींचा गया है। इसे पढ़ और खेलकर पाठक इतने खुश होंगे, कि फिर नित्य ऐसे ही नाटक खेलने और पढ़नेके लिये खोजते फिरेंगे। पहली बारकी छपी कुल कापियां बिक जानेपर हमने इसे दूसरी बार बड़ी सज-धजसे छापा है और हाफटोन फोटोकी छपे कितने ही सुन्दर सुन्दर रङ्गीन चित्र भी दिये हैं जिन्हें देखकर आप फड़क उठेंगे। दाम सिर्फ १॥), रेशमी जिल्द बंधीका २) रुपया।
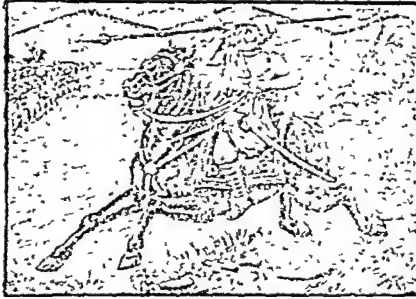
खूनी औरत

इसमें एक डाकरके मेसमेरिजम वा भौतिक-विद्याका वर्णन ऐसी विचित्रताथे किया गया है कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ १।) रु०

पता—आर, एल, वर्म्मन एण्डको०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता

डबल जासूस

-: सचित्र जासूसी उपन्यास :-

इसमें नरेन्द्र और सुरेन्द्र नामक एक ही सूरत-शकलके दो नामी जासूसोंकी बड़ी ही आश्चर्यजनक कारवाइयोंका वर्णन किया गया है, जिसके पढ़नेसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह उपन्यास रहस्यका खजाना, कौतुकका आगार और जासूसी करामातोंका भण्डार है। दोनों जासूसोंने जिस चतुराईसे चोरों, दगाबाजों और खूनियोंको गिरफ्तार कर "सुशीला" और "मनोरमा" नामकी दो एकान्त रमणियोंको बचाया है, कि उंगली 'वाह वाह' करना पड़ती है। कलकत्तिया चोरोंके अड्डेकी घटना का अद्भुत रहस्य, नाव पर जासूस और चोरोंका भयानक संग्राम, दार्जिलिंगमें भीषण सम्बंध-वाली, एक वीरान खंडहरमें डाकुओंके दलकी विचित्र गिरफ्तारी, सुंदरवनमें बिना ही ढाकका अनूठे ढङ्गसे पकड़ा जाना, नदीके किनारे दो असली और दो नकली जासूसोंका द्वन्द युद्ध,— आदि बातें पढ़कर आप दङ्ग न रह जायं तो बात ही क्या है? इसमें 'सुशीला' सी सुन्दरीका एक तिनरङ्गा चित्र देखने ही योग्य है। इसके अलावा और भी सुन्दर सुन्दर ३ चित्र दिये गये हैं। दाम १॥) जिल्द बंधीका २) रु०

मायामहल

इसमें स्त्री-पुरुषोंकी अपूर्व ऐय्यारियों, आश्चर्यजनक तिलिस्मातों, भयानक लड़ाइयों और पवित्र प्रेमका बड़ाही सुन्दर चित्र खींचा गया है, दाम १)

पता—आर, एल, बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

अमीरअली ठग — सचित्र जासूसी उपन्यास

पाठक महोदयो! आपने शायद पुराने जमानेके भयानक ठगोंका हाल सुना होगा। 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' की राज्यसत्तामें इन ठगोंका बड़ा ही दौर-दौरा था। ठगोंकी लोम-हर्षक उस समय सरकार और प्रजा दोनों ही तङ्ग आ गयी थी। ठगोंके बड़े बड़े दल राजसी ठाठ-बाट से दौरा करते फिरते थे और उनके मोहक मुसाफिरोंको बरगला (फुसला) कर अपने गरोहमें ले आते थे। फिर ठग लोग विचित्र ढङ्गसे उनके गलेमें फांसी देकर सारा धन लूट लेते थे।

यह उपन्यास बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है और हाफटोन फोटोकी बड़ी बड़ी कई तस्वीरें छापकर खूबही सजा दिया गया है। दाम सिर्फ ॥=)

यह एक बड़ाही रहस्यपूर्ण सचित्र डिटेक्टिव उपन्यास है, लन्दनके मशहूर जासूस मि० राबर्ट ब्लेकने फ्रान्सके प्रसिद्ध विद्रोही और डाकू "हनरी डैकृ" को कितनी ही बार बड़ी बहादुरीके साथ गिरफ्तार किया था, पर फिर भी डैकृ बराबर उनकी आंखोंमें धूल झोंक भागता रहा। इस डाकूने सारे यूरोपमें हलचल मचा रखी थी। यहांतक कि स्वयम् मिष्टर ब्लेकको भी कई बार इससे लांछित होना पड़ा। अन्त में ब्लेकने किस तरह इसे पकड़ कर सजा दिलवाई, यह पढ़कर आप दङ्ग होजायेंगे—दाम १॥) सजिल्द २)

नकली रानी— इसमें एक डाकू-स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, चालाकी और दिलेरी आदिका वर्णन बड़ी ही बारीकी से किया गया है। सुन्दर-सुन्दर कई चित्र भी है, दाम सिर्फ १) रु०

पता-आर, एल, वर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

भीषण डकैती

यह उपन्यास बङ्ग-साहित्यके गौरवस्तम्भ, जासूसी उपन्यासोंके एक मात्र कर्णधार श्रीयुत 'बाबू पांचकौड़ी दे'की विचित्र लेखनीका सजीव प्रतिबिम्ब है। इसमें "मिष्टर रौटल यङ" नामक एक अमेरिकन जासूसकी अपूर्व्व कार्य्यावलियों-का ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि पुस्तक एकबार उठाकर फिर छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। इस उपन्यासके प्रत्येक परिच्छेद, प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक पैराग्राफ, प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्दमें दिलचस्पी और मनोरंजकता कूट कूटकर भरी गयी है। साथ ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। इसमें इस उपन्यासकी प्रधान नायिका 'मिसेज तोबायसी' का एक ऐसा अपूर्व्व तिनरङ्गा चित्र दिया गया है, कि देखतेही मन हाथसे निकल जाता है। दाम सिर्फ १॥) सजिल्द २) रु०

डाक्टर साहब

सचित्र जासूसी उपन्यास

इसमें लण्डनकी विख्यातनामा भक्त-चिकित्सक, अद्भुत क्षमताशाली 'डाक्टर क्यू' की उस भीषण रसायन-विद्याका चमत्कार है, जिसके द्वारा वह बातकी बातमें जिन्देको 'मुर्दा' और मुर्देको 'जिन्दा' बनाकर अपना इच्छित मतलब गांठ लेता था। इस डाक्टरके गुप्त अत्याचारोंसे सारा इङ्गलेण्ड दहल उठा था और इसे लोग "जादू-विद्या" "भूत-विद्या" आदि समझने लगे थे। अन्तमें वहांके विलक्षण शक्तिशाली सुप्रसिद्ध जासूस 'मिस्टर ब्रुक' ने किस प्रकार उसका रहस्य-भेदकर उक्त 'डाक्टर क्यू' को गिरफ्तार किया है, वह पढ़नेही योग्य है। सुन्दर सुन्दर दो चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ १॥)

जासूसी चक्कर

सचित्र जासूसी उपन्यास

लेखकने इस उपन्यासमें बम्बईकी पारसी-समाजका बड़ा ही विचित्र रहस्य खोला है। कुछ दिन हुए बम्बईके 'हरमसजी' नामक एक धनाढ्य पारसी सज्जनके खजानेमें विचित्र रूपसे एक लाखकी चोरी हो गयी साथ ही खुली सड़कपर भाड़ागाड़ीमें एक पारसी युवक जानसे मार डाला गया। इन दोनों घटनाओंको लेकर बम्बईमें बड़ी हलचल पड़ गयी। खून और चोरीके इलजाममें "रुस्तमजी" नामक एक पारसी गिरफ्तार हुआ। इन दोनों घटनाओंकी जांचके लिये सर्कारकी ओरसे बड़े बड़े ४ जासूस छोड़े गये। जांच धूमधामसे होने लगी, फिर कैसे चार दक्ष जासूसोंने सुन्दरी 'रतनबाई'की सहायतासे पता लगाया, कैसे निरपराध रुस्तमजीने अदालतसे छुटकारा पाया, कैसे नकली विवाहके समय, भीषण व्यक्ति सर्जारजी गिरफ्तार किया गया, आदि घटनायें इस खूबीसे लिखी गयी हैं, कि बिना समाप्त किये पुस्तक छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। खून, चोरी, जाल, जुआ-चोरी, सभी बातें दिखलाई गयी हैं। हाफटोनके ५ चित्र भी हैं। मूल्य २॥) सजिल्द ३)

सचित्र गो-पालन-शिक्षा

इसमें गो बछड़ोंकी पहचान, पालन, दवायें और दूध बढ़ाने तथा दूधसे बननेवाले पदार्थोंको बनानेके ऐसे सरल तरीके लिखे गये हैं, कि मनुष्य कुछ ही दिनोंमें मालामाल हो जा सकता है। गाय आदि पालनेवालोंको इसे अवश्य खरीदना चाहिये, २ चित्र भी दिये हैं। दाम केवल ॥) आना।

नराधम

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इसमें एक मित्रद्रोही डाक्टरकी स्वार्थ-परताका बड़ा ही सुन्दर खींचा गया है। डाक्टरका मित्रको जोरि धूम-धाम कर अन्तमें उसका खून करना, अपनी दूसरी प्रेमिकासे खूनकी बातचीत करते समय डाक्टरके मित्रका छिपकर सुनना और फिर उसे धमकाना, डाक्टर और उसकी प्रेमिकाका मित्रको धोखा देकर फांसीपर लटकाना, मित्रकी लाश का एकाएक गायब हो जाना, दो आदमियोंका भेद खोल देनेका भय दिखलाकर डाक्टरको धमकाना, डाक्टरका एकको भट्टीमें झोंककर मार डालना! दूसरा लाशका एकाएक जिन्दा हो जाना, आदि बड़ी आश्चर्यजनक बातें लिखी गयी हैं, दाम सिर्फ १) जिल्द बंधीका १॥)

शशिबाला

शिक्षाप्रद जासूसी उपन्यास

इसमें एक सच्चरित्रा स्त्रीने किस चतुरता, बुद्धिमत्ता और दूरदर्शितासे अपने कुपथगामी स्वामी और कितनेही मनुष्योंको सुपथगामी बनाया है, पढ़ते पढ़ते जी फड़क उठता है। कुमारस्वामीका तिलिस्मी मठ, अद्भुत चातुरी, वीरसेनकी विलक्षण वीरता, शशिबालाकी अद्वितीय पतिभक्ति आदिका हाल पढ़कर आप अवाक् रह जायंगे। यह शिक्षाप्रद उपन्यास पुरुष, बूढ़े बच्चे सभीके पढ़ने योग्य है। दाम सिर्फ ॥) आना।

जासूसी पिटारा--इसमें बड़े ही रहस्य जनक ५ जासूसी हैं—(१) गुप्तचारमण्डल, (२) फूल-बेगम, (३) विचित्र जौहरी, (४) अस्ली हजारकी चोरी, (५) स्त्री है या राक्षसी? दाम

सच्चा मित्र ❀ ज़िन्देकी लाश

यह उपन्यास बड़ाही रहस्यमय, अनूठा शिक्षाप्रद और हृदयग्राही है। एक सच्चे मित्रका अपूर्व स्वार्थ-त्याग, कुटिलोंकी कुटिलता, पातिव्रतकी महिमा और मुरदेका जी उठना आदि बड़ी अद्भुत घटनायें लिखी गयी हैं। दाम ॥=) आ

जीवनमुक्त-रहस्य

शिक्षाप्रद सचित्र सामाजिक नाटक।

ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, राजनीति, धर्म्मनीति और समाज-नीतिसे भरा [illegible] (आडम्बरों)की पोल खोलनेवाला, कुटिलों, बेईमानों और जालसाजोंका [illegible] फोड़नेवाला, पातिव्रत-धर्म्मकी रक्षा करनेवाला और स्वार्थ-त्यागका उज्ज्वल उपदे[श] देनेवाला यह नाटक इतना मनोहर, हृदयग्राही, शिक्षाप्रद और अनूठा है, कि [इ]सके [प]ढ़ लेनेसे मनुष्य सैकड़ों तरहकी सांसारिक बुराइयोंसे सावधान हो [सक]ते हैं। अवश्य पढ़िये। दाम बिना जिल्द ॥) ७० रूपाने जिल्द बंधीकी १) रुपया।

❀ वीर-चरितावली ❀

इसमें निम्नलिखित वीर-वीराङ्गनाओंकी १६ वीर-कहानियां दी गयी [हैं।] (१) रानी दुर्गावती, (२) रानी लक्ष्मीबाई, (३) अहल्या बाई, (४) [?] (५) वीर-बाला पन्ना, (६) वीर-बालक और वीर-नारी, (७) राजकुमार (८) पृथ्वीराज, (९) बादलचन्द, (१०) वायमल्ल, (११) सिक्ख वीर-रणजीत (१२) हम्मीर, (१३) महाराणा प्रतापसिंह, (१४) छत्रपति शिवाजी, (१५) [स]ंग्रामसिंह, (१६) राजर्षि उग्र दसिंह प्रभृति। सुन्दर सुन्दर ४ चित्र भी हैं,

टिकेन्द्रजितसिंह

पाठकों! उन्नीसवीं सदीके अन्तमें "टिकेन्द्रजितसिंह" जैसा वीर-श्री भारतवर्षमें दूसरा नहीं जन्मा। इस वीरने अपने बाहुबलसे सैकड़ों मारे और अनेक युद्धमें जय पाई। अन्तमें यह वीर अङ्गरेजोंसे युद्धमें हो, बड़ी वीरतासे हंसते हंसते फांसी पर चढ गया। दाम सिर्फ २) रु०

पता—आर, एल, बर्म्मन एण्ड कां०, ३७१ अपर चीतपुर रोड,

महाराजा रणजीतसिंहका **पंजाब-केशरी** सचित्र जीवन चरित्र।

इसमें सिक्ख-धर्मके नेता "गुरु नानक साहब" "गुरु गोविन्दसिंह" और महाराजा "रणजीतसिंह"का जीवनचरित्र बड़ी खूबीके साथ लिखा गया है। सुन्दर सुन्दर चित्र देकर पुस्तककी शोभा और भी बढ़ादी गयी है। दाम ३)

सचित्र यूरोपीय महायुद्धका इतिहास।

जिस महायुद्धने सारे संसारमें हलचल मचा दी थी, जिस महायुद्धने दुनियाके सारे कारबार चौपट कर दिये हैं, उसी महायुद्धका सचित्र इतिहास हमारे यहां दो भागोंमें छपकर तय्यार हो गया है। इसमें युद्ध सम्बन्धी बड़े बड़े ८० चित्र तथा यूरोपका नकशा दिया गया है। दाम दोनों भागका १॥=) है।

शिक्षाप्रद ६ कहानियोंका अपूर्व संग्रह।

इसमें वर्त्तमान कालकी सामाजिक घटनाओंपर ऐसी सुन्दर, शिक्षाप्रद, आश्चर्य और हृदयग्राही ६ कहानियाँ लिखी गयी हैं, कि जिन्हें पढ़कर मन मुग्ध हो जाता है और मनुष्य अपने घरोंसे उन बुराइयोंको दूरकर सच्चे संसार-सुखका अनुभव करने लगता है। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, सभीके पढ़ने योग्य है, दाम सिर्फ १।)

सचित्र लोकमान्य तिलक जीवनी

भारतके राष्ट्र सूत्रधार, देशके सर्वश्रेष्ठ नेता, राजनीतिके आचार्य, मनुष्य के अवतार, ब्राह्मणोंके आदर्श, लोकमान्य, सर्व-पूज्य और परम आत्मत्यागी स्वदेशभक्त पं० बाल गंगाधर तिलककी यह सचित्र जीवनी प्रत्येक देशभक्त के पढ़ने योग्य है। इसमें उनके जीवनकी समस्त मुख्य-मुख्य घटनाओंका बयान है और आरम्भमें उनका एक दर्शनीय तिरंगा चित्र दिया गया है। उनकी सहधर्मिणीका भी चित्र दिया गया है। पहली बारकी छपी २००० कापियां हाथोंहाथ बिक जानेपर दूसरी बार फिर छापी गयी है। इस बार बहुत बातें बढ़ा दी गई हैं। मूल्य १) रेशमी जिल्द बंधीका १॥) रुपया

साहसी-सुन्दरी वा समुद्री डाकू

रहस्यमय सचित्र जासूसी उपन्यास।

जासूस-सम्राट मिस्टर ब्लेकके जासूसी घटनाओंसे भरे उपन्यास सारे संसारमें प्रसिद्ध हैं और लोग उन उपन्यासोंको ऐन्द्रजालिक उपन्यास बताते हैं। वास्तवमें यह बात ठीक है, क्योंकि जो व्यक्ति एकबार इनका कोई उपन्यास पढ़नेके लिये उठा लेता है, वह पढ़ता-पढ़ता तन्मयहो जाता है और बिना पूरा पढ़े छोड़ही नहीं सकता। यह उपन्यास भी मि० ब्लेकको आश्चर्यजनक जासूसियोंसे भरा है। इसमें साहसी सुन्दरी अमेलियाके ऐसे-ऐसे भयानक समुद्री डाकों और अद्भुत कार्य्य-कलापोंका हाल है, कि जिसके कारण केवल वृटिश-सरकार ही नहीं, बल्कि फ्रान्स, जर्म्मनी और अमेरिकाकी सरकारें भी तंग आगयी थीं। उसी साहसी-सुन्दरीके भीषण डाकू-जहाजको समुद्रों-समुद्रों घूम और बारम्बार नयी-नयी विपत्तियोंमें पड़कर जासूस सम्राट मि० ब्लेकने किस सफाईसे गिरफ्तार किया है, कि पढ़कर दांतों उंगली काटनी पड़ती है। चोरी, बदमाशी, डकैती, जालसाजी, खून-खराबी आदि अनेक रोएँ खड़ेकर देनेवाली घटनाएँ इसमें आदिसे अन्ततक भरी हैं। छपाई रंग-बिरंगे सुन्दर-सुन्दर ६ चित्र भी दिये गये हैं। दाम १॥।), सजिल्द २।)

❀ लाल-चिट्ठी ❀

सचित्र ऐतिहासिक जासूसी उपन्यास।

आश्चर्यजनक व्यापारोंसे भरा और लोमहर्षण भीषण काण्डोंमें डूबा हुआ यह उपन्यास इतना दिलचस्प, हृदयग्राही और अनूठा है, कि पढ़ते-पढ़ते कभी आश्चर्य्यान्वित, कभी रोमाञ्चित और कभी पुलकित हो जाना पड़ता है। इसमें सम्राट-अकबरके शासन-कालका एक ऐसा भीषण षड्यन्त्र लिखा गया है, जिसके कारण स्वयं सम्राट् अकबर, राजा बीरबल और राज्यके प्रायः सभी बड़े-बड़े कर्म्मचारी घबरा उठे थे। "लाल-चिट्ठी"का ऐसा हैरत-अङ्गेज रहस्य खोला गया है, कि आप भी पढ़कर चकित, स्तम्भित और विमोहित होजाइयेगा। सुन्दर-सुन्दर ४ रङ्गीन चित्र भी दिये गये हैं। दाम बिना जिल्द १॥।), रेशमी जिल्द बंधी २।) है।

पता—आर, एल, वर्म्मन, एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

१२ रङ्ग-बिरङ्गे चित्रों सहित छपकर तैयार है।

इसमें भारतवर्षके भूतकालकी दो सतियोंके पवित्र चरित्र बड़ीही सुन्दरताके साथ लिखे गये हैं। इनमें पहली सती "मनसा देवी" हैं, जो देवादिदेव महादेवकी मानसिक पुत्री, महर्षि-जरत्कारुकी धर्म्म-पत्नी और नाग-लोककी शासन-कर्त्री हैं। इनकी कठिन तपस्या, प्रगाढ़ पति-भक्ति और अद्भुत-आत्म-त्याग देखकर अवाक् रह जाना पड़ता है। दूसरी सती—इस उपाख्यानकी प्रधान नायिका "सती बेहुला" हैं, जिनका जीवन-वृत्तान्त बड़ाही अनूठा, आश्चर्य्य-जनक, कौतूहल-वर्धक, करुणा-पूर्ण और चित्ताकर्षक है।

सती-शिरोमणि "सावित्री"की भाँति बेहुलाने भी अपने मरे हुए पतिको जिला लिया था। परन्तु "सावित्री" और "बेहुला" की कार्य्य-प्रणालीमें बहुत अन्तर है। "सावित्री देवी" ने अपने कठोर पातिव्रत-धर्म्मके प्रतापसे एकही रातमें स्वयं यमराजको परास्तकर अपने पतिका प्राण-दान पाया था और "बेहुला" अपने मृत-पतिका शरीर कदली-खम्भके बेड़ेपर रख, नदीमें बहती-बहती छ महीने बाद स-शरीर स्वर्गमें पहुँची थी और वहाँ उसने तेंतीस कोटि देवताओंको अपने अद्भुत नाच-गानसे प्रसन्नकर पतिकी प्राण-भिक्षा पायी थी! नदीमें बहते-बहते उसके पतिकी लाश सड़ गयी थी, उसमें कीड़े पड़ गये थे और अन्तमें मांस गल-गलकर गिर गया था! परन्तु इतनेपर भी "बेहुला"ने उसे न छोड़ा! उसने पतिकी हड्डियाँ धो धोकर आँचलमें बांधलीं और अन्तमें देव-लोकसे पतिको जिलाकर ही लौटी! यही नहीं, बल्कि वह अपने पहलेके मरे हुए छ जेठोंको भी जिला लायी और इस प्रकार उसने अपनी छहों विधवा जिठानियोंको पुनः सधवा बना दिया! जिस स्त्रीने ऐसी महान सतीके अविमल चरित्रसे कुछभी शिक्षा न ग्रहण की, उसका जीवनही व्यर्थ है। रंग-बिरंगे १२ चित्र भी हैं, दाम २।), रंगीन जिल्द २॥) रेशमी जिल्द २॥।)

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३६१ अपर चीतपुर राड, कलकत्ता।